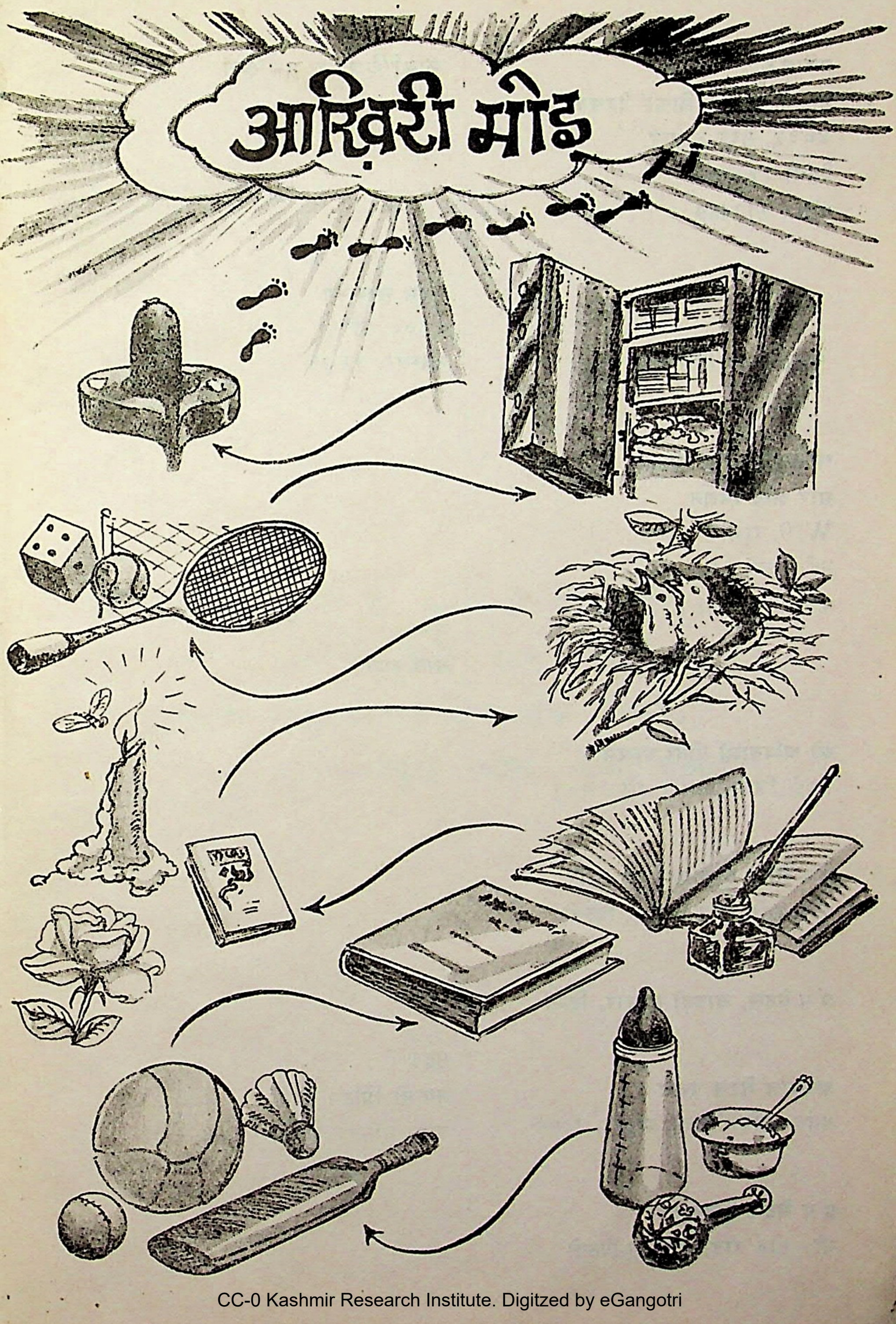
Santosh Aggarwal

Office 526109 Resi 772614

Santosh Aggarwal

PREM METAL SYNDICATE
PREM SADAN
BASTI HARPHOOL SINGH,
SADAR THANA ROAD
DELHI-110006.

PREM METAL SYNDICATE
PREM SADAN
BASTI HARPHOOL SINGH,
SADAR THANA ROAD
DELHI-110006.


आख़िरी मोड़

प्रकाशक :
डा० प्रेमलाल 'शिफ़ा' देहलवी
४८३५, सदर बाज़ार
देहली-११०००६
फोन : 513489

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

श्री अद्वैत स्वरूप आश्रम
सार शब्द मिशन
W/9, राजौरी गार्डन
नई दिल्ली-११००२७
फोन : 586708

श्री अविनाशी गीता आश्रम
उरई, ज़िला जालौन (उ० प्र०)

प्रेम मेटल एण्ड हार्डवेयर स्टोर
बारा टूटी, सदर बाज़ार, दिल्ली

प्रेम मेटल, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली

अग्रवाल मेटल स्टोर
बर्तन मार्किट, सदर बाज़ार, दिल्ली

प्रेम मेटल इण्डस्ट्रीज
जी० टी० रोड, शाहदरा-दिल्ली

प्रथम संस्करण
११०० प्रतियां
नवम्बर, १९७९

मूल्य :
सात रुपये

मुद्रक :
जयन्ती प्रिंटिंग वर्क्स,
जामा मस्जिद, दिल्ली-११०००६

आ गए शौक़ के आख़िरी मोड़ पर,
राह के पेचो ख़म देखते-देखते ।
अब तो मंज़िल पै इक दिन पहुँच जायेंगे,
उनके नक्शे क़दम देखते-देखते ।।

प्रकाशक :
डा० प्रेमलाल 'शिफ़ा' देहलवी
४८३५, सदर बाज़ार
देहली-११०००६
फोन : 513489

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

श्री अद्वैत स्वरूप आश्रम
सार शब्द मिशन
W/9, राजौरी गार्डन
नई दिल्ली-११००२७
फोन : 586708

श्री अविनाशी गीता आश्रम
उरई, ज़िला जालौन (उ० प्र०)

प्रेम मेटल एण्ड हार्डवेयर स्टोर
बारा टूटी, सदर बाज़ार, दिल्ली

प्रेम मेटल, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली

अग्रवाल मेटल स्टोर
बर्तन मार्किट, सदर बाज़ार, दिल्ली

प्रेम मेटल इण्डस्ट्रीज
जी० टी० रोड, शाहदरा-दिल्ली

प्रथम संस्करण
११०० प्रतियां
नवम्बर, १९७६

मूल्य :
सात रुपये

मुद्रक :
जयन्ती प्रिंटिंग वर्क्स,
जामा मस्जिद, दिल्ली-११०००६

आ गए शौक़ के आख़िरी मोड़ पर,
राह के पेचो ख़म देखते-देखते।
अब तो मंज़िल पै इक दिन पहुँच जायेंगे,
उनके नक्शे क़दम देखते-देखते॥

पुस्तक यह लिखी मैंने,
गुरुदेव की कृपा है ।
जो कुछ भी लिखा इसमें,
गुरुदेव की शिक्षा है ॥
हर भाग में पुस्तक के,
गुरुदेव का दर्शन है ।
गुरुदेव की यह पूंजी,
गुरूदेव के अर्पण है ॥

अनुक्रमणिका

गुरुस्तोत्रम

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत् पदं दर्शितम् येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

जो समाया चल-अचल संसार में, और चलाना उनको जिसका काम है ।
जिसने दर्शाया हमें भगवान् वो, ऐसे सतगुरुदेव को प्रणाम है ।।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुनमीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।२।।

आंख जो अंधी हुई अज्ञान से, जिसमें जैसी सुवह वैसी शाम है ।
खोल दे लेकर सलाई ज्ञान की, ऐसे सतगुरुदेव को प्रणाम है ।।

स्थावरं जङ्गमं व्यापतं येन कृत्स्नंचराचरम ।
तत् पदं दर्शितम् येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।।३।।

चल-अचल जड़ और चेतन का जगत् जिसकी शक्ति ले के पूर्ण काम है ।
जिसने दर्शाया हमें भगवान् वो, ऐसे सतगुरुदेव को प्रणाम है ।।

सर्व श्रुति शिरोरत्न समुद्भासित मूर्तये ।
वेदान्ताम्बुज सूर्याय तस्मै श्री गुरवे नमः ।।४।।

जिसमें है वेदांत हीरे की चमक, वोह जो सूरज की तरह निष्काम है ।
जिससे खिलता है कमल वेदांत का, ऐसे सतगुरुदेव को प्रणाम है ।।

चैतन्यः शाश्वतः शान्तो व्योमातीतो निरंजनः ।
बिन्दुनाद कलातीतस्तस्मै श्री गुरवे नमः ।।५।।

एक चेतन जिससे सारे चल-अचल, हैं सुशोभित और हर इक धाम है ।
जिसने दर्शाया हमें भगवान् वो, ऐसे सत्गुरुदेव को प्रणाम है ।।

ज्ञान शक्ति समारुढस्तत्त्व माला विभूषितः ।
भुक्ति मुक्ति प्रदाता च तस्मै श्री गुरवे नमः।।६।।

जिसने पहना इल्म के फूलों का हार, ज्ञान की शक्ति से पूर्ण काम है ।
और दे सकता है मुक्ति मालो-ज़र, ऐसे सत्गुरुदेव को प्रणाम है ।।

शोषणं भवसिन्धोश्च प्रापणं सार सम्पदः ।
यस्य पादोदकं सम्यक तस्मै श्री गुरवे नमः ।।७।।

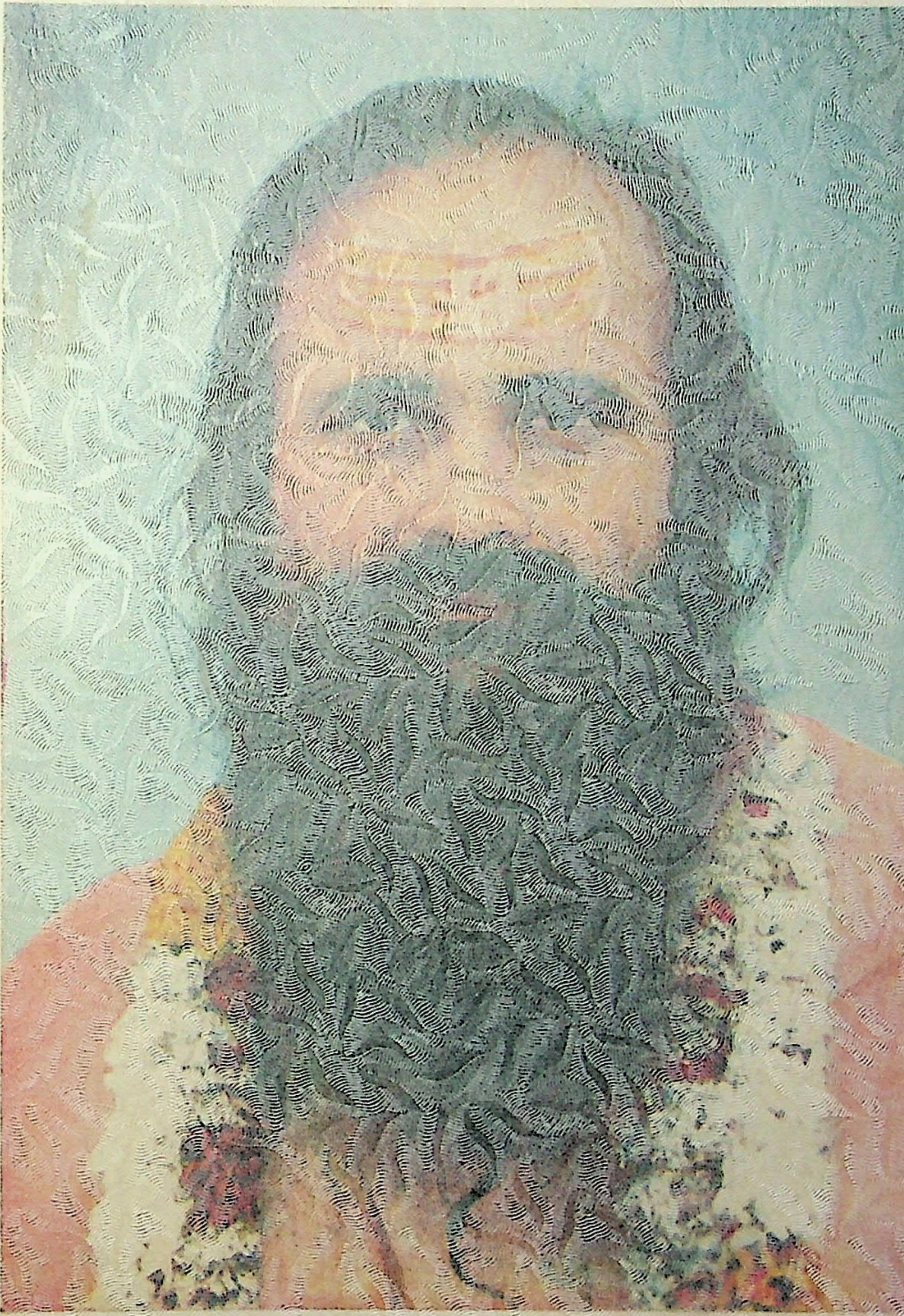
जो समुन्दर सोक ले संसार का, जिसकी कृपा का यही परिणाम है ।
अस्ल दौलत को है, पाता आदमी, ऐसे सत्गुरुदेव को प्रणाम है ।।

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः ।
तत्त्व ज्ञानात् परं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ।।८।।

सत् नहीं है कुछ गुरु को छोड़कर, उनकी सेवा सबसे ऊंचा काम है ।
कोई मुक्ति से नहीं ऊंचा मुक़ाम, मेरे सत्गुरु आपको प्रणाम है ।

मन्नाथः श्री जगन्नाथो मद्गुरु श्री जगद्गुरु ।
मदात्मा सर्व भूतात्मा तस्मै श्री गुरवे नमः ।।९।।

मेरे मालिक बादशाह संसार के, हैं गुरु संसार के मेरे गुरु ।
आत्मा मेरी है सबकी आत्मा, जै गुरु जै-जै गुरु जै-जै गुरु ।।



अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मश्रोत्रिय श्री सद्गुरुदेव भगवान

श्री १००८ श्री स्वामी अविनाशी जी महाराज

[illegible]

[illegible]

एक [illegible]

जिसने [illegible]

[illegible]

[illegible]

जिसने [illegible] काम है।

और [illegible] को प्रणाम है॥

शोषणं [illegible] सार सम्पदः।

गुरु पादोदकं सम्यक् तस्मै श्री गुरवे नमः ॥७॥

जो सद्गुरु सोख ले संसार को, जिसकी कृपा का [illegible]

असल जीवन को है पाता आदमी, ऐसे सद्गुरुदेव को प्रणाम है॥

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं [illegible]।

तत्त्व ज्ञानात् परं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ॥८॥

मत् नहीं है कुछ गुरु को छोड़कर, [illegible]

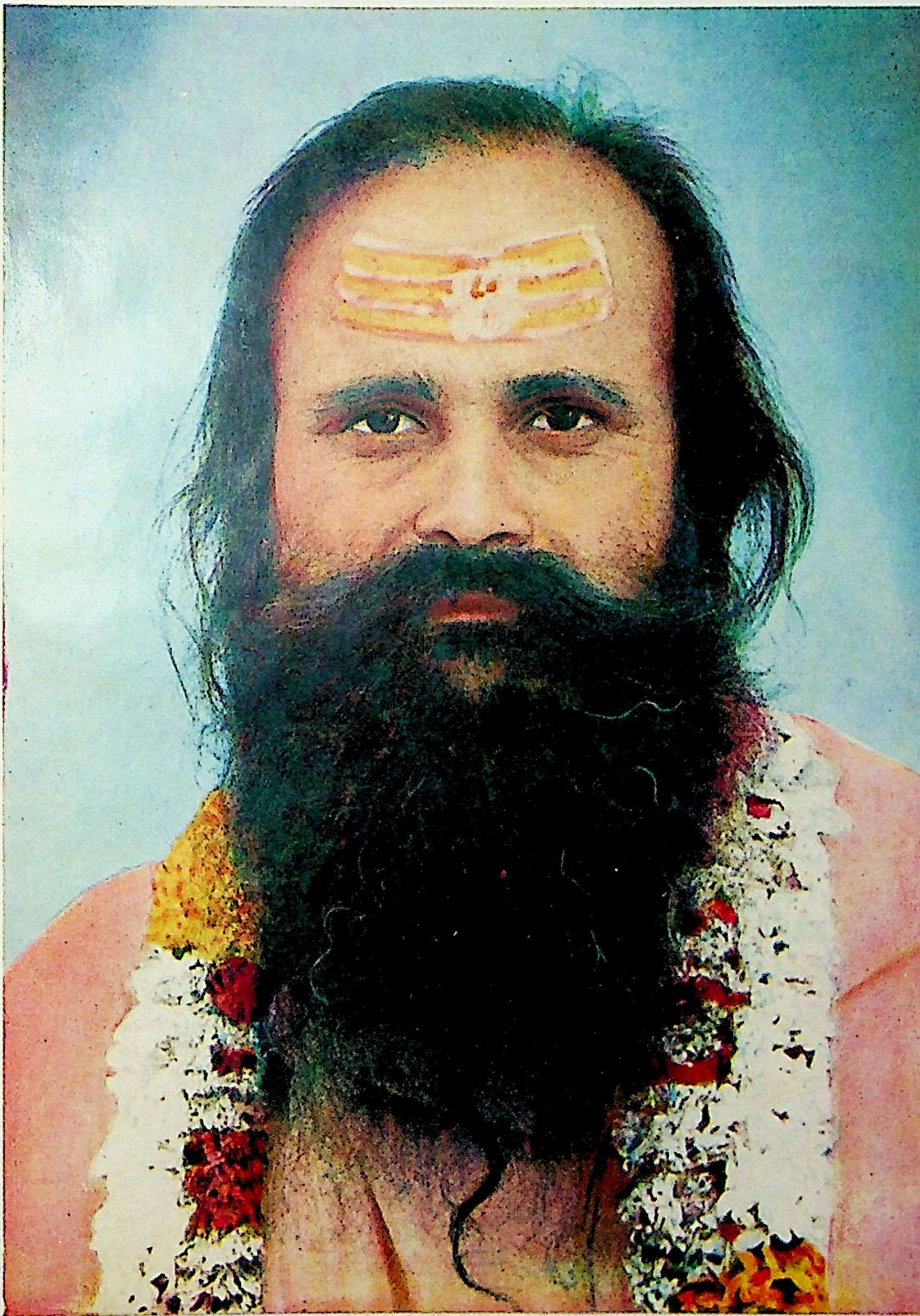
कोई भुक्ति से नहीं ऊंचा मुकाम, मेरे [illegible]

मन्नाथः श्री जगन्नाथो मद्गुरु: श्री जगद्गुरुः।

मदात्मा सर्व भूतात्मा तस्मै श्री गुरवे नमः ॥९॥

मेरे मालिक बादशाह संसार के, है गुरु [illegible]

आत्मा मेरी है सबकी आत्मा, है गुरु [illegible]



अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मश्रोत्रिय श्री सद्गुरुदेव भगवान

श्री १००८ श्री स्वामी अविनाशी जी महाराज

आख़िरी मोड़

अा गए शौक़ के आख़िरी मोड़ पर,
राह के पेचोख़म देखते-देखते ।
अब तो मंज़िल पे इक दिन पहुंच जायेंगे,
उनके नक़्शे-क़दम देखते-देखते ॥

इस शेर से मुराद (अभिप्राय) यह है कि जब इन्सान गुरुदेव के चरणों में पहुंच जाता है तो शौक़ के मोड़ ख़त्म हो जाते हैं । उसका रास्ता सीधा रह जाता है । मंज़िल सामने होती है और रहबर के नक़्शे क़दम पर चल कर इन्सान मंज़िल तक पहुंच सकता है । लेकिन इससे यह मुराद नहीं है कि आगे रास्ता इतना साफ़ है कि गोया सीमेंट की सड़क हो, ऐसा हरगिज़ नहीं है । आगे रास्ता बहुत ख़तरनाक भी है । रास्ते में अन्धे कूएं हैं, बड़े-बड़े गढ़े हैं । अगर पुराने शौक़ का ख्याल आ गया और पीछे की ओर देखते हुए आगे बढ़े तो ऐसे गढ़े में गिरेंगे कि निकल भी न पायेंगे । इसीलिए इस शेर में नक़्श-क़दम को देख-देखकर चलने की शर्त है । जो राह बनी हुई है उसी पर चलना है और देखते-देखते चलना है । वरना ज़रा पांव फिसला कि किसी गहरे खड्डु में पड़े । आसानी सिर्फ़ इतनी है कि मोड़ तोड़ नहीं हैं, एक पगडंडी बनी हुई है, जिस पर चलकर लोग मंज़िल पर पहुंच गए हैं ।

यह सन् १९५६ की बात है कि मेरे यहां मुशायरे और बज़्मे क़व्वाली अक्सर हुआ करती थीं जिनमें अपने दोस्तों और एहले ज़ौक़ लोगों को आमंत्रित करता था । इनमें आई. एस. आई. के दो अफ़सरान श्री जयनाथ कौल और श्री हरबंस लाल भी थे जो बिला नाग़ा मेरी दरख़ास्त पर तशरीफ़ लाते थे । मगर अब कुछ दिनों से आना बन्द कर दिया था । एक दफ़ा मैंने वजह दरयाफ़्त की तो कहने लगे कि अब हम बड़ी जगह जाते हैं यानि संतों-महात्माओं के पास जाते हैं । मैंने इस बात का कोई असर न लिया ।

सन् १९५८ में मेरी किताब 'नुस्ख़ा-ए-शिफ़ा' प्रकाशित हुई और मैंने **कम्पली-मेन्टरी** कापी इन दोनों दोस्तों को भेजी । कुछ काल बाद एक दिन कौल साहब का

आख़िरी मोड़

आ गए शौक़ के आख़िरी मोड़ पर,
राह के पेचोख़म देखते-देखते ।
अब तो मंज़िल पे इक दिन पहुंच जायेंगे,
उनके नक्शे-क़दम देखते-देखते ।।

इस शेर से मुराद (अभिप्राय) यह है कि जब इन्सान गुरुदेव के चरणों में पहुंच जाता है तो शौक़ के मोड़ ख़त्म हो जाते हैं । उसका रास्ता सीधा रह जाता है । मंज़िल सामने होती है और रहबर के नक़्शे क़दम पर चल कर इन्सान मंज़िल तक पहुंच सकता है । लेकिन इससे यह मुराद नहीं है कि आगे रास्ता इतना साफ़ है कि गोया सीमेंट की सड़क हो, ऐसा हरगिज़ नहीं है । आगे रास्ता बहुत ख़तरनाक भी है । रास्ते में अन्धे कूएं हैं, बड़े-बड़े गढ़े हैं । अगर पुराने शौक़ का ख़्याल आ गया और पीछे की ओर देखते हुए आगे बढ़े तो ऐसे गढ़े में गिरेंगे कि निकल भी न पायेंगे । इसीलिए इस शेर में नक़्श-क़दम को देख-देखकर चलने की शर्त है । जो राह बनी हुई है उसी पर चलना है और देखते-देखते चलना है । वरना ज़रा पांव फिसला कि किसी गहरे खड्ड में पड़े । आसानी सिर्फ़ इतनी है कि मोड़ तोड़ नहीं हैं, एक पगडंडी बनी हुई है, जिस पर चलकर लोग मंज़िल पर पहुंच गए हैं ।

यह सन् १९५६ की बात है कि मेरे यहां मुशायरे और बज़्मे क़व्वाली अक्सर हुआ करती थीं जिनमें अपने दोस्तों और एहले ज़ौक़ लोगों को आमंत्रित करता था । इनमें आई. एस. आई. के दो अफ़सरान श्री जयनाथ कौल और श्री हरबंस लाल भी थे जो बिला नाग़ा मेरी दरख़ास्त पर तशरीफ़ लाते थे । मगर अब कुछ दिनों से आना बन्द कर दिया था । एक दफ़ा मैंने वजह दरयाफ़त की तो कहने लगे कि अब हम बड़ी जगह जाते हैं यानि संतों-महात्माओं के पास जाते हैं । मैंने इस बात का कोई असर न लिया ।

सन् १९५८ में मेरी किताब 'नुस्ख़ा-ए-शिफ़ा' प्रकाशित हुई और मैंने **कम्पलीमेन्टरी** कापी इन दोनों दोस्तों को भेजी । कुछ काल बाद एक दिन कौल साहब का

टेलीफ़ोन आया कि डा. साहव मैं आपको आपके अशार सुनाना चाहता हूं। मैंने अर्ज़ किया कि तशरीफ़ ले आइये, मैं शौक़ से सुनूंगा। शनि का दिन था, कौल साहव की छुट्टी थी। एक वजे का वक्त था, मेरे चिकित्सालय का वक्त भी खत्म हो चुका था। हम दोनों इतमीनान से बैठ गए। कौल साहव ने 'नुस्खा-ए-शिफ़ा निकाला, जिस पर जगह-जगह निशान लगे हुए थे या अपनी राय लिखी हुई थी। वह सुनाते रहे और अपनी राय भी वताते गए कि यह वेदान्त की समस्या हैं, इसमें यह खूबी है, इसके यह अर्थ हैं। एक शेर पर आकर फ़रमाने लगे कि यहां मैं आपसे सहमत नहीं हूं। वह शेर यह था—

पहुंचा कि नहीं उस तक कोई,
इसकी तो कोई तहक़ीक़ नहीं।
हम सूए हरीमे दोस्त अगर,
हो जाएं रवाना काफ़ी है ॥

मैंने कहा कि किसी ने वहां पहुंच कर खवर तो भेजी नहीं कि मैं सकुशल पहुंच गया हूं और यहां के हालात इस तरह हैं। कौल साहव फ़रमाने लगे—"आप यह समझते हैं कि मर कर ही उन तक पहुंचा जाता है ?" मैंने कहा—"वेशक।" वे फ़रमाने लगे—"यही ग़लती है। उन तक इसी शरीर में पहुंच सकते हैं और ऐसे लोग मौजूद हैं जिनको देखकर यह अनुभव कर सकते हैं कि यह वहां पहुंच चुके हैं।" मैंने कहा—"किसी का नाम लीजिए।" वे फ़रमाने लगे—"एक तो आनन्दमयी मां हैं, वह तो अवतार ही हैं। दूसरे हरिवावा हैं।" मैंने कहा—"मां का तो नाम वहुत सुना है और हरिवावा के कई वार दर्शन किए हैं मगर अव फिर दर्शन करूंगा और जव मौक़ा लगेगा तो मां के भी दर्शन करूंगा।" यह वात साढ़े तीन वजे दोपहर वाद की थी। शाम को श्री बी. सी. मिश्रा जोकि आजकल दिल्ली हाईकोर्ट के जज हैं, उनका टेलीफ़ोन आया कि हरिवावा दांत निकलवा रहे हैं, उनको बुखार हो गया है। मैंने कहा—"पेंसिलीन का टीका लगवा दीजिए, वुखार उतर जायेगा।" वे फ़रमाने लगे—"कौन लगायेगा ?" मैंने कहा—"मिश्रा साहव ! वन्दा हाज़िर है।" दूसरे रोज़ दोपहर का समय निश्चित हुआ। मैंने नई सुई ली और मिश्रा साहव के साथ चला गया। वावा कार में वैठ चुके थे, उन्हें कहीं जाना था, फ़रमाने लगे—"टीके के लिये वाहर आ जाऊं ?" मैंने अर्ज़ किया—"नहीं, मैं वहीं लगा दूंगा।" मैं इन्जेक्शन लगाकर वाहर आ गया तो उन्होंने मिश्रा साहव से पूछा कि यह कौन हैं। उन्होंने अर्ज़ की कि ये डाक्टर हैं, हमारे दोस्त हैं, कई भाषाएं जानते हैं और शायर भी हैं। वावा ने फ़रमाया कि मैं तो यह कहना चाहता हूं कि इनके हाथ से मुझे

इंजेक्शन से कोई तकलीफ़ नहीं हुई। दूसरा डाक्टर जो लगाता था तो मैं तड़प जाता था। फिर उन्होंने मुझे प्रसाद मंगवा कर दिया। इसके बाद मेरा नाम इंजेक्शन वाला डाक्टर रख दिया और इसी नाम से मुझे बुलवाते रहे। उनकी मुझ पर हमेशा कृपा रही।

एक महीने बाद कौल साहब का फ़ोन आया— "क्या आप मां के दर्शन करना चाहते हैं?" मैंने कहा—"हां।" फ़रमाया—"कब?" मैंने कहा—"आज ही।" कहने लगे—"अच्छा, एक बजे नई दिल्ली स्टेशन पर आ जाना।" मैं फूलों का हार लेकर पहुंच गया। मां डिब्बे से उतरीं, सबने हार डाले, मैं खड़ा देखता रहा, मेरी हिम्मत न हुई। मैंने मां के साथ आने वाले महात्माओं में से एक के गले में हार डाल दिया। स्टेशन से बाहर आकर मां एक गाड़ी में बैठ कर कालका जी के आश्रम में तशरीफ़ ले गयीं और मैं उनके साथ के महात्माओं को अपनी गाड़ी में बिठा कर आश्रम पहुंच गया और इसके बाद कई रोज़ लगातार वहां जाता रहा। एक रोज़ कौल साहब ने पूछा—"मां के दर्शन हुए?" मैंने अर्ज़ किया—

रसाई हुई है अभी मां के दर तक,
अभी मां के दिल तक रसाई नहीं है ॥
हुए हैं कई बार गो मां के दर्शन,
नज़र मां ने अब तक मिलाई नहीं है ॥

इसके बाद मां के दर्शन होते रहे। एक रोज़ मिश्रा साहब के साथ गया तो मां के बहुत क़रीब बैठा था। मिश्रा साहब ने अर्ज़ की—"मां! यह डाक्टर हैं।" मां ने फ़रमाया—"डाक्टर हो तो हमारी नाड़ी देखो।" इस लीला का क्या मतलब था, मैं तो नहीं समझा मगर वहां के लोग कहते थे कि नब्ज़े आलम-विश्व की नाड़ी हाथ में आ गई। इसके बाद मां को अपनी कार में लेकर वृन्दाबन भी गया और वहां के आश्रम में मां के क़रीब भी रहा। इसमें स्वामी दत्तात्रयानन्द जी की कृपा शामिल थी।

इन दिनों में मेरे दिल में गुरु की तलाश का ख्याल पैदा हो गया था। पहले हरिबाबा का ख्याल आया मगर मुझे बताया गया कि मेरे जैसे पतित बाबा की शरण नहीं ले सकते। मां के यहां की व्यवस्था मुझे ज़्यादा ऊंचे ठाठ वाली नज़र आई और मेरा साहस न हुआ। लेकिन इन दो महान् आत्माओं की कृपा का फल यह हुआ कि मुझे जहां मेरी जगह थी, वहां भेज दिया गया। जैसे ज़्यादा बिगड़े हुए बच्चों को बाल सुधार विद्यालय में भेज दिया जाता है। ज़ाहिर है कि मुझ जैसे कम अक़ल इशारों में क्या समझ सकते थे। अतः ऐसी जगह भेजा गया जहां खोद-खोदकर मन की गंदगी निकाली जाती है और ठूंस-ठूंस कर अच्छी बातें भरी जाती हैं।

मार्च सन् १९६० के अन्तिम सप्ताह की बात है कि मेरी धर्मपत्नी नये बाज़ार में दाऊदयाल भवन से वापिस आई जहां उसके गुरु श्री लाला जी का स्थान है और कहने लगी कि लाला जी के यहां एक बहुत अच्छे महात्मा आये हैं और रोज़ाना भाषण दे रहे हैं। तुम उनको चल कर सुनो। उसके ज़ोर देने से मैं राज़ी हो गया। अगले रोज़ जब मैं पहुंचा तो श्री अविनाशी जी महाराज की नज़र मुझ पर पड़ी। मैं बैठ गया और उनका भाषण सुना। दूसरे दिन फिर सुना और फिर तीसरे दिन सुनकर उनसे कई बातें पूछीं जिनका जवाब उन्होंने बड़े प्यार से दिया। उनका भाषण सुनकर मुझे यह महसूस हुआ कि स्वामी विवेकानन्द जी ही हिन्दी में बोल रहे हैं। क्योंकि स्वामी विवेकानन्द जी की किताबें मैं पढ़ता रहता था। फिर अगले दिन मैं कौल साहब को लेकर गया और उनसे कहा कि आप इनको सुनिये, इनसे बातें कीजिये और मुझे बताईये कि आपकी इनके बारे में क्या राय है क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि यही मेरे गुरु हैं, जिनकी कि मैं चिर काल से खोज कर रहा था।

कौल साहब ने भाषण सुना, बातें कीं और मुझे सलाह दी कि इनको गुरु बना लो। यह अच्छे कुल से हैं, बाल ब्रह्मचारी हैं और विद्वान हैं। मुझे महाराज जी में जो बातें विशेष रूप से अच्छी लगीं वे उनके ज्ञान के अलावा उनकी सादगी, भोला-पन और यह कि वे बिल्कुल अकेले रहते थे। न किसी को साथ रखते थे और न अपने पीछे किसी क़िस्म का ख़र्च या बन्धन रखा हुआ था। इसलिए उनको किसी की तरफ़ देखना नहीं पड़ता था। जब जी चाहा कमंडल उठाकर चल दिये। तात्पर्य यह कि कौल साहब से विचार-विमर्श के बाद मैंने श्री स्वामी अविनाशी जी से अर्ज़ की कि मुझे अपना शिष्य बना लीजिये तो वो मुस्कुराकर बोले—"शिष्य तो तुम उसी वक़्त बन गये थे जिस वक़्त तुम्हारे दिल में यह ख़्याल पैदा हुआ था।" इसके कुछ दिन बाद एक बुधवार को फ़रमाया—"कल गुरुवार है। कल इसकी रीति भी हो जायेगी।" और अगले दिन मैं नियमित रूप से उनकी शरण में आ गया। देहली में मैं उनका पहला सेवक हूं और महाराज जी भी इससे पहले कभी देहली नहीं आये थे और ऐसा लगता है कि मेरी अन्तःप्रार्थना से ही आये थे। इसके चन्द महीने बाद महाराज जी ने चांदपुरा ज़िला जालोन में बुलाया जहां एक महीने का नाम-यज्ञ, भागवत सप्ताह, रामायण पाठ और हवन इत्यादि कराया और इसका श्रेय मुझे दिया जबकि सारा ख़र्च और सारा प्रवन्ध उन्होंने स्वयं ही किया था और इस तरह से मेरा वहां के लोगों से परिचय कराया, महाराज जी की मुझ पर बहुत कृपा रही है और उन्होंने बड़े प्यार से मुझे मेरी जगह से ऊंचा उठाया है।

मुझे मेरे दादा गुरु परमहंस स्वामी कामता दास जी महाराज का बहुत प्यार मिला और उनकी बड़ी कृपा रही। दो बार एक-एक दो-दो महीने देहली में मेरे पास भी रहे।

एक बार 'मिलाप' अख़बार में मेरी ग़ज़ल छपी। शाम को एक साहब का फ़ोन आया, उन्होंने मेरे एक शेर को बहुत पसंद किया था और मिलने की इच्छा व्यक्त की थी। वह शेर यह था—

तुम्हारी नज़र के क़ाबिल,
न यह दिल है, न यह सर है।
कि जो फ़ानी हो वो मेरी,
मुहब्बत का निशां क्यों हो॥

यह साहब श्री रामलाल जी थे जिन्हें लोग प्यार से 'राम जी' भी कहते हैं। यह मुझको श्री स्वामी सार शब्दानन्द जी महाराज की सेवा में ले गए। धीरे-धीरे वहां का आना-जाना बढ़ता ही गया। वहां महात्मा गुरुशरणानन्द जी, महात्मा सत्यानन्द जी, स्वर्गीय 'सूफ़ी' जैतराम जी, गिरधारी जी, अहलुवालिया जी, त्यागी जी और सब आश्रम वासियों का बहुत प्यार मिला। यहां तक कि अब तो उनमें से ही एक होकर रह गया हूं। बल्कि एक रोज़ तो ख़ुद महाराज जी ने फ़रमाया— "तुम साथ ही थे, कभी बिछुड़ गये थे। अब फिर मिल गये हो।" इस बात से दिल बहुत संतुष्ट हुआ। अब तो उनके साथ कैथल, जालंधर और नंगली साहब सभी जगह हो आया हूं। ग़ालिब ने शिकायत की थी—"पकड़े जाते हैं फ़रिश्तों के लिखे पर नाहक़" मगर मेरा हाल यह है कि मैं अपने लिखे पर पकड़ा जाता हूं। तो किससे शिकायत करूं ?

स्वामी अखंडानन्द जी महाराज वृन्दावन वालों की भी मुझ पर बहुत कृपा है। जब भी मुझे मालूम हो जाये कि वह तशरीफ़ लाये हैं तो मैं दर्शनों को हाज़िर हो जाता हूं। स्वामी अखंडानन्द जी श्री बी. सी. मिश्रा जी के गुरुदेव हैं। मैं भी कई बार उन्हीं के आश्रम में ठहर जाता हूं।

स्वामी प्रेम मूर्ति जी निजात्म आश्रम आनन्द पर्वत वालों की भी मुझ पर बहुत कृपा है। पिछले साल जन्म-दिन के मुशायरे की सदारत अध्यक्षता भी उन्होंने फ़रमाई थी और आशीर्वाद दिया था।

स्वामी उमा भारती जी हरिद्वार वाली मेरे मकान के क़रीब सत्य नारायण मंदिर में तशरीफ़ लाई थीं और काफ़ी दिनों से सत्संग चल रहा था। एक दिन मेरी धर्म,

पत्नी मुझे वहां भी घेर कर ले गईं उनका भाषण सुना, फिर मुहल्ले के परिचित लोग जो माता जी के बहुत समीप थे, मुझे उनके कमरे में ले गये और बताया कि यह डाक्टर साहब हैं और शायर भी हैं। माता जी ने फ़रमाया—"अपने शेर सुनाओ।" मैं सुनाता रहा और वे सुनती रहीं। इसके बाद यह नियम सा ही बन गया। फिर एक दिन मैंने उनकी प्रशंसा रूप में कुछ शेर लिखकर पेश किये। इस तरह मैं माता जी के बहुत समीप होता गया और उनकी कृपा भी बढ़ती ही गई। उनके एक महीने के उपदेशों को मैंने कविता का रूप दे दिया जो इस किताब में हैं। उनके उपदेशों में इतना रस था कि वह आसानी से शेरों की बन्दिश में आ गये। सूफ़ी फ़कीरों में अज़ीज़ुल औलिया, ख्वाजा अज़ीज़ मियां, सूफ़ी महबूब मियां का और उनके सिल-सिले के सभी बुज़ुर्गों तथा सुल्तानुल औलिया ख्वाजा हसन शाह साहब का रुहानी फ़ैज़ हासिल रहा है।

गुरुदेव भगवान् की ऐसी कृपा है—

है अज़ीज पीरे मुग़ां को भी मेरी मैकशी मेरी बेख़ुदी।
कभी लग़ज़िशें भी अगर हुईं, तो उठा लिया मुझे प्यार से॥

उनकी तवज्जो, ध्यान, प्यार, कृपा और इतने महान् संतों की दया से ऐसा महसूस होता है—

दिल जमाले दोस्त से आख़िर मुनव्वर हो गया।
ऐ 'शिफ़ा' रौशन हमारी ज़िन्दगी की शाम है॥

समय-समय पर जो अपने भाव व्यक्त करता रहा, वे सब इस किताब में शामिल हैं। ख्वाजा हसन शाह साहब भेंसोड़ी वालों के उर्स में हर साल जाता था और उनकी शान में मनक़बत, स्तुति लिखकर ले जाता था, वे सब भी इसमें सम्मिलित हैं। ख्वाजा अज़ीज़ मियां की मृत्यु पर और पहली बरसी पर जो नज़्में कहीं, स्वामी सार शब्दानन्द जी के जन्म-दिन उत्सवों पर जो अक़ीदत के अशार कहे, वे भी इसमें पेश हैं। इस सिलसिले के दूसरे बुज़ुर्गों के लिये जो लिखे, वह भी हैं। श्री स्वामी उमा भारती जी के १०२ उपदेश हैं, गुरुदेव से विनती, भगवान् सालिगराम का सेहरा और कुछ नज़्में इसी प्रकार की प्रस्तुत की जा रही हैं। इनके अतिरिक्त कुछ ग़ज़लें भी पेश हैं।

—प्रेमलाल 'शिफ़ा'

तलाशे मुर्शिद

यह २६-२-६० की ग़ज़ल है जब गुरुदेव की तलाश में दिल बेचैन था लेकिन अन्दर से कोई कह रहा था कि गुरुदेव मिलेंगे ।

असर अन्दाज़ शौक़े दीदे जानां होके रहता है ।
तलब सादिक़ हो तो जलवों का सामां होके रहता है ।।
उन्हें भी पास होता है भरोसा करने वालों का !
अक़ीदत हो तो पूरा दिल का अरमां होके रहता है ।।
उसी को नूर मिलता है जलाते हैं वो जिस दिल को ।
कि जिसमें दाग़ हों उसमें चिराग़ां होके रहता है ।।
मसीहा को जो तड़पा दे करो ऐसी तड़प पैदा ।
समझ में दर्द आ जाये तो दरमां होके रहता है ।।
बहुत दिन तक नहीं वो देख सकते दिल की वीरानी ।
यह वीराना कभी रश्के गुलिस्तां होके रहता है ।।
यह इक़लीमें मुहब्बत है मेरे दिल में चले आओ ।
यहां मेहमां जो आता है वो सुलतां होके रहता है ।।
'शिफ़ा' दुनियां की नज़रों से छुपा लेते हैं ग़म लेकिन ।
हुज़ूरे दोस्त सूरत से नुमायां होके रहता है ।।

२८ मार्च सन् १९६० को परम पूज्य श्री अविनाशी जी महाराज से निम्नलिखित शब्दों में निवेदन किया गया कि वे इस दास को अपनी सेवा में स्वीकार कर लें ।

मन मन्दिर में अंधियारा है, गुरुदेव अब इसमें आओ तो ।
है दीवा बत्ती तेल सभी, तुम आकर दीप जलाओ तो ।।
सुनते हैं यहीं से शान्ति की, और ज्ञान की राहें मिलती हैं ।
निर्वाण का रस्ता भी है यहीं, तुम आकर राह दिखाओ तो ।।
फंस कर माया के फंदे में, मैं क्या था सब कुछ भूल गया ।
अज्ञान का पर्दा आंखों से, दीनों के नाथ उठाओ तो ।।
तुमने यह कहा था शरणागत की, लाज तो रखनी पड़ती है ।
मैं हाथ पसारे आया हूं, तुम करुणा-हस्त बढ़ाओ तो ।।
अब प्रेम से भर दो तन मन को, चरणों में जगह दे दो अपने ।
जो नैया डांवां-डोल है अब तक, उसको पार लगाओ तो ।।

ग़ज़ल

दिल तुम पर क़ुर्बान करें हम, दिल पर इक एहसान करो तो ।
आज नहीं इस जीवन में ही, मिलने का पैमान[1] करो तो ।।
तुमसे दूर रहें तो साजन, जीने का अरमान नहीं है ।
तुम कहते हो तो जी लेंगे, जीने का सामान करो तो ।।
जान अगर लो जान है हाज़िर, इसका तो कुछ मोल नहीं है ।
दिल लेना हो दिल ले लेना, कुछ इसका सन्मान करो तो ।।
किसके दिल में प्यार है कितना, अशकों[2] से पहचान न होगी ।
दिल पर गहरा घाव मिलेगा, प्रेमी की पहचान करो तो ।।
प्यार के साथ हज़ारों धंधे, प्यार नहीं तो जीवन फीका ।
अपने प्रेम से भर कर देना, जब भी जीवन दान करो तो ।।
दुनिया का हर काम कठिन है, सबसे कठिन विरह का जीना ।
हर मुश्किल हो जायेगी आसां, यह मुश्किल आसान करो तो ।।
दुनिया में आये थे लेकर, इक अरमान तुम्हें पाने का ।
जन्म लिए का लाभ मिले, तुम पूरा यह अरमान करो तो ।।
जिस नगरी के तुम हो बासी, जिसमें बसते भक्त तुम्हारे ।
हम भी जानें उस नगरी में, हमको भी मेहमान करो तो ।।
दुनिया से मायूस 'शिफ़ा' को, देना है ऐ दोस्त सहारा ।
आशा का इक दीप जला कर, उसका इत्मीनान करो तो ।।

---

१. वायदा, २. आंसुओं

ॐ श्री गुरवेनमः



दादा गुरुदेव परमहंस स्वामी कामता दास जी महाराज

तुम्हीं मज़हव के वानी[1] हो, धरम के पासवां[2] तुम हो ।
वयां वेदों का हो तुम और गीता की ज़ुवां तुम हो ।।
उजाला है तुम्हारी ज़ात[3] से तारीक[4] दुनिया में ।
कि दिन को मेहरे तावां[5] शव[6] को माहो[7] कहकशां[8] तुम हो ।।
जिसे कहते हैं दुनिया वह मिसाले असपे सरकश[9] है ।
लिये हाथों में इस मुंह ज़ोर घोड़े की इनां[10] तुम हो ।।
तुम्हारी ज़ात से सव्रो ग़िना[11] का दर्स[12] मिलता है ।
जहां दौलत झुकाती है जवीं वो आस्तां[13] तुम हो ।।
'शिफ़ा' भी है तुम्हारे इल्तिफ़ाते ख़ास[14] का तालिव[15] ।
जो दीनों पर दया करते रहे वो मेहरवां तुम हो ।।

---

१. वनाने वाले, २. रखवाले, ३. हस्ती, ४. अंधेरी, ५. चमकता सूरज, ६. रात, ७. चांद, ८. आकाश गंगा, ९. हुक्म न मानने वाला घोड़ा, १०. लगाम, ११. दिल की अमीरी, १२. शिक्षा, १३. चौखट, १४. विशेष कृपा, १५. मांगने वाला

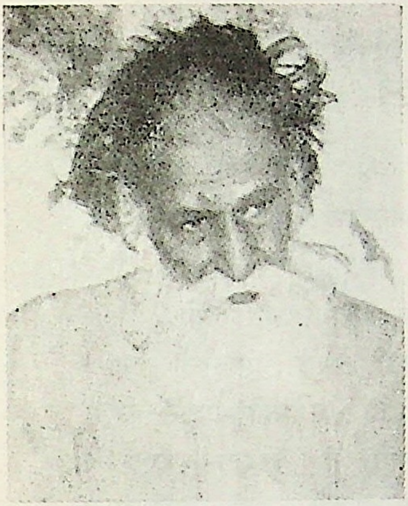
ग़ज़ल

अब मेरे तजस्सुस[1] को मिटा क्यों नहीं देते ।
तुम दिल में छुपे हो तो सदा[2] क्यों नहीं देते ।।
इस दौर में आसान नहीं आपका होना ।
इस दौर को आसान बना क्यों नहीं देते ।।
संजीदगी[3] अब बाइसे[4] आज़ार[5] हुई है ।
तुम हंस के ज़रा मुझको हंसा क्यों नहीं देते ।।
यह बात तो साबित है मैं बन्दा हूं तुम्हारा ।
तुम किसके ख़ुदा हो यह बता क्यों नहीं देते ।।
क्यों मुझपे है इल्ज़ाम मेरी मुर्दा दिली का ।
मुर्दा है मेरा दिल तो जिला क्यों नहीं देते ।।
दुशवार[6] है इस अर्सा-ए-फ़ुरक़त[7] से गुज़रना ।
तुम वक्त की रफ़्तार बढ़ा क्यों नहीं देते ।।
जो आबिद[8]-ो-माबूद[9] की तफ़रीक़[10] मिटा दे ।
वो नग़मा-ए-तोहीद[11] सुना क्यों नहीं देते ।।
तुम भी हो मुक़ाबिल मेरे बेताब[12] नज़र भी ।
पर्दा मेरी आंखों से हटा क्यों नहीं देते ।।
तासीरे दवा हो तुम्हीं ऐजाज़े दुआ हो ।
फिर अपने 'शिफ़ा' को भी शिफ़ा क्यों नहीं देते ।।

---

१. खोज, २. आवाज़, ३. गम्भीरता, ४. कारण, ५. दुःख, ६. मुश्किल, ७. विरह के दिन, ८. पुजारी, ९. पूज्य, १०. फर्क, ११. अद्वैत का राग, १२. बेचैन ।

ॐ श्री गुरवेनमः



श्री हरि बाबा जी

ग्रमीने[1] राज़ हो बावा हक़ीक़त के निशां तुम हो ।
ख़मोशी कह रही है एक वहरे बेकरां[2] तुम हो ।।
मुहव्वत हो मुजस्सम[3] दीन दुखियों की ग्रमां[4] तुम हो ।
वुलन्दी का यह ग्रालम है ज़मीं पर ग्रासमां तुम हो ।।
तुम्हारे दर्शनों से शान्ति मिलती है हर दिल को ।
तपिश दिल की मिटा देते हो वो ग्रावे रवां[5] तुम हो ।।
जहां परमात्मा ग्रौर ग्रात्मा का भेद मिटता है ।
हक़ीक़त की उसी मंज़िल में ग्रब जलवा फ़िशां[6] तुम हो ।।
तुम्हारी इक निग़ाहे लुत्फ़ से होती है तय मंज़िल ।
सहारा दो 'शिफ़ा' को भी कि मीरे कारवां[7] तुम हो ।।

१. विश्वास करने योग्य, २. ग्रथाह सागर, ३. साकार, ४. भरोसा या सहारा, ५. वहता पानी, ६. दर्शन देते हुए, ७. यात्री दल का सरदार

ग़ज़ल

पिलाओ तुम जो आंखों से तो यह तशनालवी[1] क्यों हो ।
जो तुम आंखों में बस जाओ तो फिर मय की कमी क्यों हो ।।
नज़र आओ न तुम मुझको जहां के ज़र्रे-ज़र्रे में ।
तो इस दुनियां-ए-फ़ानी[2] से मुझे वाबस्तगी[3] क्यों हो ।।
जुनूं[4] भी चाक कर देता है पर्दा राज़े फ़ितरत[5] का ।
ख़िरद[6] ही आशनाए[7] राज़ हाए सरमदी[8] क्यों हो ।।
अगर मुझसे तुम्हारा कुछ नहीं है रिश्ता-ए-बाहम[9] ।
तो मेरी बदनसीबी पर तुम्हें इतनी ख़ुशी क्यों हो ।।
गुज़ारो चन्द रोज़ा ज़िन्दगी को बेनियाज़ाना[10] ।
किसी से दुश्मनी क्यों हो किसी से दोस्ती क्यों हो ।।
अगर हर रूह का तुझसे नहीं है दाइमी[11] रिश्ता ।
तो अरबाबे फ़ना[12] पर फ़र्ज़ तेरी बन्दगी[13] क्यों हो ।।
भुला देता है सुध अपनी तसव्वुर[14] चश्मे साक़ी का ।
शराबे नाब[15] की मरहून[16] मेरी बेख़ुदी क्यों हो ।।
अभी इक और भी माशूक़ है पर्दे में फ़ितरत के ।
बुताने दहर[17] तक महदूद[18] मेरी आशिक़ी क्यों हो ।।
'शिफ़ा' मेराजे उल्फ़त[19] है जब उनसे एक हो जाना ।
तो दौरे इश्क़ में भी दिल को एहसासे दुई[20] क्यों हो ।।

---

१. प्यास, २. नाशवान ससार, ३. लगाव, ४. पागलपन, ५. कुदरत का रहस्य ६. बुद्धि, ७. जानकार, ८. हमेशा रहने वाला, ९. आपसी सम्बन्ध, १०. बिना लोभ लगाव के, ११. हमेशा रहने वाला, १२. नाशवान लोग, १३. पूजा, १४. ध्यान, १५. अंगूर की शराब, १६. अनुगृहीत, १७. दुनिया के ख़ूबसूरत लोग, १८. सीमित, १९. मुहब्बत की बुलन्दी, २०. दो होने का ख्याल

ॐ श्री गुरवेनमः



श्री आनन्दमयी मां

तुम्हीं हुस्ने अज़ल[१] हो रौनक़े कौनो मकां[२] तुम हो।
हक़ीक़त[३] राज़े सरवस्ता[४] है उसकी राज़दां[५] तुम हो।।
जो नेको बद[६] नहीं अपना समझते हम वो बच्चे हैं।
जो सीने से लगा लेती है बच्चों को वो मां तुम हो।।
मुजस्सम[७] तुम सतोगुण हो कि तुम हो नूर का पैकर[८]।
अन्धेरा उस जगह आता नहीं हरगिज़ जहां तुम हो।।
तुम्हारी चश्में रौशन से मये इरफ़ां[९] टपकती है।
जो मयख़ाना है वहदत[१०] का वहां पीरे मुग़ां[११] तुम हो।।
'शिफ़ा' का दिल करो रौशन कि वो भी घर तुम्हारा है।
तुम्हीं मालिक हो उसकी यह न समझो मेहमां तुम हो।।

---

१. अनादि सुन्दरता, २. यह दुनिया और दूसरी दुनिया, ३. सत्यता, ४. छिपा हुआ भेद, ५. जानने वाली, ६. बुरा-भला, ७. सारी की सारी, ८. प्रकाश का शरीर, ९. भक्ति की शराब, १०. अद्वैत, ११. शराब ख़ाने का मुखिया

ग़ज़ल

ग़म देकर होश की दुनिया से बेगाने[1] बनाये जाते हैं।
दीवाने नहीं होते पैदा दीवाने बनाये जाते हैं।।
जुरअ्त से वफ़ा की राहों में क़ुर्बे[2] रुखे[3] जानां[4] मिलता है।
उल्फ़त[5] की राह में पर वाले परवाने[6] बनाये जाते हैं।।
जब चश्मे करम[7] से साक़ी की दौरे[8] मये[9] इरफ़ां[10] चलता है।
रिन्दों[11] की प्यासी आंखों के पैमाने[12] बनाये जाते हैं।।
ख़ुकरदा[13]-ए-दामे[14]-दुनिया[15] की दुनिया में बसर[16] हो जाती है।
बेगाना-ए-दुनिया[17] की ख़ातिर वीराने बनाये जाते हैं।।
इस होशो-हवस[18] की दुनिया से तेज़ी से निकल चल दीवाने।
इन तपती राहों में भी कहीं काशाने[19] बनाये जाते हैं।।
जब उसका राज़ समझने में नाकाम[20] ख़िरद[21] हो जाती है।
उस एक हक़ीक़त[22] के लाखों अफ़साने बनाये जाते हैं।।
मस्ती में तो तय हो जाती हैं चाहत की कठिन लम्बी राहें।
इस वास्ते ग़म की राहों में मयख़ाने[23] बनाये जाते हैं।।
मंज़ूर उन्हें जब होती है तामीर[24] वफ़ा की बस्ती की।
उल्फ़त से भरे दिल ले-लेकर ग़मख़ाने[25] बनाये जाते हैं।।
कसरत[26] से गुज़र कर ही तो नज़र वहदत[27] से शिनासा[28] होती है।
तामीरे[29] हरम से क़ब्ल[30] 'शिफ़ा' बुतख़ाने[31] बनाये जाते हैं।।

---

१. पराये, २-३-४. प्रीतम के मुख का समीप होना, ५. प्रेम, ६. पतंगे, ७. दया दृष्टि, ८-९-१०. दिव्य शराब का दौर, ११. पीने वालों, १२. प्याले, १३-१४-१५. दुनिया के जाल के आदती, १६. गुज़र, १७. दुनिया से अलग रहने वाले, १८. होश और काम, १९. घौंसले, २०. हार जाना, २१. बुद्धि, २२. सत्यता, २३. शराबखाने, २४. बनाना, २५. ग़मगीन घर, २६. बहुत होना, २७. अद्वैत, २८. जानने वाली, २९. काबे की तैयारी, ३०. पहले, ३१. मन्दिर

ॐ श्री गुरवेनमः



श्री परमहंस दयाल स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज

राम का अवतार थे वो, राम नारायण था नाम ।
रामनवमी जन्म दिन अद्वैत था उनका पयाम[1] ।।
है उन्हीं का फैज़[2] जारी उनका ही दरबार है ।
जिसमें स्वामी सारशब्दानन्द हैं क़ायम मक़ाम ।।

—●—

भूल बैठे राम को हम, रह गया था नाम याद ।
याद आई राम की, पैदा हुए जब "राम याद" ।।
दिन वही था रामनवमी का, वो जब पैदा हुए ।
उनकी लीलाओं से आये, राम जी के काम याद ।।
कर्म और वाणी से फिर तालीम दी अद्वैत की ।
इस तरह हम को दिलाया राम का पैग़ाम याद ।।
है यह ख़ुशहाली व बदहाली मक़ामे आरज़ो[3] ।
कामरां इन्सां है वो जिसको रहे अन्जाम याद ।।
उनकी हो बेलौस[4] ख़िदमत बेग़रज़ हो उनसे प्यार ।
उनको भी रहता है ऐसा बन्दा-ए-बेदाम[5] याद ।।
ख़त्म हो जायेंगी सब नाकामियां[6] महरूमियां[7] ।
रात दिन रक्खे अगर उनको दिले नाकाम[8] याद ।।
करके सुमिरण यूं 'शिफ़ा' दिल में बसा लो राम को ।
याद अगर आयें दमे आख़िर तो आयें राम याद ।।

---

१. संदेश २. कृपा ३. क्षण भर रहने वाला हाल ४. बेगरज़ ५. मुफ़्त का गुलाम ६. असफलताएं ७. वंचित रहना ८. असफल दिल

ग़ज़ल

हम इश्क़ के राही हैं कुछ ज़ादे सफ़र[1] ले लें।
आहों में असर ले लें आदाबे नज़र[2] ले लें ॥

ऐ इश्क़ अगर उनके दीदार[3] का इमकां[4] हो।
तो बहरे तसद्दुक़[5] हम आंखों में गुहर[6] ले लें ॥

हम आज संवारेंगे ज़ुल्फ़ और रुख़े जानां[7]।
तारीकी-ए-शब[8] ले लें अनवारे सहर[9] ले लें ॥

मजबूरे मुहब्बत हैं जो कुछ वो अता[10] कर दें।
हम ख़न्दा बलब[11] ले लें बादीदा-ए-तर[12] ले लें ॥

इतनी तो इजाज़त दें वो वक्ते अता[13] हमको।
कोनैन[14] के बदले हम माबूद[15] का दर ले लें ॥

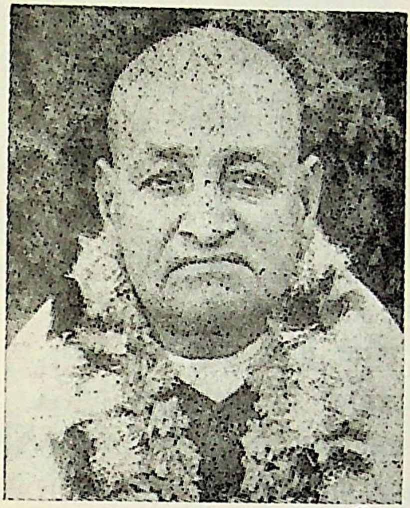
उलफ़त[16] में रहें दोनों क़ल्ब[17] और जिगर रौशन।
इक दाग़ इधर ले लें इक दाग़ उधर ले लें ॥

हर गाम[18] 'शिफ़ा' उनसे बढ़ जाएगी अब दूरी।
बढ़ता ही रहे ऐसा दामाने नज़र[19] ले लें ॥

---

१. सफ़र का सामान २. आंखों में आदर ३. दर्शन ४. सम्भावना ५. न्यौछावर करने के लिए ६. मोती ७. प्रीतम का मुख ८. रात की स्याही ९. प्रातःकाल का प्रकाश १०. दान ११. मुस्कराते हुए १२. आंखों में आंसू लाकर १३. दान के समय १४. प्रकृति १५. पूज्य १६. प्रेम १७. दिल १८. क़दम १९. नज़र का फैलावा

ॐ श्री गुरवेनमः



श्री स्वामी निजात्मानन्द जी महाराज

तमाशाई निजातम है, तमाशा भी निजातम है।
निजातम जिसका ख़ालिक़[१] है, वो दुनिया भी निजातम है।।
मगर इस राज़ को एहले मुहब्बत ही समझते हैं।
जो देखें क़ैस[२] की नज़रों से, लैला भी निजातम है।।
नज़र अज्ञान के पर्दे से, दो आने लगे वरना।
पसे पर्दा[३] निजातम पेशे पर्दा[४] भी निजातम है।।
नियाज़े इश्क़[५] नाज़े हुस्न[६] भी इक खेल है उनका।
निजातम इश्क़े रुसवा[७] हुस्ने ज़ेबा[८] भी निजातम है।।
नज़र का फेर है वरना, बड़ा छोटा नहीं कोई।
निजातम ही यहां आला[९] है, अदना[१०] भी निजातम है।।
नज़र आज़ाद हो कोताह बीनी[११] से तो फिर देखो।
बुताने दैर[१२] ही क्या संगे ख़ारा[१३] भी निजातम है।।
कोई साक़ी की चश्मे मय फ़िशां[१४] में डूब कर देखे।
कि ख़ुद साक़ी निजातम पीने वाला भी निजातम है।।
'शिफ़ा' यह राज़े वहदत[१५] है नहीं उनके सिवा कोई।
निजातम भोगता है और कर्ता भी निजातम है।।

---

१. बनाने वाला २. मजनू ३. पर्दे के पीछे ४. पर्दे के सामने ५. नम्रता ६. सुन्दरता का गर्व ७. बदनाम मुहब्बत ८. सुशोभित सुन्दरता ९. ऊंचा, बड़ा १०. नीचा, छोटा ११. अल्प दृष्टि १२ मन्दिर की प्रतिमाएं १३. कठोर पत्थर १४. शराब की वर्षा करने वाली १५. अद्वैत का भेद

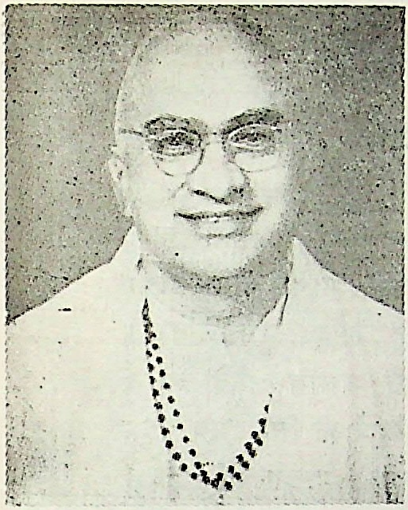
ग़ज़ल

उनसे तो गिला क्या हम को अगर अरबाबे गुलिस्तां[1] भूल गये,
इस अहदे ख़िज़ां में तुम भी हमें ऐ जाने बहारां भूल गये।
इक जाम में हमने ग़र्क़ किए अफ़कारो[2] हवादिस दुनिया के,
साक़ी की नवाज़िश याद रही हम गर्दिशे दौरां भूल गये।
हम को तो जुनूं में कुछ अपनी रूदादे वफ़ा अब याद नहीं,
तुम ने जो किये क्या तुम भी वो अलताफ़े फ़िरावां[3] भूल गए।
गुल गश्ते चमन को देर हुई अब दश्त नवर्दी भी छोडी,
गुलहाय चमन तो क्या, हमको अब ख़ारे मुग़ीलां भूल गए।
अब पांव की गर्दिश ख़त्म हुई जब से वो हुए हैं दिल में मकीं[4],
क्या दैरो हरम क्या मयख़ाना हम कूचा-ए-जानां भूल गये।
इक रोज़ हमारे अश्कों को था नाज़ किसी के दामन पर,
अब रोते हुए मुद्दत गुज़री उस दोस्त का दामां भूल गये।
हम ख़ाक नशीनों[5] को तुमने ऐ दोस्त हिक़ारत से देखा,
नश्शे में हुस्नो जवानी के तुम अज़मते इन्सां[6] भूल गये।
हर ग़म का मुदावा मुमकिन था हम लज़्ज़ते दर्द में दानिस्ता,
जिस दर्द का बाइस दोस्त हुआ उस दर्द का दरमां भूल गये।
यह भूल न हो दुनिया में 'शिफ़ा' तो याद से मर जाए इन्सां,
अच्छा ही हुआ हम भी उनके वो क़ौल वो पैमां भूल गए।

---

१. बाग़ के रहने वाले २. घटनाएं ३. बहुत सी कृपाएं ४. स्थित ५. ज़मीन पर बैठने वाले, दरिद्री ६. मनुष्य की बड़ाई

ॐ श्री गुरवेनम:



श्री स्वामी सार शब्दानन्द जी महाराज

'शिफ़ा' छयासठवां जन्म दिन है,
प्रभु के मैं नाम लूं छयासठ।
हज़ूर में "सार शब्द" जी के,
मैं जाके सजदे करूं छयासठ॥
तज्जलियों में घिरा हूं जिस दम,
जो कोई हंस कर यह मुझसे पूछे।
बताओ कितनी तज्जलियां हैं,
तो बिन गिने मैं कहूं छयासठ॥

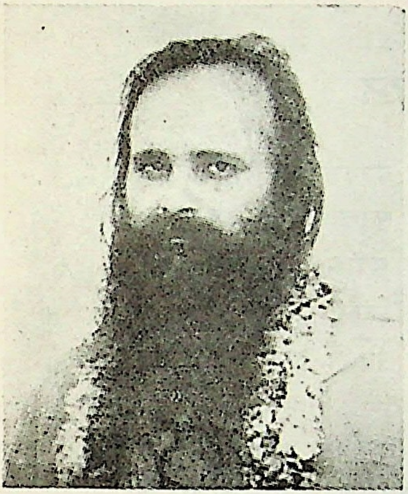
ग़ज़ल

मुझे थी जुस्तजू[1] जिनकी तुम्हीं मालूम होते हो ।
गुमां की बात क्या है बिलयक़ीं[2] मालूम होते हो ।।
तसव्वर[3] तो मेरा मेरी तरह महदूद था लेकिन ।
तसव्वर से कहीं बढ़कर हसीं मालूम होते हो ।।
ख़ला[4] सी दिल में बाक़ी थी तुम्हारे ही लिए अब तक ।
कहां से आये दिल में दिलनशीं[5] मालूम होते हो ।।
नज़र आता है हर शै में तुम्हारे हुस्न का परतौ[6] ।
जहां रुकती हैं नज़रें तुम वहीं मालूम होते हो ।।
बिसाते दिल ही क्या थी जिस पे इतने हादिसे[7] गुज़रे ।
दिले आशिक़ के रखवाले तुम्हीं मालूम होते हो ।।
कभी तुम दिल में रहते हो कभी छुपते हो आंखों में ।
नज़र आते नहीं परदानशीं मालूम होते हो ।।
अभी कुछ और बाक़ी रह गया है फ़ासला बाहम[8] ।
रगे जां में नहीं उसके क़रीं[9] मालूम होते हो ।।
नहीं मालूम हद्दे इर्तिक़ा[10] तक कौन पहुंचेगा ।
मुझे तो तुम सरे अर्शेबरीं[11] मालूम होते हो ।।
बदलते तुमको देखा है न तुमको बदगुमां[12] देखा ।
'शिफ़ा' तुम भी हमें अहले यक़ीं[13] मालूम होते हो ।।

---

१. तलाश २. यक़ीन के साथ ३. कल्पना ४. ख़ाली जगह ५. दिल में रहने वाले ६. प्रकाश ७. दुर्घटना ८. बीच में ९. पास १०. ऊंचाई की हद ११. सातवें आसमान पर १२. ग़लत समझना १३. विश्वासी

ॐ श्री गुरवेनमः



श्री स्वामी अविनाशी जी महाराज

मेरी राहों के रहवर[1], मेरी मंज़िल का निशां तुम हो।
मुझे मुद्दत से जिनकी जुस्तजू[2] थी बेगुमां[3] तुम हो।।
अमीं[4] राज़[5] हक़ीक़त[6] के अमीरे कारवां[7] तुम हो।
खिवैया भी मेरी कश्ती के, उसके वादवां[8] तुम हो।।
मेरी जो ज़िन्दगी थी गुमरही का इक बियाबां थी।
बनी है गुलसिताँ उसमें बहारे गुलसितां तुम हो।।
सहारा मुस्कुरा कर दे रहे हो गिरने वालों को।
जिसे हों लग़ज़िशें[9] मरग़ूब[10] वो पीरे मुग़ाँ[11] तुम हो।।
'शिफ़ा' ने भी सहारा नाम का पहले लिया होगा।
कि है जो नाम की महिमा उसी का अरमुग़ां[12] तुम हो।।

---

१. राह दिखाने वाला २. तलाश-खोज ३. बेशक ४-५-६. सत्य के भेद को सम्भाल कर रखने वाले ७. क़ाफ़िले के सरदार ८. नाव का पाल ९. लड़खड़ाना १०. पसन्द ११. शराब खाने क बुजुर्ग १२. उपहार

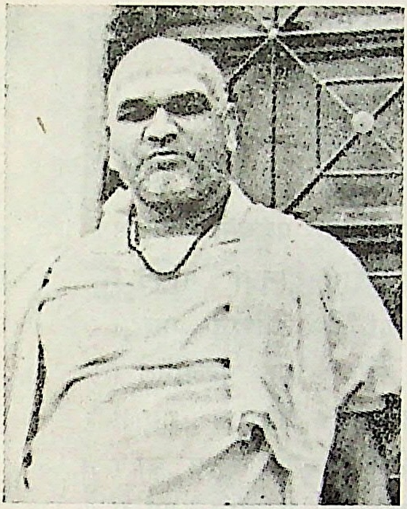
ग़ज़ल

मुहब्बत दिन-ब-दिन माईल ब वहदत[1] होती जाती है।
हर इक सूरत में पैदा उनकी सूरत होती जाती है।।
झुका करते हैं सर जिस पर गदाओं[2] और शाहों[3] के।
उसी दर[4] की गदाई[5] अपनी क़िस्मत होती जाती है।।
दुआ भी मांगने पर अब तो दिल राज़ी नहीं होता।
तबीयत है कि पाबन्दे मशीयत[6] होती जाती है।।
मेरे माबूद[7] जितने आ रहे हो पास तुम मेरे।
मुझे दुनियां के हंगामों[8] से फ़ुरसत होती जाती है।।
तुम्हारी ज़ात[9] में गुम हो रही है अब मेरी हस्ती।
जो चाहत[10] थी कभी अब वो इबादत[11] होती जाती है।।
नुक़ूशे मासिवा[12] अब ज़िंदगी से मिटते जाते हैं।
हयाते मुख़्तसर[13] तुमसे इबारत[14] होती जाती है।।
सलीक़ा आ गया है जब से जीने और मरने का।
दुचन्द[15] इस ज़िंदगी की क़दरो-क़ीमत होती जाती है।।
इरादा कर लिया है जब से हमने तर्के दुनिया[16] का।
जो दुनिया बदनुमा[17] थी ख़ूबसूरत होती जाती है।।
'शिफ़ा' जबसे भरोसा कर लिया है उनकी हिकमत[18] पर।
न कुछ मिलने पे भी तकमीले हसरत[19] होती जाती है।।

---

१. अद्वैत की तरफ़ झुकना २. फ़क़ीरों ३. राजाओं ४. दरवाज़ा ५. फ़क़ीरी ६. भगवान् की मर्ज़ी पर निर्भर ७. पूजनीय ८. झगड़ों ९. स्वयं आप १०. मुहब्बत ११. पूजा १२. द्वैत के निशान १३. छोटी सी आयु १४. वर्णन १५. दुगनी १६. दुनिया का प्यार १७. बदसूरत १८. भलाई चाहना १९. इच्छा का पूर्ण होना

ॐ श्री गुरवेनमः



महामण्डलेश्वर श्री स्वामी विद्यानन्द गिरि जी महाराज

आत्म तत्व दर्शाने वाले विद्यानन्द गिरि महाराज।
वेदों के समझाने वाले विद्यानन्द गिरि महाराज।।
जैसे प्यार की बहती गंगा[1] जैसे करुणा के पर्वत।
दीनों को अपनाने वाले विद्यानन्द गिरि महाराज।।
मस्तक जैसे वेद खुला हो मुख जैसे तेजस की खान।
ज्ञान के दीप जलाने वाले विद्यानन्द गिरि महाराज।।
आंखें जैसे ज्ञान के सागर होंठों पर प्यारी मुस्कान।
मन में ज्योत जगाने वाले विद्यानन्द गिरि महाराज।।
सादगी इनका जीवन भी है सादगी इनका भूषण भी।
ऊंची राह दिखाने वाले विद्यानन्द गिरि महाराज।।

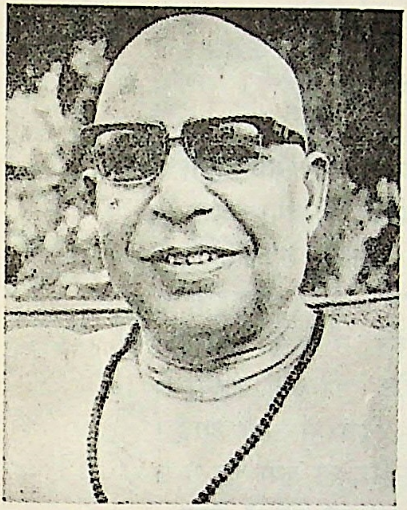
१. उत्तर काशी में दो चीज़ें महान् हैं—एक गंगा जी जिनका बहाव कभी कम नहीं होता, दूसरे ऊंचे-ऊंचे पहाड़ जो चारों तरफ़ से उत्तर काशी को बड़े प्यार की नज़रों से देखते हैं। यही स्वरूप महाराज जी का है।

ग़ज़ल

ग्रौर तो सब नामा-ो[1]-ग्रामाल[2] से जाने गए।
दिल के दाग़ों से तेरे उश्शाक़[3] पहचाने गए।।
दोस्त के दर पर गए कुछ लोग दुनियां मांगने।
हम दरे दिलदार पर दुनियां को ठुकराने गए।।
दोस्तों को हमसे सादा लोह[4] क्या पहचानते।
दुश्मनों की खोज में कुछ दोस्त पहचाने गए।।
यह करिश्मा[5] है मेरे साक़ी के लुत्फ़े ख़ास[6] का।
छोड़कर दैरो हरम[7] कुछ लोग मयख़ाने गए।।
जब किसी तदबीर[8] से ग्राया नहीं दिल को क़रार[9]।
हम हुज़ूरे दोस्त[10] दिल की वात मनवाने गए।।
उस भरी महफ़िल में गोया[11] कोई शय[12] हाईल[13] न थी।
इस तरह उश्शाक़ तक ग्रांखों के पैमाने[14] गए।।
उम्र गुज़री ग्रहले दुनियां[15] का तमाशा देखते।
जो हमारे बन के ग्राए होके बेगाने गए।।
वो गए तर्के तग्रल्लुक़[16] करके हमसे ग्रौर हम।
उनको ताहद्दे नज़र[17] नज़रों से पहुंचाने गए।।
ग्राज वो दुनियां के होकर रह गए हैं ऐ 'शिफ़ा'।
कल हम उनके वास्ते दुनियां से टकराने गए।।

१-२. कर्मों का खाता ३. चाहने वाले ४. वावले ५. चमत्कार ६. विशेष कृपा ७. मन्दिर ग्रौर कावा ८. तरकीव ९. ग्राराम १०. दोस्त के सामने ११. यूं समझो १२. चीज़ १३. रुकावट डालने वाली १४. प्याले १५. दुनिया वाले १६. रिश्ता तोड़ना १७. नज़र के फैलाव तक

ॐ श्री गुरवेनम:



महामण्डलेश्वर श्री स्वामी अखण्डानन्द जी महाराज

हो मख़ज़न[1] इल्म के तुम, भागवत के तर्जुमां तुम हो।
हर इक गुत्थी को सुलझाने में स्वामी कामरां[2] तुम हो।।
तुम्हारे पास आकर दूर हो जाती है हर शंका।
कोई कुछ पूछ ले आकर सभी पर मेहरबां तुम हो।।
तुम्हारी सादगी ने ढांप रक्खा है बलन्दी को।
बसीरत[3] हो तो पहचाने कोई तुम को कहां तुम हो।।
समझ रक्खा है मैंने तो तुम्हें इक प्रेम की मूरत।
बलन्दी पर नज़र जाती नहीं मेरी जहां तुम हो।।
'शिफ़ा' को प्यार ही मिलता रहे सरकार के दर से।
वो है अदना सा[4] साईल[5] वाक़िफ़े सूदो ज़ियां[6] तुम हो।।

---

१. खान २. कामयाब ३. देखने की शक्ति ४. छोटा सा ५. मांगने वाला ६. नफ़ा नुक़सान

मनक़बत

मुर्शिद[1] के हुए जब से तक़दीर का क्या कहना ।
उस दर पे जबीं[2] रखदी तदबीर का क्या कहना ।।
मैं महवे तमाशा[3] था वो माईले शफ़क़त[4] थे ।
ये ख्वाब में देखा था, ताबीर[5] का क्या कहना ।।
बीमारे मुहब्बत को क्योंकर न शिफ़ा होगी ।
मुर्शिद ने दवा दी है, तासीर का क्या कहना ।।
हमने जो नज़र डाली वो दिल में उतर आई ।
उस जाने दो आलम की तस्वीर का क्या कहना ।।
आशुफ़ता मिज़ाजों[6] को पाबन्दे नज़र[7] देखा ।
सरकार ! मुहब्बत की ज़ंजीर का क्या कहना ।।
हर चीज़ हमारी है यूं कुछ भी नहीं अपना ।
हम उनके गदा[8] ठहरे जागीर का क्या कहना ।।
हर मौजे ह्वादिस[9] से कुछ और निखर आई ।
अपने भी मुक़द्दर की तहरीर[10] का क्या कहना ।।
वो नूरे मुजस्सम[11] जब जलवों[12] पे हुआ माईल ।
हर क़ल्ब[13] हुआ रौशन तनवीर[14] का क्या कहना ।।
हम भी थे मशीयत[15] की नज़रों में 'शिफ़ा' शायद ।
जो तीर लगा दिल पर उस तीर का क्या कहना ।।

---

१. गुरु, २. मस्तक, ३. देखने में मग्न, ४. कृपा करने पर उतारू, ५. स्वप्न का फल, ६. विगड़े मिज़ाज वाले, ७. नज़र से बंधे हुए, ८. फ़क़ीर, ९. मुसीबत की लहर, १०. लेख, ११. साक्षात् प्रकाश, १२. दर्शनों, १३. दिल, १४. प्रकाश, १५. प्रभु इच्छा

ॐ श्री गुरवेनम:



श्री स्वामी उमा भारती जी

उमा हो, आदि शक्ति हो, गुरु हो और मां तुम हो।
जो अवतारों में दोहराई गई वो दास्तां तुम हो॥
यहां जो कुछ नज़र आता है माया का झमेला है।
ये सब फ़ानी[1] है, पैग़ामे हयाते[2] जाविदां[3] तुम हो॥
जो भटके हैं, उन्हें तुम दे रही हो ज्ञान गीता का।
करम का, ज्ञान का, वैराग्य का ज़िक्रो बयां तुम हो॥
तुम्हारी गुफ्तगू[4] में प्यार भी है, हुकमरानी भी।
दिलों पर हुकमरां हो ज़िन्दगी की पासबां[5] तुम हो॥
लिया है जन्म थी पेशे-नज़र[6] बहबूदीये इन्सां[7]।
'शिफ़ा' सेवक तुम्हारा और उस पर मेहरबां तुम हो॥

---

१. नाशवान, २, ३. अविनाशी ज़िन्दगी, ४. बातचीत, ५. रखवाले, ६. नज़र में, ७. मनुष्य जाति की भलाई

ग़ज़ल

फेर लीं मैंने दुनिया से आंखें सनम[1] मेरी आंखों में आना तेरा काम है।
मैंने महफ़िल सजा ली है अरमान[2] की अब इसे जगमगाना तेरा काम है ।।

लनतरानी[3] से तस्कीन[4] मुमकिन नहीं मुझको मूसा[5] का अंजाम मंज़ूर है ।
आ गया हूं मैं अब शौक़ के तूर पर मुझको जलवा[6] दिखाना तेरा काम है ।।

पेशतर कोई सौदा किया ही नहीं मुझको खोटे खरे की हो पहचान क्या ।
मैंने दिल रख दिया है तेरे सामने इसकी क़ीमत लगाना तेरा काम है ।।

चल दिया हूं तेरी दीद[7] के शौक़ में किस से पूछूं पता क्या बताऊं निशां ।
मैं भटकता रहूंगा तेरी राह में राह पर मुझको लाना तेरा काम है ।।

मेरी दुनियां में तारे न शम्सो क़मर[8] मैंने देखी नहीं रौशनी की किरण ।
मेरी महफ़िल में छाई हैं तारीकियां[9] इसमें शम्में[10] जलाना तेरा काम है ।।

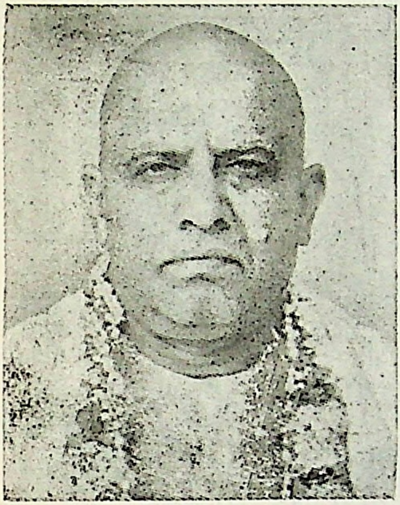
यह रवादारी-ए-इश्क़[11] क़ायम रहे इश्क़ क़ुर्बान होता रहे हुस्न पर ।
मिस्ले शबनम[12] मेरे अश्क[13] बहते रहें मिस्ले गुल[14] मुस्कुराना तेरा काम है ।।

तेरे अश्आर उन्होंने सुने हैं 'शिफ़ा' उनको रग़बत[15] भी है तेरे अश्आर से ।
अलग़रज़ ग़ायबाना[17] तआरुफ़[18] तो है उनसे रस्में बढ़ाना तेरा काम है ।।

---

१. प्यारे, २. इच्छा, ३. 'तू मुझे नहीं देख सकता' की आवाज़, ४. तसल्ली, ५. हज़रत मूसा पैग़म्बर, ६. दर्शन, ७. दर्शन, ८. सूरज और चांद, ९. अन्धेरे, १०. दीये, ११. प्रेम के रीति-रिवाज, १२. ओस की तरह, १३. आंसू, १४. फूल की तरह, १५. लगाव, १६. कविता, १७. पीठ पीछे, १८. जान-पहचान

ॐ श्री गुरवेनम:



श्री स्वामी प्रेम मूर्ति जी महाराज

दया गुरुदेव की वंसी बजाती है निजातम की ।
तो फिर अनहद से भी आवाज़ आती है निजातम की ।।
उसे अच्छा नहीं लगता पलट कर होश में आना ।
नज़र मुर्शिद[1] की जिसको मय पिलाती है निजातम की ।।
मैं फ़रते शौक़ से अपनी ज़बां को चूम लेता हूं ।
ज़बां जब बेखुदी में लय सुनाती है निजातम की ।।
उबलते हैं मये वहदत[2] के चश्मे दिल के साग़र से ।
घटा घनघोर जिस दम दिल पे छाती है निजातम की ।।
'शिफ़ा' उनका करम है हम पे हैं जो प्रेम की मूरत ।
कशिश[3] हर साल हमको खेंच लाती है निजातम की ।।

---

१. गुरु, २. दिव्य शराब, ३. आकर्षण शक्ति

ग़ज़ल

जिस हाल में हूं मुझको तेरी जुस्तजू तो है।
हासिल मेरी हयात का अब तू ही तू तो है।।

रह-रह के पड़ रही है नज़र चाके क़ल्ब[1] पर।
यानी निगाहे दोस्त को फ़िक्रे रफ़ू[2] तो है।।

तू सामने हो और अदा हो नमाज़े इश्क़[3]।
अब चश्मे अश्क बार[4] मेरी बावज़ू[5] तो है।।

तरतीब दे सको तो दो औराके ज़िन्दगी[6]।
वरना हयात[7] मारका-ए-हा-ओ-हू[8] तो है।।

तकमीले ज़ौक़े बादाकशी[9] हो तो बात है।
बज़्मे जहां[10] में गर्दिशे जामो सबू[11] तो है।।

उसकी सदा-ए-नाज़[12] से गोश आशना[13] नहीं।
यूं नग़मा संज[14] दिल में कोई ख़ुश गुलू[15] तो है।।

हैरां हूं दिल में अक्से रुख़े यार[16] देख कर।
मैं ढूंढता था जिसको वही हू-ब-हू तो है।।

जिसने तमाम बज्म को रंगीं बना दिया।
अफ़साना-ए-हयात में अपना लहू तो है।।

माना वफ़ा की राह में बरबाद हो गया।
पेशे हुज़ूर आज 'शिफ़ा' सुर्ख़रू तो है।।

---

१. दिल का ज़ख्म, २. रफ़ू करने की फ़िक्र, ३. इश्क़ की नमाज़, ४. आंसू बरसाती हुई आंख, ५. नमाज़ से पहले हाथ मुंह धोकर तैयार, ६. जीवन पृष्ठ, ७. ज़िन्दगी, ८. शोर-शराबा, अस्त-व्यस्त, ९. शराब पीने के शौक की पूर्ति, १०. दुनिया की सभा, ११. सुराही और प्याले का दौर चलना, १२. प्यार भरी आवाज़, १३. कान, परिचित, १४. राग गाता हुआ, १५. सुरीले गले वाला, १६. प्रीतम के मुख का प्रतिबिंब

ॐ श्री गुरवेनम:



श्री लाला जी महाराज

गुरु भक्ति के शैदाई[1] गुरु की जाने-जां तुम हो।
गुरु सेवा का फल है हर तरह जो कामरां[2] तुम हो।।

गुरु महिमा की शिक्षा दे रहे हो तुम ज़माने को।
मुहब्बत से दिलों पर देवियों के हुकमरां तुम हो।।

सिखाये हैं उन्हें तुमने भजन और कीर्तन पूजा।
गुरु जी दे गए हैं दर्स[3] अब उनकी ज़बां तुम हो।।

मुजस्सम[4] शान्ति हो और हो तुम प्रेम की मूरत।
वहां हर योग पर प्रधान भक्ति है जहां तुम हो।।

तुम्हारे दर पे लाला जी गुरु धन मैंने पाया है।
जो अविनाशी जी मंज़िल हैं तो मंज़िल का निशां तुम हो।।

---

१. इच्छुक, २. सफल, ३, सबक, शिक्षा, ४. साक्षात्

ग़ज़ल

जहां सुवह रुऐ सनम[1] से हो जहां शाम गेसू-ए-यार से ।
वहां मेहरो माह[2] का सिलसिला रहे ख़ाक लैलो नहार[3] से ।।
कभी उसकी मुझ पे नज़र पड़ी तो यह ज़िन्दगी ही संवर गई ।
मुझे यार से वही रब्त है जो है गुलसितां को वहार से ।।
मेरे पांव भी हैं थके-थके मेरी आंख भी है थकी-थकी ।
मुझे उस जगह की तलाश है जो क़रीब हो दरे यार से ।।
मेरे दिल का दाग़ मिटाये जो मुझे सोज़े ग़म से वचाये जो ।
तो वो मौत हो कि विसाल[4] हो है ग़रज़ तो दिल के क़रार से ।।
कभो चांद देख के खो गया कभी फूल देख के मैं हंसा ।
कभी शमा देख के रो दिया इन्हें रब्त है रुख़े यार से ।।
मुझे ख़ास तुझसे है वास्ता मेरा एक तुझ से है सिलसिला ।
तेरी कायनात[5] निखर गई मेरी ज़िन्दगी के निखार से ।।
मैं सनम परस्त वला का था तो मुझे सनम में ख़ुदा मिला ।
वोही ज़ौक़-ज़ौक़े फ़ना[6] हुआ जो चला था बोसो कनार से ।।
है अज़ीज़ पीरे मुग़ां[7] को भी मेरी मयकशी मेरी वेख़ुदी ।
कभी लग़ज़िशें[8] भी अगर हुईं तो उठा लिया मुझे प्यार से ।।
करम उनका देख के ऐ 'शिफ़ा' यही सोचता हूं मैं वारहा ।
कि लगाव इतना है किस लिए उन्हें एक मुश्ते ग़ुवार[9] से ।।

---

१. प्रीतम का मुख-मंडल २. सूरज और चांद ३. दिन और रात ४. संयोग ५. सृष्टि ६. मिट जाने का शौक ७. शराब खाने का प्रबन्धक, गुरुदेव ८. डगमगाहट ९. मुट्ठी भर खाक

ॐ श्री गुरवेनम:



कुमारी शान्ती देवी

शान्ती क्या-क्या तू राज़े ज़िन्दगी समझा गई।
तू अंधेरों में से निकली नूर[1] बन कर छा गई।।
तू तपस्या, त्याग और वैराग्य की तस्वीर थी।
प्यार की शक्ति से तू दुनिया के दिल बरमा गई।।
लेके तू आई थी इक कमज़ोर और रोगी शरीर।
मन की निष्ठा से मगर मंज़िल को अपनी पा गई।।
तेरी हस्ती से गुरु सेवा का मिलता है सबक़।
ज़िनकी कृपा से तू ऊंची मंज़िलों में आ गई।।
तू तो देवी थी तपस्या में थी कुछ बाक़ी कमी।
जन्म यह लेकर उसे भी करके तू पूरा गई।।

---

१. प्रकाश

ग़ज़ल

दरख़शां[1] नूरे इरफ़ां[2] की किरण है आज आंखों में ।
किये हूं बन्द यूं आंखें सजन हैं आज आंखों में ।।
सदा-ए-लनतरानी[3] बन गई है क़िस्सा-ए-माज़ी[4] ।
चिराग़े तूर[5] ख़ुद जलवा फ़िगन[6] है आज आंखों में ।।
चमन को छोड़कर जिसको बहारें ढूंढने आईं ।
इक ऐसा गुलबदन[7] गुंचादहन[8] है आज आंखों में ।।
मुअत्तर[9] और ताज़ा यूं फ़िज़ा[10] मालूम होती है ।
कोई गुलनारो[11] सर्वो[12] यास्मन[13] है आज आंखों में ।।
हक़ीरो हेच[14] है मेरी नज़र में दौलते दुनिया ।
कोई दुर्रे अदन[15] लाले यमन[16] है आज आंखों में ।।
मेरे माहौल से अब भागती है दूर वीरानी ।
बसा ऐसा कोई रश्के चमन[17] है आज आंखों में ।।
कहां का ज़ोह्द[18] क्या तौबा शराबी बन गईं आंखें ।
इक ऐसा साक़ी-ए-तक़वा शिकन[19] है आज आंखों में ।।
उसी के सैंकड़ों जलवे हज़ारों सूरतें पैदा[20] ।
ग़रज़ इक अंजुमन[21] की अंजुमन है आज आंखों में ।।
तग़ज़्ज़ुल आफ़रीं[22] सारा जहां मालूम होता है ।
'शिफ़ा' जाने ग़ज़ल[23] हुस्ने सुख़न[24] है आज आंखों में ।।

---

१. प्रकाशमान २. दिव्य दर्शन ३. तू मुझे नहीं देख सकेगा ४. बीते समय की कहानी ५. तूर पहाड़ पर जो प्रकाश हुआ था ६. दर्शित ७. फूल जैसे शरीर वाला ८. कली जैसे मुंह वाला ९. सुगन्धित १०. वातावरण ११. अनार का फूल १२. सरू का पेड़ १३. चमेली १४. तुच्छ १५. अदन का मोती १६. यमन का लाल १७. जिसको देखकर उपवन भी ईर्ष्या करे १८ परहेज़गारी १९ तोबा तोड़ने वाला २०. ज़ाहिर २१. सभा २२. काव्य का सौंदर्य बढ़ाने वाला २३. ग़ज़ल की आत्मा २४. कविता का सौंदर्य

श्री स्वामी सार शब्दानन्द जी महाराज
(बासठवां जन्म-दिन)

जो आये अब से इकसठ साल पहले नूर[1] की सूरत ।
लिये तनवीर[2] वहदत[3] की चिराग़ तूर[4] की सूरत ।।
मुहब्बत के जहां[5] के वास्ते दस्तूर की सूरत ।
मये इरफ़ां[6] पिये सरशार[7] और मख्मूर[8] की सूरत ।।
सजी है आज उनके फ़ैज़[9] से 'अद्वैत' की महफ़िल ।
जो थे भटके हुए लाखों हैं उनके रहबरे[10] मंज़िल ।।
अंधेरों में जहां के बनके शम्मे इल्म[11] वो आये ।
जो थे भटके हुए राहों से उनको राह पर लाए ।।
दिलों को कर दिया रौशन हटाए जह्ल[12] के साये ।
बशर[13] को आत्मा परमात्मा के राज़ समझाए ।।
कि यह भटकी हुई जीवात्मा फिर ख़ुद से मिल जाए ।
दुई को तर्क[14] कर दे राह पर अद्वैत की आए ।।
मुबारक जन्म-दिन इनका सभी एहले अक़ीदत[15] को ।
'शिफ़ा' को भी मुबारक और सब एहले मुहब्बत[16] को ।।
मुबारक हैं वो सब जो जान लें इनकी हक़ीक़त को ।
जो इनके आईने में देख लें ख़ुद अपनी सूरत को ।।
जिन्हें एहले हक़क़ीत[17] सत्-चित्त-आनन्द कहते हैं ।
वो ही हैं ये इन्हें हम सार शब्दानन्द कहते हैं ।।

---

१. प्रकाश २. प्रकाश ३. अद्वैत ४. तूर पहाड़ पर जो दिव्य ज्योति हुई थी ५, दुनिया ६. दिव्य दर्शन रूपी शराब ७. मस्त ८. नशे में धुत ९. कृपा १०. मंज़िल का रास्ता दिखाने वाले ११. ज्ञान का दीया १२. अज्ञान १३. इंसान १४. छोड़ना १५, श्रद्धालु १६. मोहब्बत वाले १७. सत्यवादी

ग़ज़ल

तुम दिल में रहो या आंखों में हर तरह मेरी मुश्किल होगी ।
दिल रश्क करेगा आंखों से और आंख हरीफ़े दिल[1] होगी ।।
तुम सामने आ जाओ भी तो क्या अपनी ही नज़र हाईल[2] होगी ।
दीदार जभी मुमकिन होगा जब आंख किसी क़ाबिल होगी ।।
इस नक़दो नज़र[3] की शिद्दत[4] में दुश्वार है उनका नज्ज़ारा ।
दीदारे सनम[5] हो जाएगा जब ख़ुद से नज़र ग़ाफ़िल[6] होगी ।।
अंजाम से पहले ख़त्म हुआ हर एक मुहब्बत का क़िस्सा ।
क्योंकर इन अधूरे क़िस्सों से तकमीले[7] किताबे दिल होगी ।।
हो जाएगा वक़्फ़े आम[8] जहां फ़ैज़ान[9] तुम्हारे जलवों का ।
हर क़ल्ब[10] का दामन फैलेगा, हर आंख वहां साईल[11] होगी ।।
ऐ दोस्त मैं तेरी राहों में हूं रोज़े[12] अज़ल[12] से सरगर्दां[13] ।
दीदार जहां होगा तेरा अपनी तो वही मंज़िल होगी ।।
हो जाओगे बेबाक[14] 'शिफ़ा' जब पुख़्ता जुनूं हो जाएगा ।
ख़िलवत[15] में जो उनसे कह न सके वो बात सरे महफ़िल होगी ।।

---

१. दिल की दुश्मन २. रुकावट डालने वाली ३. नुकताचीनी ४. ज़्यादती ५. प्रेमिका के दर्शन ६. भूली हुई ७. पूरा होना ८. सबके लिए खुला ९. कृपा १०. दिल ११. मांगने वाली १२. अनादि काल १३. मारा-मारा फिर रहा हूं १४. निडर १५. अकेले में

तरेसठवां जन्म-दिन

बसीरत[1] वो अता हो सार शब्दानन्द जी हमको।
नज़र आने लगें हर एक शै[2] में आप ही हमको॥
हक़ीक़त[3] को हक़ीक़त जान लें धोके को हम धोका।
अता[4] कर दीजिए बहरे करम[5] वो आगही[6] हमको॥
चमक से आरज़ी[7] चीज़ों की फिर आंखें न चुंधियाएं।
मिले सर चश्मा-ए-नूरे अज़ल[8] से रौशनी हमको॥
सहारा इस क़दर दे दीजिए अपनी इनायत[9] का।
न हो महसूस अपनी बेकसी-ओ-बेबसी[10] हमको॥
तमाशा ख़त्म हो जाए यह मरने और जीने का।
मिले इस ज़िन्दगी में ही हयाते दाईमी[11] हमको॥
न आसाईश[12] में लज्ज़त[13] हो न ग़म, ग़म हाए दुनियां का।
बफ़ैज़े वादाए इरफ़ां[14] मिले वो बेख़ुदी[15] हमको॥
हमारा जिस्मे फ़ानी[16] वक्फ़े ख़िद्‌मत[17] हो के रह जाए।
पए ईसार[18] ही मंज़ूर हो ये ज़िन्दगी हमको॥
'शिफ़ा' की इल्तिजा[19] अब तो यही है मुर्शिदे कामिल[20]।
उठें पर्दे कि हो पहचान अपनी ज़ात की हमको॥

---

१. देखने की योग्यता २. चीज़ ३. सत्यता ४. दान ५. कृपा करके ६. ज्ञान ७. क्षणिक ८. आदिकाल के प्रकाश का चश्मा ९. कृपा १०. निस्सहाय, मजबूरी ११. अमरता १२. आराम १३. स्वाद १४. दिव्य शराब १५. मस्ती १६. नाशवान शरीर १७. सेवा के लिए दान १८. कुर्बानी के वास्ते १९. निवेदन २०. पूर्ण गुरु

ग़ज़ल

दुआ को हाथ उठाकर सवाल क्या होगा।
ज़बां पे बात न आई तो हाल क्या होगा ॥
अभी तो हम हैं ज़माने की हर बला के लिए।
हमारे बाद ज़माने का हाल क्या होगा ॥
मेरा वुजूद[1] तो ख़ुद एक नक़्शे बातिल[2] है।
इसे मिटा भी दिया तो कमाल क्या होगा ॥
ये लोग ढलते हुए हुस्न पे जो नाज़ां[3] हैं।
मैं सोचता हूं कि इनका माआल[4] क्या होगा ॥
नज़र के सामने गुज़रे हज़ारहा जलवे।
जमाले यार से बढ़कर जमाल क्या होगा ॥
वो अपनी ख़ू-ए-सितम[5] को समझ रहे हैं कमाल।
कमाल यह है तो उनका ज़वाल[6] क्या होगा ॥
तुझे तो नूर ही बनना है नूर से मिलकर।
'शिफ़ा' न सोच कि बादे विसाल क्या होगा ॥

---

१. अस्तित्व २. मिट जाने वाला निशान ३. गर्व करना ४. परिणाम ५. अत्याचार की आदत ६. गिरावट

चौंसठवें जन्म-दिन की पूर्व सन्ध्या पर

कल तो रोज़े सईद[१] है रिन्दो ।
साक़िए बज़्म की विलादत[२] का ।।
कल पीएंगे हम उनको ग्रांखों से ।
दौर कल तो चलेगा रहमत[३] का ।।
कोई नासेह[४] न हमको समझाये ।
कल न होगा ग्रसर नसीहत का ।।
कल ख़ताएं[५] माग्राफ़ सब होंगी ।
सिलसिला होगा ग्राम शफ़क़त[६] का ।
लग़ज़िशों[७] में भी लुत्फ़ ग्रायेगा[७] ।
जब सहारा मिलेगा निस्बत[८] का ।।
हो के मख़मूर[९] पाये साक़ी[१०] पर ।
एक सजदा[११] करेंगे मिन्नत का ।।
झोलियां ले के ग्राये हैं ख़ाली ।
कल ख़ज़ाना लुटेगा वहदत[१२] का ।।
हम तो ठहरे गदाए मयख़ाना[१३] ।
वो भी भण्डार हैं सख़ावत[१४] का ।।
रोज़ हम भी तलब नहीं करते ।
एक होता है दिन इनायत[१५] का ।।
ग्रपने मुर्शिद[१६] से मांग लो कुछ भी ।
ख़ौफ़ इसमें नहीं नदामत[१७] का ।।
राहे महबूब[१८] में फ़ना[१९] होना ।
ऐ 'शिफ़ा' सार है मुहब्बत का ।।

---

१. मुबारक दिन २. जन्म ३. कृपा ४. उपदेशक ५. ग़लितयां ६. प्यार ७. लड़खड़ाना ८. रिश्ता ९. मदमस्त १०. साक़ी के पैर ११. धोखा खाना १२. ग्रद्वैत १३. मधुशाला का भिखारी १४. दान १५. कृपा १६. गुरु १७. शर्म १८. प्रीतम की डगर १९. खत्म होना

ग़ज़ल

दर्से इबरत[1] बन सके ख़ू यार की ऐसी तो हो ।
रुख़ बदल दे ज़िन्दगी का बेरुख़ी ऐसी तो हो ।।
फिर रहा हूं दोश[2] पर रखकर जनाज़ा होश का ।
देख ऐ ज़ौक़े जुनूं[3] दीवानगी ऐसी तो हो ।।
मयकशी[4] क्या डूब जा ऐ दिल शराबे हुस्न में ।
ज़ोह्द[5] भी सजदा करे तर दामनी[6] ऐसी तो हो ।।
मैं बयां करता रहूं वो उम्र भर सुनते रहें ।
क़िस्सा-ए-ग़म के बयां में दिलकशो ऐसी तो हो ।।
जुस्तजू किसकी किये जा कुए जानां का तवाफ़[7] ।
वो पुकारें ख़ुद तुझे आवारगी ऐसी तो हो ।।
उनको समझा है जुदा ज़ौक़े परस्तिश[8] के लिए ।
तीसरा कोई न हो क़ैदे दुई[9] ऐसी तो हो ।।
हर ख़ुशी के बाद ही मौजूद है ग़म का हुजूम[10] ।
जिसका हासिल ग़म न हो कोई ख़ुशी ऐसी तो हो ।।
इस तरह हमको पिला औरों को भी हो इशतियाक़[11] ।
ज़ौक़े मयनोशी[12] बढ़े साक़ीगरी ऐसी तो हो ।।
देखकर उनको 'शिफ़ा' यूं मुस्कुराए हम तो क्या ।
गुंचा-ए-दिल भी खिले लब पर हंसी ऐसी तो हो ।।

---

१. शिक्षा, २. कन्धा, ३. पागलपन का शौक, ४. शराब पीना, ५. परहेज़गारी, ६. शराब से पल्ला भीगा हुआ, ७. परिक्रमा, ८. पूजा का शौक, ९. दुई की क़ैद, १०. भीड़, ११. शौक, १२. शराब पीने का शौक

पंसठवां जन्म-दिन

खिले हैं वहदत[1] के फूल जिनमें लगे हुए हैं वो बाग़ पैंसठ।
है जन्म-दिन सार शब्द जी का हैं दिल में रौशन चिराग़ पैंसठ।।
ये दिन मनाते हैं हर बरस यूं कि हम गुरु का मुक़ाम[2] समझें।
भुला के सारे जहां को उनका कलाम[3] समझें पयाम[4] समझें।।
हमें जो घेरे हुए है दुनिया इस एक दिन तो हो उससे फ़ुरसत।
गुरु के क़दमों में जाके पूछें कि किस तरफ़ है रहे हक़ीक़त।।
ये उनसे पूछें कि कौन हैं हम, कहां से आये हैं, काम क्या है।
जिसे हम अपना समझ रहे हैं, वो रूप क्या है, वो नाम क्या है।।
हज़ार रिश्ते, हज़ार नाते, है कौन ग़ैर और कौन अपना।
है कुछ हक़ीक़त हुज़ूर इसमें ये खेल है या है कोई सपना।।
फ़ना[5] नहीं है जिसे कभी उसका जिस्मे फ़ानी[6] से मेल क्या है।
फ़ना ने क्यों ढक लिया बक़ा[7] को फ़ना बक़ा का खेल क्या है।।
हज़ार पर्दे पड़े हुए हैं छुपा है इनमें वो राज़ क्या है।
करम से हम आपके समझ लें नहीं हमारी मजाज़[8] क्या है।।
हुज़ूर मख़ज़न[9] हैं इल्म के और आज रोज़े ज़हूर[10] भी है।
'शिफ़ा' तजल्ली[11] भी है यहीं पर कलीम[12] भी कोहेतूर[13] भी है।।

---

१. अद्वैत, २. स्थान, ३. वाणी, ४. सन्देशा, ५. नाश, ६. नाशवान, ७. ज़िन्दगी, ८. हिम्मत, ९. खान, १०. जन्म दिन, ११. प्रकाश, १२. हजरत मूसा, १३. तूर पहाड़।

ग़ज़ल

जहां में जिस जगह नक्शे दिले बरबाद[1] बाक़ी है।
वहां के ज़र्रे-ज़र्रे में तुम्हारी याद बाक़ी है।।
क़फ़स[2] में भी तख़्य्युल[3] पर नहीं पाबंदियां मुमकिन।
असीरी[4] में भी मेरी फ़ितरते[5] आज़ाद बाक़ी है।।
जहां तुम थे वहां होते हैं अब तक हुस्न के चर्चे।
जहां मैं था मुहब्बत की वहां रूदाद[6] बाक़ी है।।
कभी जाकर क़फ़स की तीलियों पर बैठ जाता हूं।
रिहा होकर भी पासे ख़ातिरे सय्याद[7] बाक़ी है।।
पलट आती है जो हर बार जाकर गर्दिशे दौरां[8]।
कोई उसका कुले पेचां[9] का ख़ाना ज़ाद[10] बाक़ी है।।
मेरी रूदाद तो सुनिए अभी से फ़ैसला कैसा।
अभी मेरे गुनाहों की बड़ी तादाद बाक़ी है।।
'शिफ़ा' इस बेनियाज़ी[11] से नक़ूशे दिल नहीं मिटते।
ख़्याल उनका हटाने पर भी उनकी याद बाक़ी है।।

---

१. बरबाद हुए दिल के निशान, २. पिंजरा, ३. ख़्याल, ४. क़ैद, ५. स्वतन्त्र स्वभाव, ६. कहानी, ७. शिकारी के दिल का ख़्याल, ८. ज़माने का चक्कर, ९. बल खाई हुई ज़ुल्फ़ें, १०. रिश्तेदार, ११. बेपरवाही

गुरुदेव का जन्म-दिन

जन्म क्या होता कि क़ायम हैं गुरू आग़ाज़[1] से ।
आये थे इस दिन वो बाहर पर्दा हाये राज़ से ।।
देखते कब तक हमारी गुमरही बेचारगी[2] ।
हो गये बेचैन वो दुःख-दर्द की आवाज़ से ।।
शौक़ के नग़मे हमारे काम आख़िर आ गये ।
हो गये मक़बूल[3] जो निकले थे दिल के साज़ से ।।
हमसे गुमराहों को मिलती किस तरह मंज़िल मगर ।
मिल गए हमको गुरू जी इज्ज़[4] के ऐजाज़[5] से ।।
हमने सब कुछ ज़ीस्त[6] का उनके हवाले कर दिया ।
कोई पर्दा ही न रक्खा आशनाये राज़[7] से ।।
अब तो उनकी रहबरी[8] है उनके हैं नक़शे क़दम ।
मंज़िलें तय हो रही हैं अब नये अन्दाज़ से ।।
ऐ 'शिफ़ा' ये ज़िन्दगी तबदील कितनी हो गई ।
वास्ता जब से पड़ा चश्मे करिश्मा साज़ से ।

---

१. आरम्भ, २. बेसहारापन, ३. कबूल कर ली गई, ४. नम्रता, ५. चमत्कार, ६. ज़िन्दगी, ७. भेदों के जानने वाले, ८. रास्ता दिखाना ।

ग़ज़ल

पूजा था तुझे दिल से हमने ही सनम तन्हा।
अब वादीए ग़ुर्बत[1] में रक्खेंगे क़दम तन्हा॥
दुनिया के सहारे तो मंझधार में सब टूटे।
अब तो है सहारे को उनका ही करम तन्हा॥
तुम अहदे मुहब्बत के पाबन्द हुए क्योंकर।
मैंने तो वफ़ाओं की खाई थी क़सम तन्हा॥
हम आपकी राहों में पामाले मुहब्बत[2] हैं।
हम से भी कभी सुनिये रूदादे अलम[3] तन्हा॥
ग़म अपने फ़सानों में औरों के भी शामिल थे।
बदनाम हुए लेकिन हम अहले क़लम[4] तन्हा॥
इक तुरफ़ा[5] तमाशा थी बेगाना रवी[6] उनकी।
हमराह थे वो लेकिन थे राह में हम तन्हा॥
औरों ने नहीं टोका तुमने भी नहीं देखा।
हम बज़्म में बैठे थे बादीदा-ए-नम तन्हा॥
नाकामी-ए-दिल में थी अपनी भी अना[7] शामिल।
हाईल[8] थे इबादत में कब दैरो हरम तन्हा॥
हर चीज़ हमारी अब मंज़िल में फ़ना की है।
बाक़ी है 'शिफ़ा' अब तो जीने का भरम तन्हा॥

---

१. सफ़र २. मुहब्बत के मारे हुए ३. ग़म की कहानी ४. लेखक ५. अद्भुत ६. ग़ैरों की तरह चलना ७. अहंभाव ८ रुकावट.

बाज़ गश्त* (मां* से प्रार्थना)

मुझको इस दुनियां में भेजा था जो ऐ मां तूने ।
और बख्शे थे मुझे ऐश के सामां सारे ।।
मैंने इन सब से यहां काम लिया है आकर ।
आबो गिल[1], शमसो क़मर[2] और हवा और तारे ।।
शादियां देखीं यहां और चिताएं देखीं ।
उनको ख़ुद फूंक दिया जो थे बहुत ही प्यारे ।।
आंखें देखी हैं बहुत प्यार भरा था जिनमें ।
उन्हीं आंखों को फिर इक बार बदलते देखा ।।
हुस्न देखा है जवानी में निखरते मैंने ।
और फिर हुस्नो जवानी को भी ढलते देखा ।।
जिस्म देखे हैं वो फूलों की महक थी जिनमें ।
बेकफ़न लाश को बाज़ार में सड़ते देखा ।।
अपने कानों से मधुर गीत सुने थे जिनसे ।
गालियां देते उन्हीं लोगों को लड़ते देखा ।।
खट्टे-मीठे भी बहुत मैंने यहां फल खाये ।
कभी नमकीन कभी तल्ख़[3] मज़े भी चक्खे ।।

---

* वापसी * संसार को रचने वाली शक्ति, १. पानी और मिट्टी २. सूरज चांद ३. कड़वे

बढ़ के फूलों को कभी चूम लिया है मैंने।
कभी आग़ोश[1] में सीने से लगा कर रक्खे ।।
अपने हाथों से बहुत नक्श[2] संवारे मैंने।
और यही हाथ कभी बेहरे दुआ[3] उट्ठे हैं ।।
ख़िदमते ख़ल्क़[4] का भी काम लिया है इनसे।
और दुशमन पे यही मिस्ले क़ज़ा[5] उट्ठे हैं ।।
और दिल से तो बहुत प्यार किया दुनिया को।
उसका अंजाम यह है दाग़ बहुत खाये हैं ।।
जिन से नफ़रत हुई नफ़रत भी बहुत ही की है।
और जैसे भी मिले उसके सिले[6] पाये हैं ।।
बे सबाती[7] को भी दुनिया की बहुत सोचा है।
मैंने देखा है कि दुनिया है ये आनी-जानी ।।
और इस जिस्म पे जब ग़ौर किया है मैंने।
तो यह पाया है कि यह सबसे सिवा[8] है फ़ानी[9] ।।
पहले मां बाप को समझा था कि मेरे हैं ये।
जिस्मे फ़ानी[10] को समझ रक्खा है अब तक अपना ।।

१. गोदी २. चित्र ३. प्रार्थना के लिए ४. दुनिया की सेवा ५. मौत की तरह ६. बदले ७. नाशवानपन ८. अधिक ९. नाशवान १० नाशवान शरीर

दोस्त अपने हैं, अयाल अपने हैं, बच्चे अपने ।
सारा संसार न मालूम है कब तक अपना ।।
हाल अब यह है कि इक रोज़ जो ऐ मां तूने ।
मुझको बहलाया था यह चौदह[1] खिलौने देकर ।।
इस क़दर महव[2] रहा खेल में मैं भी अब तक ।
तुझको भी भूल गया ख़ुद को भी इनको लेकर ।।
इन खिलौनों से बहुत खेल रचाये मैंने ।
भूख का होश न था प्यास की परवा मुझको ।।
तूने ममता से कई बार पुकारा है मुझे ।
तूने ढुंढवाया मुझे आप भी ढूंढा मुझको ।।
आख़िरेकार खिलौनों से हुई है सैरी[3] ।
खेल कर अब तो हर इक खेल से उकताया हूं ।।
तोड़ आया हूं बनाये थे जो रिश्ते-नाते ।
कुछ घरोंदे जो बनाए थे वो फोड़ आया हूं ।।
कुछ थकावट है मुझे, ख़ौफ़ भी है, शर्म भी है ।
ख़ाक आलूदा[4] तेरे पास चला आया हूं ।।
चाहता हूं कि तू आग़ोश में ले ले ऐ मां ।
ख़त्म हो जाएं ये दुनिया के झमेले ऐ माँ ।।

---

१. पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार
२. रिश्तेदार २. तल्लीन ३. पेट भरना ४. मिट्टी में सना हुआ

ग़ज़ल

चश्मे मुश्ताक़[1] तुझे तावे तमाशा[2] ही नहीं।
हम यह समझे हैं रुख़े यार पे परदा ही नहीं।।
चांद से फूल से या शम्मा से तशबीह[3] तो दी।
कोई चेहरा रुख़े दिलदार से मिलता ही नहीं।।
मासिवा[4] के भी वहुत जाल थे फैले हर सू।
तेरी ज़ुल्फ़ों के सिवा दिल कहीं उलझा ही नहीं।।
दरमियां आपके मेरे है अना[5] का पर्दा।
मेरा एहसासे ख़ुदी[6] दिल से निकलता ही नहीं।।
चारा जुई[7] के तकल्लुफ़ से रखा है आज़ाद।
हमको वो दर्द दिया जिसका मुदावा[7] ही नहीं।।
मैंने चाहा था तुझे अपने सुख़न में ढालूं।
मैंने जो कुछ भी लिखा तेरा सरापा[8] ही नहीं।।
भाव क्या कीजियेगा आप 'शिफ़ा' के दिल का।
जिसमें हो ख़ौफ़े ज़ियां[9] यह तो वो सौदा ही नहीं।।

---

१. शौकीन आंख २. देखने की हिम्मत ३. उपमा ४. द्वैत ५-६. अहं भाव ७. इलाज ८. नख-शिख वर्णन ९. नुकसान का खतरा

प्रेम सागर भगवान् कृष्ण

तुम प्रेम का सागर हो भगवन और हम सब प्रेम के हैं प्यासे ।
पर कौन से प्रेम की बात करें, हैरां हैं तुम्हारी लीला से ।।
इस प्रेम के चश्मे से निकलीं छोटी भी, बड़ी भी धाराएं ।
इक प्रेम था तुमको सखियों से, इक प्रेम था तुमको राधा से ।।
इक प्रेम सुदर्शन चक्र से था, इक प्रेम था तुमको मुरली का ।
था प्रेम सखाओं से तुमको, इक प्रेम था भक्त सुदामा से ।।
वसुदेव के घर में जन्म लिया और नन्द के लाल कहाये थे ।
थी देवकी माता भी प्यारी, इक प्रेम था मात यशोदा से ।।
घर में माखन चोर बने और साग विदुर के घर खाया ।
था गौओं से भी प्रेम तुम्हें, इक प्रेम था जमना मैया से ।।
नन्द गांव की गलियां सुन्दर थीं, गोकल की चरागाहें प्यारी ।
इक प्रेम था बरसाने से तुम्हें, इक प्रेम था तुमको मथुरा से ।।
कपड़े जो छुपाए सखियों के वो भी इक प्रेम तुम्हारा था ।
जब चीर बढ़ाया लाज रखी, वो प्रेम था नारी रक्षा से ।।
था अर्जुन से भी प्रेम तुम्हें भीष्म भी भक्त तुम्हारे थे ।
जो सेना अपनी कटवा दी, था प्रेम तुम्हें उस सेना से ।।
ये प्रेम के पात्र नहीं यकसां, पर कौन है छोटा कौन बड़ा ।
फिर कौन सा प्रेम 'शिफ़ा' मांगूं मैं अपने कृष्ण कन्हैया से ।।

ग़ज़ल

बुत परस्ती का मुझे ज़ौक़[1] फ़िरावां भी नहीं।
दिल ही आ जाये तो फिर इश्क़ मुसलमां भी नहीं॥
जब नहीं दोस्त तो क्या दर्द का दरमां[2] ढूंढें।
यूं सिवा दोस्त के इस दर्द का दरमां भी नहीं॥
दिल को एहसास सा है वेसरो सामानो[3] का।
ज़िन्दगी देखने में बेसरो सामां भी नहीं॥
यह भी मेराजे तसव्वुर[4] है कि अब तो ऐ दोस्त।
क़ुर्ब[5] इतना है तेरा दीद का अरमां भी नहीं।
अब कोई शौक़ नहीं जिस के लिए जीना पड़े।
ज़ीस्त जब तक है मैं जीने से गुरेज़ां[6] भी नहीं॥
क्या तुझे पेश करें वे सरो सामानी में।
अब तो ऐ दस्ते जुनूं[7] तारे गरीबां[8] भी नहीं॥
यह दिले हिज्र ज़दा[9] और तरसती आंखें।
यारा-ए-ज़ब्त[10] नही दीद का इमकां[11] भी नहीं॥
इश्क़ की डोर से क़ायम है निज़ामे आलम[12]।
और यूं इश्क़ कोई कारे नुमायां[13] भी नहीं॥
तुमने पूछा भी कभी क्या है 'शिफ़ा' का मज़हब।
बन्दा-ए-कुफ़्र[14] नहीं साहिबे ईमां[15] भी नहीं॥

---

१. ज़्यादा शौक २. इलाज ३. दरिद्रता ४. ध्यान की बुलन्दी ५. पास ६. भागने वाला ७. पागलपन का हाथ ८. कालर का तार ९. ग्रह का मारा हुआ १०. सहनशीलता ११. मुमकिन १२. दरशन की व्यवस्था १३. बड़ा काम १४. नास्तिक १५. आस्तिक

निजातम का मेला

अकेला तू आया तू है भी अकेला ।
लगा तेरे पीछे जो रिश्तों का मेला ।।
तुझे मोह के जाल में है धकेला ।
मणिराम माया का है यह झमेला ।।

न चखना यह दुनिया है कड़वा करेला ।
समझ लो तो है ये निजातम का मेला ।।

तुझे होश है तो है इक खेल दुनियां ।
नहीं तो है तेरे लिए जेल दुनियां ।।
धरम वृक्ष तू ज़हर की बेल दुनियां ।
पै है ज्ञान अग्नि से बेमेल दुनियां ।।

तेरे साथ माया ने है खेल खेला ।
ये दुनियां है प्यारे निजातम का मेला ।।

कहीं क्रोध अग्नि के चलते फ़वारे ।
अहंकार नट चल रहा बेसहारे ।।
कहीं पाप पुण्य को कब्वडी में मारे ।
पकड़ ले गुरु जी को मज़बूत प्यारे ।।

बिछुड़ कर भटकता फिरेगा अकेला ।
ये दुनियां है प्यारे निजातम का मेला ।।

कहीं कशमकश के पड़े हैं हिंडोले ।
करम का रहट ले रहा है झकोले ।।
दुकानें बहुत, कोई पूरा न तोले ।
वहीं है गुरु जी दुकान अपनी खोले ।।

यहां आ खिलेगी तेरे दिल की बेला ।
ये दुनिया है प्यारे निजातम का मेला ।।

हैं तीनों गुणों के समोसे तिकोने ।
मुहब्बत के पकवान मीठे सलोने ।।
करम ज्ञान भक्ति के रक्खे खिलोने ।
दया और क्षमा के बिछे हैं बिछोने ।।

'शिफ़ा' खर्च होगा न पैसा न धेला ।
है सबसे अनोखा निजातम का मेला ।।

ग़ज़ल

टूटे हुए दिल में भी वही बूए वफ़ा है।
क्या जानईए दिल कौन सी मिट्टी से बना है॥
बरहम[1] भी नही होते वो देते हैं सज़ा भी।
औरों से निराला मेरा अन्दाज़ खता है॥
कुछ पासे मशीयत[2] भी है कुछ लज्ज़ते आज़ार[3]।
अपने तो मुक़द्दर में दुआ है न दवा है॥
हर बार नया ज़ुल्म नया तरज़ सितम था।
अफ़साना-ए-ग़म का मेरे हर बाब नया है॥
इबरत[4] का सबक़ है मेरी रूदादे मुहब्बत।
जिसने भी सुना है इसे दिल थाम लिया है॥
वाबस्ता[5] अगर अपनी ग़रज़ हो न किसी मे।
तो फ़िर कोई दुनिया में बुरा है न भला है॥
हर क़ैद से आज़ाद हैं दुनिया में 'शिफ़ा' हम।
कुछ जौक़े बक़ा[6] है न हमें खौफ़े फ़ना[7] है॥

---

१. गुस्से २. प्रभु इच्छा का विचार ३. दुःख में मज़ा ४. शिक्षा ५. सम्बन्धित ६. जीवन की आकांक्षा ७. मौत का डर



सुल्तान उल औलिया हज़रत ख्वाजा
हसन शाह साहिब भैंसोड़ी वाले

मनक़बत

मरजाए ज़ौके[1] नज़र जब आप का दर हो गया।
कसरते[2] अनवारे[3] हक़[4] से दिल मुनव्वर[5] हो गया।।
सोच कर मैंने क़दम रक्खा था राहे इश्क़ में।
हादसे होते रहे मैं उनका ख़ूगर[6] हो गया।।
उसके क़दमों पर झुकीं हैं दो जहां की नेमतें[7]।
बन्दा-ए-दरगाह[8] जो ए बन्दा परवर[9] हो गया।।
चल दिए तन्हा[10] उसे ग़म-हाये दुनिया छोड़ कर।
आपका ग़म ख़ैर से जिसका मुक़द्दर हो गया।।
पड़ गया जिस ख़ाक के ज़र्रे पे पर्तो[11] हुस्न का।
वो ज़मीं पे रह के रश्के माहो अख़्तर[12] हो गया।।
इज़ने सजदा[13] मिल गया जब आस्ताने[14] दोस्त पर।
दिल की ये हालत हुई सीने से बाहर हो गया।।
दिल के टुकड़े ये जो भेजे हैं 'शिफ़ा' ने नज़र में।
कुछ करम सरकार का सुनते हैं उस पर हो गया।।

---

१. नज़र के शौक का झुकाव २, ३, ४. सत्य के प्रकाश की अधिकता ५. प्रकाशित ६. स्वाभाविक ७. अनुकम्पा ८. समाधि का गुलाम ६. गुलाम को पालने वाले १०. अकेला ११. साया १२, चांद तारों के लिए प्रतिस्पर्धा १३. सर झुकाने की इजाज़त १४. दोस्त की चौखट

ग़ज़ल

तुम से कोई गिला नहीं होता ।
हमको अपना कहा नहीं होता ।।
हमको क्या शौक़ था गुनाहों का ।
बाबे रहमत[1] जो वा[2] नहीं होता ।।
पूछते क्या हो इश्क़ का अंजाम ।
काश दिल मुबतिला[3] नहीं होता ।।
दिल जो होता है माईले दुनियां[4] ।
मूजिबे इर्तिक़ा[5] नहीं होता ।।
एक ऐसी नज़र भी होती है ।
जिसमें अच्छा बुरा नहीं होता ।।
यूं तो वो दिल के पास रहते हैं ।
आमना-सामना नहीं होता ।।
जिसकी होती है मालो ज़र पे नज़र ।
वों किसी का सगा नहीं होता ।।
हम ख़ुदा को तलाश करते हैं ।
जो मिले वो ख़ुदा नहीं होता ।।
जिससे नज़रें वो फेर लेते हैं ।
आशनायें[6] 'शिफ़ा' नहीं होता ।।

---

१. कृपा का द्वार २. खुला ३. फंस जाना ४. दुनिया की तरफ़ झुका हुआ ५. ऊंचा उठने का कारण ६. शिफ़ा का जानकार

मनक़बत

न मुझ को दीन की चाहत न दुनिया की तलब साक़ी ।
अगर अपनी मुहब्बत दे तो दे-दे सब की सब साक़ी ।।
तेरे दर से कोई जाता नहीं है तशना लब[१] साक़ी ।
कि तेरा मैकदा[२] है मैकदों में मुन्तख़ब[३] साकी ।।
तेरे दरबार में मिलती है हर शै बेतलब[४] साकी ।
कि खुलने भी नहीं पाते यहाँ साईल[५] के लब साक़ी ।।
यूं हीं होती रहे बादाकशों[६] पर नूर[७] की बख़्शिश ।
यूं ही रौशन रहे ताहश्र[८] मयख़ाने की शब[९] साक़ी ।।
पिला दे जाम अब सबको मुहब्बत और वहदत[१०] के ।
कि अब इन्सान की इन्सानियत है जां बलब[११] साक़ी ।।
बुने इन्सानियत को खोदते जाते हैं फ़र्ज़ाने[१२] ।
अगर कुछ है तो दीवानों में है पासे अदब[१३] साक़ी ।।
सबक़ दे बन्दगाने हिर्स को सबरो क़नाअ्त[१४] का ।
कि दुनिया जिस क़दर मिलती है बढ़ती है तलब साक़ी ।।
ख़ुशी मिलती है जब एहले फ़ना[१५] से ग़म भी मिलता है ।
मसर्रत दाईमी[१६] होती है जब मिलता है रब[१७] साक़ी ।।
'शिफ़ा' का सजदा-ए-दिल[१८] बारगाहे नाज़[१९] में पहुंचे ।
गदा-ए-मैकदा[२०] आया है दर पर बाअदब[२१] साक़ी ।।

---

१. प्यासा २, शराब खाना ३. छांटा हुआ ४. हर चीज़ बिना मांगे ५. मांगने वाला ६. शराब पीने वालों ७. प्रकाश ८. फैसले के दिन तक ९. रात १०. अद्वैत ११. मौत के करीब १२. इन्सानियत की जड़ १३. अक्ल वाले १४. आदर का रख-रखाव १५. नाशवान १६. हमेशा रहने वाली १७. भगवान् १८. दिल की धोक १९. आपका दरबार २०. शराब खाने का फ़क़ीर २१. आदर सहित

ग़ज़ल

किए तर हमने लब ख़ूने जिगर से।
इलाही इस तरह कोई न तरसे ।।
घटा उट्ठी तो है साक़ी के दर से।
मगर देखें कहां जाकर यह बरसे ।।
मुरस्सा[1] है जिगर तीरे नज़र से।
यह नावक[2] कब निकलते हैं जिगर से ।।
पशेमा[3] देखकर मुझको वो बोले।
नज़र आते हैं आंसू मोतबर[4] से ।।
तुम्हारे आरिज़ो गेसू[5] के क़िस्से।
कहो तो पूछ लें शामो सहर[6] से ।।
तुम्हें पहचान क्या अहले वफ़ा[7] की।
हमें देखो हमारी ही नज़र से ।।
हमारी ही गदाई[8] का है चर्चा।
हमीं मनसूब[9] हैं साक़ी के दर से ।।
मुजस्सम[10] इश्क़ है हस्ती हमारी।
कोई देखे जो चश्मे हक़ निगर[11] से।
दुआ के वास्ते क्यों हाथ उट्ठे।
'शिफ़ा' यह पूछना है चारागर[12] से ।।

---

१. सुशोभित २. तीर ३. लज्जित ४. भरोसे वाले ५. कपोल और केश ६. सुबह ७. निर्वाह करने वाले ८. फ़क़ीरी ६. सम्बन्धित १०. साक्षात् ११. सत्यवादी आंख १२. चिकित्सक

मनक़बत

अब भी कुछ बिगड़ा नहीं गो[1] निज़ा[2] का हंगाम[3] है।
सुबह के भूले हुए आ जा कि वक्ते शाम है॥
अब मुझे किसकी तमन्ना क्या किसी से काम है।
बस सहारे के लिए काफ़ी तुम्हारा नाम है॥
एक पर्दा दरमियां है वो है एहसासे दुई[4]।
और यह पर्दा अगर हट जाए जलवा आम है॥
हिज्र[5] में नाला[6] करूं मैं और वो हो नारसा[7]।
इश्क़ पर बोहतान[8] यह वो हुस्न पर इल्ज़ाम है॥
हर मुसीबत साथ है जब तक है एहसासे ख़ुदी।
ये ख़ुदी मिट जाए तो आराम ही आराम है॥
नफ्स[9] मर जाए तो आए ज़िन्दगानी का मज़ा।
उनके हम होकर जियें जीना उसी का नाम है।
दिल जमाले दोस्त से आख़िर मुनव्वर[10] हो गया।
ऐ 'शिफ़ा' रोशन हमारी ज़िन्दगी की शाम है॥

---

१. यद्यपि २. ३. जान निकलने की हालत ४. द्वैतभाव ५. विरह ६. रुदन ७. न पहुंचे ८. आरोप ९. अहंकार १०. प्रकाशित

ग़ज़ल

किए तर हमने लब ख़ूने जिगर से।
इलाही इस तरह कोई न तरसे॥
घटा उट्ठी तो है साक़ी के दर से।
मगर देखें कहां जाकर यह बरसे॥
मुरस्सा[1] है जिगर तीरे नज़र से।
यह नावक[2] कब निकलते हैं जिगर से॥
पशेमा[3] देखकर मुझको वो बोले।
नज़र आते हैं आंसू मोतबर[4] से॥
तुम्हारे आरिज़ो गेसू[5] के क़िस्से।
कहो तो पूछ लें शामो सहर[6] से॥
तुम्हें पहचान क्या अहले वफ़ा[7] की।
हमें देखो हमारी ही नज़र से॥
हमारी ही गदाई[8] का है चर्चा।
हमीं मनसूब[9] हैं साक़ी के दर से॥
मुजस्सम[10] इश्क़ है हस्ती हमारी।
कोई देखे जो चश्मे हक़ निगर[11] से।
दुआ के वास्ते क्यों हाथ उट्ठे।
'शिफ़ा' यह पूछना है चारागर[12] से॥

---

१. सुशोभित २. तीर ३. लज्जित ४. भरोसे वाले ५. कपोल और केश ६. सुबह ७. निर्वाह करने वाले ८. फ़क़ीरी ९. सम्बन्धित १०. साक्षात् ११. सत्यवादी आंख १२. चिकित्सक

मनक़बत

अब भी कुछ बिगड़ा नहीं गो[1] निज़ा[2] का हंगाम[3] है।
सुबह के भूले हुए आ जा कि वक्ते शाम है॥
अब मुझे किसकी तमन्ना क्या किसी से काम है।
बस सहारे के लिए काफ़ी तुम्हारा नाम है॥
एक पर्दा दरमियां है वो है एहसासे दुई[4]।
और यह पर्दा अगर हट जाए जलवा आम है॥
हिज्र[5] में नाला[6] करूं मैं और वो हो नारसा[7]।
इश्क़ पर बोहतान[8] यह वो हुस्न पर इल्ज़ाम है॥
हर मुसीबत साथ है जब तक है एहसासे ख़ुदी।
ये ख़ुदी मिट जाए तो आराम ही आराम है॥
नफ्स[9] मर जाए तो आए ज़िन्दगानी का मज़ा।
उनके हम होकर जियें जीना उसी का नाम है।
दिल जमाले दोस्त से आख़िर मुनव्वर[10] हो गया।
ऐ 'शिफ़ा' रोशन हमारी ज़िन्दगी की शाम है॥

---

१. यद्यपि २. ३. जान निकलने की हालत ४. द्वैतभाव ५. विरह ६. रुदन ७. न पहुंचे ८. आरोप ९. अहंकार १०. प्रकाशित

ग़ज़ल

दोस्त की अंजुमन[1] की बात करो।
दोस्ती के चलन की बात करो।।
आशिक़ों से जो बात करनी हो।
हुस्न के बांकपन की बात करो।।
उससे मुमकिन है दिल बहल जाए।
हमसे शेरो सुख़न की बात करो।।
अब नहीं हमको ज़ब्त का यारा[2]।
अब न बेगानापन[3] की बात करो।।
साफ़ कहने से हम नहीं डरते।
हमसे दारो रसन[4] की बात करो।।
बात बेबात पर गिले-शिकवे।
कोई तो अपनेपन की बात करो।।
छोड़ दो अब तो तलख़िये गुफ्तार[5]।
लुत्फ़े कामोदहन[6] की बात करो।।
जब छिड़े ज़िक्र ज़िन्दगानी का।
साथ गोरो कफ़न[7] की बात करो।।
ऐ 'शिफ़ा' ज़िक्रे दोस्त हो वर्ना।
अज़मते इल्मो फ़न[8] की बात करो।।

---

१. सभा २. हिम्मत ३. परायापन ४. सूली-फांसी ५. बातचीत में कड़वापन ६. मुंह और तबियत का मज़ा ७. क़ब्र और कफ़न ८. ज्ञान और कारीगरी की बड़ाई .

मनक़बत

गर्दिश[1] में दौरे जाम[2] है ख़ुश साक़िए गुलफ़ाम[3] है।
रिन्दों[4] पे लुत्फ़े ख़ास[5] है गो फ़ैज़[6] उसका आम[7] है॥
सजदों[8] को मरकज़ मिल गया माबूद[9] का इनआम है।
उसको सिले[10] से क्या ग़रज़ जो बन्दा-ए बेदाम[11] है॥
मुझको दुआ से वास्ता मुझको दवा की फ़िक्र क्या।
मैं तो तेरा बीमार हूं तेरा मसीहा[12] नाम है॥
दर पर तेरे बैठा रहूं नक़्शे क़दम[13] देखा करूं।
जलवे[14] को तुझसे क्या कहूं ज़ौक़े तमाशा[15] ख़ाम[16] है॥
पूछा जो मंज़िल का पता मुर्शिद ने मुझसे यूं कहा।
पुख़्ता यक़ीं[17] कर ले ज़रा मंज़िल फ़क़त दो गाम[18] है॥
पहले तुम्हें चाहा किया आख़िर तुम्हारा हो गया।
वो इश्क़ का आग़ाज़[19] था ये इश्क़ का अंजाम[20] है॥
मंज़िल से हूं नाआशना[21] रस्ता है यह बिल्कुल नया।
मुर्शिद ने जो कुछ कह दिया पैग़ाम है इल्हाम[22] है॥
पहले तो थे मैं और तू अब मैं नहीं है तू ही तू।
तेरी है तुझको जुस्तजू दुनिया ख्याले ख़ाम[23] है॥
मंज़िल रसा[24] है मुनहसिर मुर्शिद के लुत्फ़े ख़ास[25] पर।
वर्ना 'शिफ़ा' पेशे नज़र[26] अब ज़िन्दगी की शाम है॥

---

१. चक्कर २. शराब का दौर ३. फूल जैसे बदन वाली मधुबाला ४. शराब पीने वालों ५. विशेष कृपा ६, कृपा ७. सबके लिए ८. सिर झुकाना ६. पूजनीय १०. बदले ११. मुफ्त का गुलाम १२. ईसा मसीह जो मुर्दे को ज़िन्दा करते थे १३. चरणों के चिह्न १४. दर्शन १५. देखने का शौक १६. कच्चा १७. पक्का विश्वास १८. क़दम १६. आरम्भ २०. अन्त २१. अनजान २२. देववाणी २३. झूठा ख्याल २८. मंज़िल पर पहुंचना २५. विशेष कृपा २६. नज़र के सामने

मनक़बत

आये न तिहि दस्त[1] कभी बाबे करम[2] से।
यह अज़मते अरबाबे करम[3] पूछिये हमसे ।।
हम मुतमईन ऐसे हुए साक़ी के करम से।
रहमत को हवा देने लगे दामने नम से ।।
दुनिया का हमें डर है न उक़बा[4] का ख़तर है।
रहते हैं मियां हम तो निडर आपके दम से ।।
देखा नहीं हमने रुख़े पुरनूर[5] का जलवा।
निस्बत रही है हम को फ़क़त नक़्शे क़दम से ।।
भूलेगें ज़रा मोमिनो कुफ़्फ़ार[6] के झगड़े।
हम मैकदे वालो अभी आये हैं हरम से ।।
मस्ती में अयां[7] होते हैं असरारे हक़ीक़त[8]।
वो जाम दिया है मेरे साक़ी ने क़सम से ।।
बन-बन के बिगड़ जाते हैं बनते हैं बिगड़ कर।
सीखा है यह अन्दाज़ तेरी ज़ुल्फ़ के ख़म से ।।
मैदाने अमल[9] है यही मय ख़ाना-ए-हस्ती।
हम लौटकर आये हैं यहां बाग़े इरम[10] से ।।
इस ग़म ने भुलाया मेरे दिल से ग़मे दुनियां।
फ़ुरसत न 'शिफ़ा' हो मुझे सरकार के ग़म से ।।

---

१. खाली हाथ २. कृपा द्वार ३. कृपा करने वालों की वड़ाई ४. परलोक ५. तेजस्वी मुख ६. धर्मात्मा पापी ७. प्रत्यक्ष ८. भगवान के भेद ९. कर्म भूमि १०. स्वर्ग का बाग

नात

सवा पैग़ाम ले जाना बनामे साक़िए कौसर[1]।
कि तशना लब[2] है अब तक इक ग़ुलामे साक़िए कौसर ॥
सरापा[3] शौक़ बन कर गोश बर आवाज़[4] बैठे हैं।
कभी तो आएगा हम तक पयामे साक़िए कौसर ॥
वही ईमा-ए-मैनोशी[5] वही बख़्शिश, वही रहमत।
न बदला है न बदलेगा निज़ामे[6] साक़िए कौसर ॥
कहा जो कुछ भी उसपे उसपे हम ईमान ले आए।
कि पैग़ामे ख़ुदा समझा पयामे साक़िए कौसर ॥
मेरे साक़ी की अज़मत[7] से बड़ी है अज़मते इन्सां।
फ़रिशतों से भी ऊंचा है मुक़ामे साक़िए कौसर ॥
न सजदा ही किया हमने न साक़ी के क़दम चूमे।
झुका कर दिल किया है ऐहतरामे[8] साक़िए कौसर ॥
बक़दरे ज़र्फ़[9] मय मिलती है सारे बादा ख्वारों[10] को।
मुकम्मल हर तरह है एहतमामे साक़िए कौसर ॥
हुआ मक़बूल[11] ख़िदमत में जवाबन[12] रहमतें[13] आईं।
ख़ुदा के पास जब पहुंचा सलामे साक़िए कौसर ॥
'शिफ़ा' वो दिन भी आए वो पिलाए अपनी आंखों से।
कि सुनते आए हैं मुद्दत से नामे साक़िए कौसर ॥

---

१. स्वर्ग की शराब पिलाने २. प्यासा ३. नख-शिख ४. आवाज़ पर कान लगाए ५. शराब पीने का ईशारा ६. इन्तज़ाम ७. बड़ाई ८. सम्मान ९. पात्र के हिसाब से १०. शराब पीने वालों ११. स्वीकार १२. जवाब में १३. कृपा

मनक़बत

झुका सर पाये जानां[1] पर इसी में राज़े अज़मत[2] है।
दरे मुर्शिद[3] पे जां दे दे अगर शौक़े शहादत[4] है।।
दुई[5] कैसी यहां पर ये तो इक़लीमे मुहब्बत[6] है।
ख़िरद[7] तशरीफ़ ले जाए यहां दिल की हकूमत है।।
सुकूने क़ल्ब मिलता है यहां दुनिया भी जन्नत भी।
जो चाहे मांग ले ऐ दिल यह दरबारे इनायत[8] है।।
निशातो[9] ऐश[10] मिलते हैं ग़मो अन्दोह[11] के बदले।
अनोखा है यहां ताजिर[12] अजब[13] उसकी तिजारत है।।
मताए[14] जज़बा-ए-ईसार[15] से होते हैं सब सौदे।
अगर बेदाम बिक जाए कोई वो बेशक़ीमत[16] है।।
कमालो जिस्मे इन्सानी से नेक आमाल[17] की दौलत।
उन्हीं को सौंप देना है यह तन जिनकी अमानत है।।
तरीक़े इश्क़ में परहेज़ करते हैं दिखावे से।
सदाकत[18] से किसी का नाम ले लेना इबादत[19] है।।
हुसूले मुदआ[20] के वास्ते हैं सैंकड़ों रस्ते।
मुहब्बत है मगर आसान रस्ता और ख़िदमत है।।
दो आलम[21] रक्स[22] करते हैं 'शिफ़ा' जिनकी निगाहों में।
मुझे भी याद कर लेते हैं वो उनकी इनायत है।।

---

१. प्रीतम के पांव २. बढ़ाई का भेद ३. गुरु का द्वार ४. बलिदान का शौक ५. दो होना ६. प्रेम का राज्य ७. बुद्धि ८. कृपा का दरबार ९. ख़ुशी १० आराम ११. ग़म और मुसीबत १२. व्यापारी १३. अजीब १४. पूंजी १५. कुर्बानी की मनोवृति १६. बहुमूल्य १७. कर्म १८. सच्चे दिल से १९. पूजा २०. इच्छा पूर्ति २१. लोक-परलोक २२. नाचना



अज़ीज़-उल-औलिया ख्वाजा अज़ीज़ मियां की मृत्यु पर

नज़र में एहदे गुज़शता[1] के लेके अफ़साने[2]।
हम उनकी बज़्म[3] में आये हैं कौन पहचाने ।।
जो बढ़के दामने शफ़क़त[4] में हमको लेती थी।
वो चश्मे नाज़[5] कहां छुप गई ख़ुदा जाने ।।
कहीं से ढूंढ के साक़ी को लाओ ऐ रिन्दो[6]।
ख़राब जामो सुबु[7] है उदास पैमाने ।।
बसा गया कोई आंखों में ऐसी वीरानी।
नज़र उठाओ जिधर दूर तक हैं वीराने ।।
जिसे वो पेश करें अब वो क़द्रदां है कहां।
कि लोग आए हैं लेकर दिलों के नज़राने[8] ।।
कहां वो महफ़िले रंगीं, कहां वो नाज़ो-नियाज़[9]।
कहां वो उनका करम सब हुए हैं अफ़साने ।।
'शिफ़ा' अभी तो नहीं थे दिन उनके जाने के।
मगर ये राज़े मशीयत[10] है कोई क्या जाने ।।

१. गुज़रे ज़माने २. क़िस्से ३. सभा ४. कृपा की गोद ५. मित्रता की आंखें ६. शराब पीने वालों ७. प्याला और सुराही ८. भेंट ९. गौरव और नम्रता १० प्रभु इच्छा.

ग़ज़ल

निखर चुका है शऊरे सजदा[1], न हर जगह सर झुकाएंगे हम ।
जो मिल गया नक़्शे पा[2] तुम्हारा, तो फिर न सर को उठाएंगे हम ।।
तुम्हीं से मंसूब[3] है फ़साना, तुम्हीं से कहने की आरज़ू है ।
अगर सुनोगे न तुम यह क़िस्सा, तो और किसको सुनाएंगे हम ।।
तुम्हारे जलवों की आरज़ू है, कि दीद हो लुत्फ़े दीद[4] भी हो ।
हवास जाते रहे जो अपने, तो होश में फिर न आएंगे हम ।।
वफ़ा की पुर हौल[5] वादियों[6] में, कहीं न शोरे फ़ुग़ां[7] मिलेगा ।
जो ज़ब्त[8] टूटा तो आंसुओं से, रहे-वफ़ा[9] जगमगाएंगे हम ।।
हम अपनी बर्बादियों के सदक़े[10], तुम्हें तो दादे वफ़ा भी देंगे ।
मगर तुम्हारे सितम का शिकवा, कभी ज़बां पर न लाएंगे हम ।।
ज़माना कर देगा दूर दिल से, तिलिस्मे एहसासे हुस्न[11] जिस दिन ।
हमें तो तुम याद आ रहे हो, तुम्हें बहुत याद आयेंगे हम ।।
अगरचे आंखों में आ गया दम, ज़बां में ताबे सुख़न[12] नहीं है ।
तुम अब भी पूछोगे हाले दिल तो, जवाब में मुस्कुराएंगे हम ।।
'शिफ़ा' मुहब्बत की वुसअ़तों[13] को न मिल सका जब कहीं ठिकाना।
यही इरादा किया है हमने कि, अब तो ख़ुद में समाएंगे हम ।।

---

१. सर झुकाने की योग्यता २. पैर का निशान ३. जुड़ा हुआ ४. दर्शन ५. डरावनी ६. घाटियों ७. रोने का शोर ८. बर्दाश्त, सहन शक्ति ९. प्रतिज्ञा पालन १०. क़ुर्बान होना, न्यौछावर होना ११. सुन्दरता को अनुभव करने का जादू १२. बात करने की सामर्थ्य १३. विस्तार, फैलाव

मनक़बत
अज़ीज़-उल-औलिया ख्वाजा अज़ीज़ मियां

भरम ही जाता रहा रस्मे आशनाई[1] का।
अज़ीज़ दाग़ दिया है हमें जुदाई का।।
मुझे नहीं है कुछ एहसास जग हंसाई का।
शरफ़[2] मिला है दरे यार[3] की गदाई[4] का।।
मैं था ख़ामोश जहां शोर था दुहाई का।
कोई ठिकाना भी हो मेरी बेनवाई[5] का।।
जब उनकी मस्त निगाहों से रस्मो-राह[6] न थी।
वही था ज़ीस्त[7] का इक दौर पारसाई[8] का।।
हुए हैं जब से गिरिफ़्तार उनकी ज़ुल्फ़ों में।
कभी ख़्याल भी आया नहीं रिहाई का।।
हमें तो नाज़ सितम पर भी है, करम पर भी।
गिला करें भी तो क्या उनसे बेवफ़ाई का।।
वफ़ैज़े शौक़ दरे यार पर भी आ पहुंचे।
मुक़ाम आ ही गया क़िस्मत आज़माई का।।
'शिफ़ा' न खोना भरम अर्ज़े मुद्दआ[9] करके।
कि देखना है असर बख़्त[10] की रसाई का।।

---

१. दोस्ती की रस्म २. बड़ाई ३. दोस्त का द्वार ४. फ़क़ीरी ५. बेबसी ६. जान-पहचान ७. ज़िन्दगी ८. पाप रहित जीवन ९. निवेदन १०. भाग्य

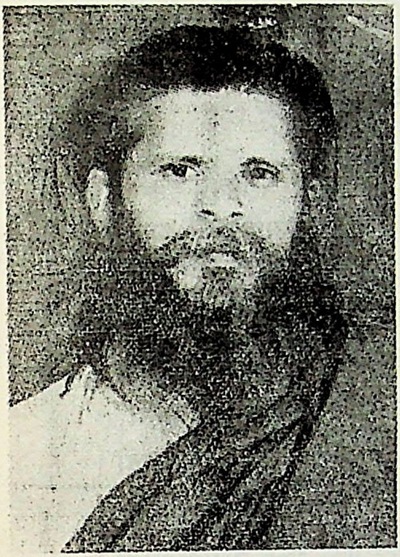
ग़ज़ल

वादिये इश्क़ में तुम जाने वफ़ा हो जाना ।
दर्द बनकर जो पुकारूं तो दवा हो जाना ।।
देखना चाहूं तो आना बुते काफ़िर[1] बनकर ।
और जब दिल में बसा लूं तो ख़ुदा हो जाना ।।
तुम तो क़दमों से कभी दूर न करना मुझको ।
फ़र्ज़ मुझ पर तो है पाबन्दे रिज़ा[2] हो जाना ।।
हो कभी मुझको जो गुलगश्ते चमन की ख़्वाहिश ।
फूल बन जाना कहीं बादे सबा[3] हो जाना ।।
डगमगाएं जो क़दम वादिये उलफ़त में मेरे ।
तुम सहारा मुझे दे देना, असा[4] हो जाना ।।
मेरे अशआर जो हैं मेरी मुहब्बत का पयाम ।
नश्र कर देना इन्हें मेरी सदा हो जाना ।।
अक़्ल जब छेड़ करे इश्क़ के दीवाने से ।
राह पर लाना उसे राहनुमा हो जाना ।।
ज़ब्त की ताब नहीं मेरे शिकस्ता दिल को ।
तुम मुहब्बत में न पाबन्दे हया[5] हो जाना ।।
जब मेरे दिल से निकल जाये दुई का एहसास ।
और जब मैं न रहूं ख़ुद ही 'शिफ़ा' हो जाना ।।

---

१. ईमान बिगाड़ देने वाली सुन्दरता २. आपकी इच्छानुसार ३. सुबह की हवा ४. हाथ की लकड़ी ५. शर्म में बंध जाना

ॐ श्री गुरवेनम:



श्री ऋषि
केशवानन्द जी महाराज

गुरु हैं मेरे भाई के है मुझपर भी करम इनका।
है मेरे वास्ते भी वक़्फ़ निर्धन आश्रम इनका।।
उठाया लाभ मैंने भी कई बार इनके दर्शन का।
कई बार इस तरह हल्का किया है बोझ तन मन का।।
किसी को ज्ञान हो जाये कर्म फिर भी नहीं छोड़े।
कि मैंने इनको देखा रोज़ देवी पाठ भी करते।।
सुनी हैं ज्ञान की वैराग की भक्ति की बातें भी।
सबक़ देते हैं यह ख़ुद ज़िन्दगी में ढाल कर अपनी।।
करम इनका 'शिफ़ा' क़ायम रहे कुछ और बढ़ जाये।
निगाहे लुत्फ़[1] इनकी ज़िन्दगी का राज़ समझाये।।

---

१. कृपा दृष्टि

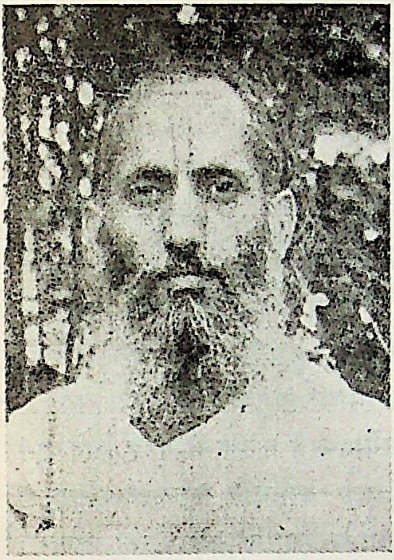
ग़ज़ल

भुला दिये ग़म रुख़े मुनव्वर[१] को देखकर बेनक़ाब हमने ।
बुझा दिए सब चिराग़ अश्कों के देखकर आफ़ताब[२] हमने ।।
रहीं हैं फिर महफ़िलें वो सूनी जहां लुटाया शबाब[३] हमने ।
वहां कोई बैठकर पीये क्या जहां लुंढाई शराब हमने ।।
न दिल में शौक़े सवाब[४] रक्खा कभी न ख़ौफ़े अज़ाब[५] हमने ।
अगर मुहब्बत गुनाह है तो गुनाह किए बेहिसाब हमने ।।
कभी झुका है जो सर हमारा किया है हमने तुम्हीं को सजदा ।
कभी किसी से जो बात की तो किया तुम्हीं को ख़िताब हमने ।।
बढ़ी है जितनी नज़र की वुसअ्त[६] तुम्हें कुछ उससे वसिई[७] पाया ।
तुम्हारी इन वुसअ्तों में देखा है ख़ुद को मिसले हबाव[८] हमने ।।
तुम्हारे जलवों की जुस्तजू में क़दम-क़दम पर बने फ़साने ।
इन्हीं फ़सानों से जुस्तजू के लिखी है दिल की किताब हमने ।।
वो है तुम्हारी ही ज़ात जिसमें कभी न देखा कोई तग़इय्युर[९] ।
नहीं तो देखा है मासिवा[१०] में बहर क़दम[११] इन्क़लाब हमने ।।
कभी इन आंखों में है मुहब्बत कभी तग़ाफ़ुल[१२] कभी हिक़ारत[१३] ।
तुम्हारी सूरत में देख रक्खी है सूरते इन्क़लाब हमने ।।
'शिफ़ा' जहां में हर इक को परखा न था मुहब्बत का अहल[१४] कोई ।
बड़े तरददुद[१५] के बाद ख़ुद को किया है अब इन्तख़ाब[१६] हमने ।।

---

१. प्रकाशित मुख २. सूर्य ३. जवानी ४. पुण्य का शौक ५. फल भोगने का डर ६-७ विस्तार ८. बुलबुले ९. तबदीली १०. आपके सिवा ११. क़दम-क़दम पर १२. बेपरवाही १३. नफ़रत १४. लायक़ १५. सोच-विचार १६. चुनाव

ॐ श्री गुरवेनम:



श्री हरि मोहिनी जी महाराज

ख़ामोशी में जो ताक़त है उसी की जुस्तजू[1] करना ।
इशारों से क़लम से और निरत से गुफ़्तगू करना ।।
ज़माने की भलाई में हमेशा रहना सरगरदां[2] ।
ज़बां ख़ामोश लेकिन है मुहब्बत दिल में बेपायां ।।
न मन में आलकस इनके न तन में है कभी सुस्ती ।
है काफ़ी उम्र इस पर भी जवानों की सी है चुस्ती ।।
सफ़ेद इनके हैं गेसू और कपड़े भी सफ़ेद इनके ।
नज़र पड़ती है इनकी जिनपे हो जाते हैं सैद[3] इनके ।।
न शोरोशर न हंगामा 'शिफ़ा' यह मोहिनी बाबा ।
विचरते हैं जहां में जिस तरह मैदान में गंगा ।।

---

१. तलाश, खोज २. फिरते रहना ३. बन्दी

ग़ज़ल

उसी दिन की उमीद पर जो रहे हैं, कभी आप से जब मुलाक़ात होगी ;
ख़ुशी में बदल जायेंगी ग़म की घड़ियां, नई ज़िंदगी की शुरूआत होगी ।।
न फिर आयेगा कोई मुशताक़े जलवा[1], न फ़रमाएंगे आप ही लनतरानी ।
नुक़ूशे दुई[2] ख़त्म हो जायेंगे सब, फ़क़त[3] जलवागर आपकी ज़ात होगी ।।
यह मालूम है आपको हमसे बेहतर, कि जो कुछ हुआ आप ही के करम से ।
अगर हमसे होगी गुनाहों की पुरसिश[4], ख़मोशी जवाबे सवालात होगी ।।
यक़ीं है हमें आपकी मसलहत[5] का, न आयेगा लब पर कभी कोई शिकवा ।
अगर बेख़ुदी में भी हम कुछ कहेंगे, ज़बां तर्जुमाने ख़्यालात होगी ।।
कभी तुम हुए मय पिलाने पे माईल[6], तो आ जायेगा मौसिमे बरक़ो-बारां[7] ।
अगर मुस्कुराओगे चमकेगी बिजली, हंसोगे तो फूलों की बरसात होगी ।।
उन्हें घेर लेंगे गुनहगार बन्दे, तो फिर आयेगी जोश में उनकी रहमत[8] ;
निगाहे करम[9] जिस तरफ़ भी उठेगी, फ़क़त वक़्फ़े[10] लुत्फ़ो[11] इनायात[12] होगी ।।
यह था आलमे[13] शौक़े[14] दीदारे[15] जानां[16],
थे इतने सुबुक[17] उनकी मंज़िल के राही ।
रवाना हुए सुबहे दम यह न सोचा, कहां दिन ढलेगा कहां रात होगी ।।
मुहब्बत का मफ़हूम[18] क्या पूछते हो, समझ लो यह बाज़ी है क़ुर्बानियों की ।
जहां इश्क़ में दख़्ल देगी तमन्ना, मुहब्बत की बाज़ी वहीं मात होगी ।।
उन्हें नाज़ है ऐ 'शिफ़ा' बेरुख़ी पर, हमारा सहारा भी है बेनियाज़ी[19] ।
कि फ़िलहाल तो हमने लब सी लिए हैं, हुई तो उन्हीं से कभी बात होगी ।।

---

१. दर्शनाभिलाषी २. दो होने के निशान ३. केवल ४. पूछताछ ५. किसी के लिए अच्छा सोचना ६. तैयार ७. बादल और बिजली का मौसम ८. कृपा ९. दया दृष्टि १०.-११.-१२. कृपा और अनुग्रह के लिए ही १३.-१४.-१५.-१६. प्रीतम के दर्शनों के शौक़ का हाल १७. हल्के-फुलके १८. अर्थ १९. बेलगाव

गुरु द्वार

जाएं तो कहां उठकर जाएं, जब उनके द्वार पे आ बैठे।
अब सर भी उठाना मुश्किल, है हम उनको शीश नवा बैठे ।।
अब उनके करम[1] की हाजत[2] है, इस दर्द का दरमां[3] क्या होगा।
जिस जख्म को मरहम रास नहीं, वो दाग़ जिगर पर खा बैठे ।।
अब मठ में किसकी खोज करें, सब कुछ तो बसा घट के अन्दर।
हम आंखें खोल के क्या देखें, जब दिल में उन्हें बसा बैठे ।।
अपनी तो कोई फ़रयाद नहीं, अब दिल जाने या वो जानें।
उनके चरणों में दिल रख कर, होठों पर मोहर लगा बैठे ।।
हर बार नज़र लौट आती है, बाहर के नज़ारों को छूकर।
दुनिया की सजावट क्या देखें हम दिल की बज्म[4] सजा बैठे ।।
हम सब कुछ छोड़ के आये हैं गुरुदेव तुम्हारे द्वारे पर।
कब तक न हमारी सुध लोगे हम धूनी यहीं रमा बैठे ।।
अन्जाम की परवा कौन करे जब प्रेम डगर पर चलना हो।
जो होगा 'शिफ़ा' हो जाएगा अब तो हम अलख जगा बैठे ।।

---

१. कृपा २. ज़रूरत ३. इलाज ४. सभा

ग़ज़ल

जाने मयख़ाना था साक़ी ज़ीनते मयख़ाना[1] हम ।
अब ज़बाने हाल से कहते हैं वो अफ़साना हम ।।
तोड़ कर आये हैं क़ैदे कावा-ओ-बुतख़ाना हम ।
अब कहीं भी देख लेंगे जलवा-ए-जानाना[2] हम ।।
रूह के राज़ों से दिल को कर रहे हैं आशना[3] ।
फिर नए उन्वान[4] से लिक्खेंगे इक अफ़साना हम ।।
बेख़ुदी की शान थी जिनसे ख़ुदी की शान थी ।
अब कहां ढूंढें उन्हें जाकर दिले दिवाना हम ।।
अब कहां से लाएं दामन बख़्शिशों के वास्ते ।
वो कभी दस्ते जुनुं[5] को दे चुके नज़राना हम ।।
अपने पन को कर दिया है इस तरह अब दिल से दूर ।
अहले दुनिया ही से क्या ख़ुद से भी हैं बेगाना हम ।।
हमने जिस दिल में सजाई थीं हज़ारों महफ़िलें ।
अब उसी दिल में लिए फिरते हैं इक वीराना हम ।।
औज[6] पर दोनों तरफ़ है इन दिनों सोज़े दुरू[7] ।
शम्मा सां[8] वो जल रहे हैं सूरते परवाना हम ।।
जब 'शिफ़ा' चश्मे करम[9] साक़ी की झुकती है इधर ।
दिल के टुकड़ों से बना लेते हैं इक पैमाना हम ।।

---

१. शराब खाने की शोभा २· प्रीतम के दर्शन ३. परिचित ४. शीर्षक ५. पागल-पन के हाथों ६. बलन्दी ७. दिल की जलन ८. दीये की तरह ९. कृपामयी आँख

गुरु दरबार

गुरु दरबार में आकर बताओ उनसे क्या मांगें।
कहो तो कुछ न मांगें या दिले बेमुद्दआ[1] मांगें।।
ख़ुदा से हम गुरु मांगें गुरु से हम ख़ुदा मांगें।
जब आएं मांगने पर हम तो इससे कम भी क्या मांगें।।
चलो दुनिया को यकसर[2] छोड़ दें विषयों से मुंह मोड़ें।
गुरु के सामने जाकर गुरु का आसरा मांगें।।
यह सूरत ही नहीं, जिसमें हक़ीक़त देख लें अपनी।
दयालु देव से अपने हम ऐसा आईना मांगें।।
वहां क्या हाथ फैलाएं जहां तक़सीम हो दुनिया।
मुहब्बत हो जहां तक़सीम हम सबसे सिवा मांगें।।
बजा, दुनिया के आगे हाथ फैलाना नहीं अच्छा।
मगर जो मांगना हो, हम गुरु से बारहा मांगें।।
सहारा एहले दुनिया का भी क्या कोई सहारा है।
सहारे के लिए गुरुदेव से उनकी दया मांगें।।
जहां माया का चक्कर है वहीं तो मौत का डर है।
जहां से मौत डरती हो वो इक़लीमे बक़ा[3] मांगें।।
हमारा ये तने ख़ाकी[4] किसी के काम आ जाए।
ज़माने के लिए गुरुदेव से दस्ते 'शिफ़ा'[5] मांगें।।

---

१. बैरागी दिल २. एक सिरे से ३. अमरता का राज ४. मिट्टी से बना शरीर ५. आराम करने वाला हाथ

ग़ज़ल

तुम्हारा हुस्न यूं लफ़ज़ों में समझाया नहीं जाता।
मेरा मफ़हूम[1] जैसे साज़ पर गाया नहीं जाता।।
हम अपनी वुसअ्ते दामां[2] जुनूं की नज्र कर बैठे।
अब इतना तंग है दामन कि फैलाया नहीं जाता।।
हमारे दिल की मजबूरी तुम अपनी ज़ुल्फ़ से पूछो।
कि दानिस्ता किसी के दाम में आया नहीं जाता।।
मिला कर प्यार से नज़रें निगाहें फेरने वाले।
अगर तारे नज़र उलझे तो सुलझाया नहीं जाता।।
ख़ुदा को छोड़कर इश्क़े बुतां में हो गया काफ़िर।
तो उस दिल को जला देते हैं दफ़नाया नहीं जाता।।
मेरा हाले ज़ुबूं मुझ से मुक़र्रर पूछने वालो।
यह ग़म की दास्तां है इसको दोहराया नहीं जाता।।
'शिफ़ा' जो बा दिले सादिक़ दरे साक़ी पे आ जाये।
उसे मख़मूर[3] कर देते हैं तरसाया नहीं जाता।।

---

१. अर्थ २. पल्ले की चौड़ाई ३. शराब में मस्त

अविनाशी गीता आश्रम—उरई

[ज़िला—जालोन, यू० पी०]

यह ज्ञान अमृत का है सरोवर, यह है मुहब्बत का आस्तताना।
उसे न देखा कहीं भटकते, जिसे यहां मिल गया ठिकाना ॥

यहीं हैं प्रयाग और काशी, यहीं अयोध्या, यहीं है मथुरा।
यहीं है गीता का ज्ञान अमृत, यहीं है वेदान्त का ख़ज़ाना ॥

यहां का वातावरण है ऐसा, कि जिसमें खुलते हैं ज्ञान चक्षु।
जनम ही उसका सफल हुआ है, जिसे मिला इसका आबोदाना[1] ॥

यहां हैं दादा गुरु के दर्शन, यहां गुरु जी की ख़ास बख्शिश।
यहां से अज्ञान दूर भागे, कि है यहां ज्ञान का ख़ज़ाना ॥

यहां पे मिलती है ऐसी मस्ती, कि अपनी हस्ती से बाखबर हो।
शराब पीने से होश आये, यहां है ऐसा शराब ख़ाना ॥

मिला न सज़दों[2] को कोई मरकज़[3], कई जगह सर झुका के देखा।
कई जगह मैंने ख़ाक छानी, यहीं पे आकर मिला ठिकाना ॥

'शिफ़ा' मैं अपना तो साक्षी हूं, मुझे तो सब कुछ यहीं मिला है।
यक़ीं की पूंजी जो लेके आए, मिले हयात[4] उसको जावेदाना[5] ॥

१. दाना पानी २. धोखा खाना ३. केन्द्र ४. ज़िन्दगी ५. अविनाशी

ग़ज़ल

क़ैदे हयात[1] काट दी, आलमे ख़्वाब[2] जान कर।
सारे अलम[3] भुला दिए, नक्श बर आब[4] जान कर।।
आये जो आप कुछ नज़र, परदा-ए-दिल में जलवागर।
खोल दिए हैं बन्दे दिल, बन्दे नक़ाब जान कर।।
दिल का न कुछ मुआविज़ा, मेरा न कुछ मुतालबा[5]।
आपको दे दिया है दिल, ऐने सवाब[6] जान कर।।
देखिए आए क्या सदा, दिल का है ये मुआमिला।
छेड़ दिए हैं तारे दिल, तारे रबाब जान कर।।
जिस को न हम झुका सके, दैरो-हरम[7] के सामने।
हमने वो सर झुका दिया, उनकी जनाब जान कर।।
अपनी निगाहे मस्त का, देखिए मुझ पे मोजिज़ा[8]।
आप भी दूर हट गए, मस्ते शराब जान कर।।
अपना यही था मशग़ला[9], इतना ही था मुआमिला।
इश्क़ का हाल कह दिया, फ़र्दे हिसाब[10] जान कर।।
उनसे सवाले वस्ल पर, अपना जो हाल ग़ैर है।
देखिए दिल पे क्या बने, उनका जवाब जान कर।।
कुशता-ए-नाज़[11] है यही, मेहरमे राज़[12] है यही।
दिल को 'शिफ़ा' न छोड़ना, ख़ाना-ख़राब जान कर।।

---

१. ज़िन्दगी की क़ैद २. स्वप्न की दुनियां ३. ग़म ४. पानी पर चित्र ५, मांग ६. पुण्य का काम ७. मंदिर और काबा ८. चमत्कार ९. आदत १०. कर्मों का बही-खाता ११. नखरों का मारा हुआ १२. भेदों का जानने वाला

सतगुरु मेरे पास

सतगुरु मेरे पास मुझे ग़म काहे का।
मैं सतगुरु का दास मुझे ग़म काहे का॥
जब मैं सीखा मेरा तेरा, माया-मोह ने मुझको घेरा।
सतगुरु तेरी आस, मुझे ग़म काहे का॥
अहंकार की चढ़ी तिजारी, काम क्रोध ने छाती जारी।
होगा इनका नाश मुझे ग़म काहे का॥
नाम रूप का गोरखधंधा, देशकाल का पड़ा है फंदा।
गुरु काटेंगे फांस, मुझे ग़म काहे का॥
अपने सत्य रूप को भूला, नाशवान जग देख के फूला।
गुरु चरणन में वास मुझे ग़म काहें का॥
राम नाम का दिया कटारा, काटा माया का परिवारा।
मन में राम निवास, मुझे ग़म काहे का॥
मैं सतगुरु का दास मुझे ग़म काहे का।
सतगुरु मेरे पास मुझे ग़म काहे का॥

ग़ज़ल

वफ़ा[1] का भी ख़ता-ए-इश्क़[2] पर इल्ज़ाम है शायद ।
सुना है यह साग्रादत[3] भी हमारे नाम है शायद ॥
न जाने इल्तिफ़ाते दोस्त[4] पर क्यों दिल लरज़ता है ।
मेरे पेशे नज़र[5] अन्देशा-ए-अंजाम[6] है शायद ॥
किसी की ग्रांख में भी इस क़दर मस्ती नहीं देखी ।
तेरी ग्रांखों में साक़ी वादा-ए-गुलफ़ाम[7] है शायद ॥
मुहब्बत में मुझे दुशवारियों[8] से हो गई रग़वत[9] ।
मेरी ईज़ा पसन्दी[10] इश्क़ का इनग्राम है शायद ॥
हमारा शग्ल ही ग्रब तो तवाफ़े कूए जानां[11] है ।
हमारे पांव पर ग्रब गर्दिशे ग्रय्याम[12] है शायद ॥
मेरे पैमाना-ए- हस्ती को भरने दो छलकने दो ।
छलकने के लिए ही ज़िन्दगी का जाम है शायद ॥
यह दुनिया है यहां पर एक बनता इक उजड़ता है ।
तेरा बसना मेरी बरबादियों का नाम है शायद ॥
ग़रज़ हमने हर इक मयकश[13] को तशना काम[14] पाया है ।
यहां दस्तूरे-मयनोशी बक़दे जाम है शायद ॥
'शिफ़ा' दिन ढल चुका है ग्रापके इश्क़े मजाज़ी[15] का ।
जली है शम्मे इरफ़ां ज़िन्दगी की शाम है शायद ॥

---

१. निर्वाह २. प्यार की ग़लती ३. नेकनामी ४. दोस्त की कृपा ५. नज़र के सामने ६. परिणाम की चिन्ता ७. फूलों की शराब ८. मुश्किलें ९. लगाव १०. दुःख को पसन्द करना ११. मित्र की गलियों के चक्कर लगाना १२. दिनों का चक्कर १३. शराब पीने वाला १४. प्यासा १५. दुनिया का प्यार

कोई मेरे साजन को बुला दो ।

नैन मिले जिस वक्त पिया से, फिर क्या काम रहा दुनिया से ।
बारम्बार मिले हैं वासे, नैना फिर भी रहे हैं प्यासे ।।

इन नैनन की प्यास बुझा दो ।
मुझ से मेरा मीत मिला दो ।।

दिन को उसकी याद सताए, रात को वैरन नींद न आए ।
दिल तड़पे मुझको तड़पाए, कौन मेरे दिल को समझाए ।।

कोई मेरे दिल को समझा दो ।
दिल से दिल का मीत मिला दो ।।

मैं दीवानी बाल बखेरे, पी दर्शन को सांझ सवेरे ।
उसकी गली के करती फेरे, कौन मेरे साजन को टेरे ;

कोई मेरे साजन को बुला दो ।
मुझ को उसका दर्श दिखा दो ।।

किस से बात कहूं मैं जी को, वा बिन सारी दुनिया फीको ।
सांसों में है आस उसी की, वर्ना क्या काया माटी की ।।

माटी को माटी में मिला दो ।
सांसों में साजन को बसा दो ।।

भगवान् सालिगराम जी का सेहरा

कार्तिक शुदी एकादशी के दिन अक्सर लोग भगवान् सालिगराम जी की शादी तुलसी जी से करवाते हैं। आम तौर पर सालिगराम जी किसी पंडित के होते हैं और तुलसी जी किसी ऐसे व्यक्ति की होती हैं जो इस नाते से कुछ दान करना चाहता है। तुलसी जी के दहेज़ में वह सभी सामान दिया जाता है जो लड़की की शादी पर देते हैं। उसी तरह बारात चढ़ती है और बारात की सेवा होती है। मुझे भी एक ऐसी बारात में शामिल होना पड़ा। सालिगराम भगवान् हमारे पंडित वंसी वाले के थे। मैंने सोचा कि शायद भगवान् का सेहरा किसी ने न लिखा होगा या लिखा होगा तो मेरे इल्म में तो नहीं है। तो क्यों न मैं ही लिख दूं। यह सोच कर यह सेहरा लिखा था। यह सेहरा छपवा कर बारात में बांट दिया था।

इसका अन्तरंग भाव यह है कि जीव के शरीर में कमर के बांस से नीचे एक कमल है. जिसको मूलाधार चक्र कहते हैं। इस चक्र में कुण्डलिनी शक्ति का निवास है जो शिवलिंग पर साढ़े तीन कुण्डल मार कर सुष्म्ना नाड़ी के नीचे वाले सिरे पर अपना फन लगा कर बैठी है और सुष्म्ना नाड़ी को बन्द कर रखा है। जब यह शक्ति जागृत होती है तो सुष्म्ना नाड़ी में प्रवेश कर जाती है और ऊपर को चलने लगती है। फिर यह स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनहद, विशुद्ध और आज्ञाचक्र को छेदन करती हुई और इनको जगाती हुई सहस्त्रार चक्र में पहुंच जाती है, जो शिव का स्थान है। जब शिव और शक्ति मिल जाते हैं तो जीव की समाधि लग जाती है। उस समय सारी शक्तियां, सारी सिद्धियां और चारों पदार्थ जीव के हाथ आ जाते हैं। इस सेहरे में कुण्डलिनी शक्ति ही तुलसिका रानी है, सुष्म्ना नाड़ी ही यमुना है, जिसको पार करके शिव या ब्रह्म या सालिगराम से जा मिलती है यानी उनका विवाह हो जाता है। इस सेहरे मैं इसी विवाह का वर्णन है। यहां शक्ति का शिव से मिल जाना या तुलसी जी का सालिगराम से विवाह हो जाना या कुण्डलिनी शक्ति का सहस्रार तक पहुंच जाना यही राज योग है, यही सारे धर्मों का निचोड़ है, यही जीवन का लक्ष्य है और यही इस सेहरे का भाव है।

—प्रेमलाल 'शिफ़ा'

सेहरा

साकार निराकार सालिगराम का सेहरा।
सब सिद्धियों का सार सालिगराम का सेहरा ॥
आंखें नहीं जमती हैं छवि देख के जिसकी।
है ऐसा चमकदार सालिगराम का सेहरा ॥
जैसे थीं भरत जी ने चरण पादुका पूजीं।
अपनी तो है सरकार सालिगराम का सेहरा ॥
जो ज्ञान की, वैराग्य की है फ़ौज बनाई।
है फ़ौज का सरदार सालिगराम का सेहरा ॥
पापी, जिन्हें देखे तो नरक नाक सिकोड़े।
है उनका ख़रीदार सालिगराम का सेहरा ॥
जो चाहते हैं राम की अनपायनी भक्ति।
है उनका भी आधार सालिगराम का सेहरा ॥
उस पार है यमुना के खड़ी तुलसिका रानी।
खिलता हुआ इस पार सालिगराम का सेहरा ॥
उस पार मूलाधार है तुलसी का सिंहासन।
इस पार सहस्रार सालिगराम का सेहरा ॥
सेहरे में सालिगराम में कुछ फ़र्क़ नहीं है।
है उनका ही आकार सालिगराम का सेहरा ॥
जो अर्थ, धरम, काम दे और मोक्ष दिला दे।
है ऐसा चमत्कार सालिगराम का सेहरा ॥
ये फूल हैं सेवा के 'शिफ़ा' प्रेम की डोरी।
पहनाओ, है तैयार सालिगराम का सेहरा ॥

ग़ज़ल

वफ़ा की राह में हम रह गए हैं क्या से क्या होकर।
कि अब तो आह भी दिल से निकलती है दुआ होकर।।
मिला है मर्तबा यह उनकी राहों में फ़ना[1] होकर।
हम इन राहों में ताबिन्दा[2] रहेंगे ख़ाके[3] पा होकर।।
हमें तो जुस्तजू[4] ही आपकी कुछ ऐसी रास आई।
कि सरगरदां[5] रहे राहों में मंज़िल आशना[6] होकर।।
न अब तो ज़िन्दगी अपनी न ज़ौक़े ज़िन्दगी अपना।
कि हम तो जी रहे हैं अब किसी का मुद्दआ होकर।।
ज़माने में ख़ुशी हमको मिली जितनी मुक़द्दर[7] थी।
मगर कुछ ग़म मिले हमको मुक़द्दर से सिवा होकर।।
इधर तशना लबी[8] मेरी उधर जामे तिही[9] मेरा।
यह सब देखा किये तुम ख़ूगरे जूदो सख़ा[10] होकर।।
मुसीबत तो किसी गुमनाम को भी ढूंढ लेती है।
मेरी जानिब तो यह आई थी तीरे बेख़ता[11] होकर।।
सभी अपने नज़र आए मगर अपना न था कोई।
यह नक़शा हमने देखा अपने मरकज़ से जुदा होकर।।
तमाशा सोज़े ग़म का दिल जला कर तुमने देखा है।
'शिफ़ा' क्या मिल गया तुमको तग़ज़्ज़ुल-आशना[12] होकर।।

---

१. समाप्त २. चमकते हुए ३. पांव की धूल ४. तलाश ५. घूमते रहे ६. अपने ठिकाने को जानने वाले ७. तक़दीर में ८. प्यास ९. खाली प्याला १०. दानी ११. अचूक तीर १२. ग़ज़ल का रस जानने वाला

नात

तुम्हारे ग़म में यूं आंसू हमारे जगमगाते हैं।
अन्धेरी रात में जैसे सितारे जगमगाते हैं।।
मैं जव आवाज़ देता हूं तुम्हें तूफ़ान में घिर कर।
तो लहरें राह देती हैं किनारे जगमगाते हैं।।
मुनव्वर[1] हो गईं आंखें तुम्हारे ग़म में रो रो कर।
ख़ुदा[2] शाहिद मेरे अश्कों[3] के धारे जगमगाते हैं।।
तुम्हारे हुस्न का परतौ[4] है मेहरो[5] माहो[6] अंजुम[7] में।
यह किसने कह दिया थे वेसहारे जगमगाते हैं।।
गुनाहों में भी घिर कर मग़फ़रत[8] की आस है मुझको।
मेरी दुनिया को रहमत[9] के इशारे जगमगाते हैं।।
यहां जो जान खोते हैं तुम्हारे ग़म में जल जल कर।
सरे महशर[10] वोही क़िस्मत के मारे जगमगाते हैं।।
कलामे आविदो[11] माबूद की अज़मत[12] का क्या कहना।
हदीसें[13] मुस्कुराती हैं सिपारे[14] जगमगाते हैं।।
उसी के लव पे आता है 'शिफ़ा' ज़िक्रे रसूल[15] अल्लाह।
कि जिसके दिल को वो यज़दां के प्यारे जगमगाते हैं।।

---

१. प्रकाशित २. भगवान साक्षी ३. आंसुओं ४. प्रतिबिम्ब ५. सूर्य ६. चन्द्रमा ७. तारागण ८. क्षमा ९. कृपा १०. फैसले के दिन ११. पुजारी और पूज्य के वाक्य १२. वड़ाई १३. हज़रत मुहम्मद साहव के वाक्य १४. क़ुरान की पंक्तियां १५. भगवान के दूत १६. भगवान

ग़ज़ल

जबीं[1] में सजदे तड़प रहे हैं, नक़ाबे जानां[2] उठा कहां है।
अभी तो है बारे दोश[3] सर भी, यह उनके आगे रखा कहां है॥
मिले हैं जितने भी जाम उनसे, हुई है तशनालबी[4] ज्यादा।
तलब रहेगी न जिसको पीकर, वो जामे वहदत मिला कहां है॥
जहां की रंगीनियां तो देखीं, मुझे अब ऐसी नज़र अता हो।
कि मैं भी यह इमतियाज़[5] कर लूं, फ़ना कहां है बक़ा कहां है॥
गवाह हो तुम कि मैंने राहे वफ़ा में, हस्ती मिटा दी अपनी।
अगर मुहब्बत न रास आई तो इसमें मेरी ख़ता कहां है॥
करम है यह भी कि वक्ते आख़िर खुला फ़रेबे नज़र का उक़दा[6]।
जिसे दो आलम में ढूंढ आया, वो यार मुझसे जुदा कहां है॥
तुम्हारे इन्साफ़ का यक़ीं है, मगर कुछ ऐसे मक़ाम आये।
जहां यह अकसर गुमां हुआ है, सजा कहां है जज़ा[7] कहां है॥
तुम्हारे जलवों में ख़ुद को खोकर, तुम्हारी राहों में ख़ाक होकर।
जिन्हों ने दरसे फ़ना[8] लिया है, उन्हें तलाशे बक़ा[9] कहां है॥
सुने तो होंगे रहे मुहब्बत में, आपने भी वफ़ा के क़िस्से।
मगर जो अफ़साना मैं कहूंगा, किसी ने अब तक सुना कहां है॥
हुसूले दुनिया[10] था फिर भी आसां मगर है दुशवार तर्के दुनियां[11]।
इस इमतिहां से भी है गुज़रना, फ़रार इससे 'शिफ़ा' कहां है॥

---

१. मस्तक २. घूंघट ३. कन्धे पर बोझ ४. प्यास ५. पहचान ६. भेद ७. बदला ८. अपने आपको मिटा देने का सबक़ ९. ज़िन्दगी १०. दुनिया को हासिल करना ११. दुनिया को छोड़ना

मनक़बत

उनको एहसासे दुई[1] दिल से मिटाकर देखिए।
उनके होकर या उन्हें अपना बनाकर देखिए ।।
जज्ब उनको कर लिया है मैंने चश्मे शौक़ में।
अब तो उनको मेरी आंखों में समाकर देखिए ।।
सर बलन्दी से दरे जानां पे कुछ मिलता नहीं।
सर झुकाकर देखिए सजदे में जाकर देखिए ।।
दूर भी हमसे नहीं वो ग़ैर भी हमसे नहीं।
रुह के राज़ों से दिल को आशना कर देखिए ।।
दिल की रस्में हैं ज़रा दुनिया की रस्मों से जुदा।
सर के बल चलकर दरे मुर्शिद पे जाकर देखिए ।।
इक बयां होता है ग़म का और इक हुस्ने बयां[2]।
उनको दिल का दर्द नग़मों में सुना कर देखिए ।।
उनसे कहना दूर है, मजबूर, महजूर[3] है।
उसके घर पर ही 'शिफ़ा' को आप जाकर देखिए ।।

१. द्वैत भावना २. वर्णन का सौंदर्य ३. विरही

गुरुदेव के तीन स्वरूप

गुरुदेव के तीन स्वरूप होते हैं—एक स्वरूप आत्म स्वरूप है। गुरुदेव सबकी आत्मा हैं। वह मेरी आत्मा हैं। वे स्वयं मैं ही हूं। लेकिन यह अनुभव बहुत साधना के बाद और गुरु कृपा से ही हो सकता है।

दूसरा स्वरूप स्थूल स्वरूप यानी देह स्वरूप है। यह स्वरूप सांझे की वस्तु है। कभी उत्तर वाले जिज्ञासुओं के पास है, कभी दक्षिण, कभी पूरब और कभी पश्चिम वालों के पास। यह स्वरूप कभी-कभी नसीब होता है।

गुरुदेव का एक तीसरा स्वरूप भी है। इस स्वरूप में गुरुदेव हर समय जिज्ञासु के पास रह सकते हैं और हर हाल में कल्याणकारी हैं। लेकिन इस स्वरूप में उसी के पास रहते हैं जो इस स्वरूप का आदर करता है। यह स्वरूप गुरुदेव की वाणी है और इसका आदर यह है कि इसको सुना जाये, याद रक्खा जाये, इसका मनन किया जाये और ज़िन्दगी को इसमें ढाला जाये।

जब हम किसी विज्ञान, भूगोल या इतिहास का व्याख्यान सुनने जाते हैं तो कापी-पैंसिल साथ लेकर जाते हैं और जो कुछ अध्यापक बोलता है, उसको संक्षेप रूप से लिखते रहते हैं और घर आकर उनको याद करते हैं, परन्तु गुरु वाणी सुनने के लिए कभी काग़ज़ पैंसिल लेकर नहीं जाते। कारण यह है कि उन वस्तुओं की तो परीक्षा देनी पड़ती है, परन्तु हम यह समझते हैं कि आत्म ज्ञान की कोई परीक्षा थोड़े ही देनी है जो संक्षेप रूप से लिखें और याद करें। गुरुदेव पूरी मेहनत और कोशिश से समझाते हैं लेकिन श्रोताओं से अगर दूसरे दिन पूछो तो वाणी तो क्या उसका तात्पर्य भी किसी को याद नहीं होता। यह हमारी बहुत बड़ी भूल है। दूसरी परीक्षाओं के बिना पास किये भी गुज़ारा हो सकता है यानी बाबू न बने तो मेहनत मज़दूरी करके भी गुज़ारा हो जाता है लेकिन आत्म ज्ञान की परीक्षा में पास हुए बग़ैर भवसागर से छुटकारा नहीं है। यह परीक्षा तो पास करनी ही पड़ेगी चाहे इसी जन्म में कर लो चाहे हज़ार जन्मों में कर लो।

दूसरी बात यह है कि आम, सेब, नाशपाती और आंवला आदि फल किसी-किसी ऋतु में मिलते हैं, परन्तु जब हम चाहते हैं कि इनके अभाव

में भी इनका स्वाद लिया जाए तो मुरव्बा बना लेते हैं। उस सूरत में इनका स्वाद तो वही रहता है बल्कि इनका गुण और बढ़ जाता है और वे दवा का लाभ भी करने लगते हैं और हर मौसम में प्रयोग में लाए जा सकते हैं। मैंने गुरु स्वरूप और मातृ स्वरूप स्वामी उमा भारती जी के एक महीने के उपदेश इकट्ठे किए और इनको कविता में ढाल लिया यानी एक तरह से इनका मुरव्बा बना दिया है। इससे इन में यह गुण और बढ़ गया कि वे दस बीस बार पढ़ने से ज़बानी याद हो जाते हैं और जब ज़बानी याद हो जाएं तो उनका मनन होने लगता है और जब मनन होता है तो अन्त:करण उन्हीं का रूप धारण कर लेता है और जब अन्त:करण उनका रूप बन जाता है तो जीवन ही गुरु स्वरूप होने लगता है।

यह मुरव्बा मैं अपने पढ़ने वालों की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूं। अगर यह उनको पसन्द आया और सौदा बिका तो और भी तरह-तरह के मुरव्बे तैयार करके प्रस्तुत करता रहूंगा।

—प्रेमलाल 'शिफ़ा'

ग़ज़ल

नज़र उठाओ, इक ऐसा भी दौर चल जाए ।
बजाए दर्द दिलों में सरूर ढल जाए ।।
शबे फ़िराक़[1] मेरे ज़ब्त[2] से अन्धेरा है ।
इक अश्क आंख में आए चिराग़ जल जाए ।।
ब वक्ते मर्ग[3] तुम आओ ख़ुशी से जां निकले ।
यह आरज़ू भी नहीं है कि मौत टल जाए ।।
ज़रा समझ ले कोई जिस्मो रुह का रिशता ।
हयातो मौत का मफ़हूम[4] ही बदल जाए ।।
तुम्हारी राह में दीवानगी ग़नीमत है ।
माआले इश्क़[5] समझ ले तो दिल दहल जाए ।।
मेरे लिए तो तग़ाफ़ुल ही ठीक है ऐ दोस्त ।
तेरे करम से कहीं आरज़ू मचल जाए ।।
'शिफ़ा' हर एक क़दम है मक़ाम इबरत[6] का ।
रहे वफ़ा में जहां भी कोई सम्भल जाए ।।

---

१. विरह की रात २. सहन करना ३. मृत्यु के समय ४. अर्थ ५. प्रेम का परिणाम ६. शिक्षा

श्री स्वामी उमा भारती जी के उपदेश

[१]

ज़िंदगी तेरे लिए एक सफ़र है बेटे,
जिस्म गाड़ी है तेरी और तू अपनी मंज़िल ।
मुश्किलें पेश जो आए वो हैं मीलों के निशां,
ख़ुद शिनासी है तेरी तेरे सफ़र का हासिल ।।

[२]

और उपदेश दिया गोल सफ़र है तेरा,
इब्तिदा जिससे हुई ख़त्म उसी पर होगा ।
जब जुदा ख़ुद से हुआ तू सफ़र आग़ाज़ हुआ,
ख़ुद से मिल जायेगा तू तो यह सफ़र सर होगा ।।

[३]

और फ़रमाया तेरे पास सफ़र से पहले,
कुछ सफ़ाई भी थी ताक़त भी थी अज़मत भी थी ।
जिस्म के संग से अफ़सोस तू यह भूल गया,
कि तेरे पास कभी इल्म की दौलत भी थी ।।

[४]

और कहा ख़ुद को जो तू जिस्म समझ बैठा है,
क़ब्ल इस जिस्म के बनने के नहीं था क्या तू ।
या तेरे जिस्म को जब फूंक दिया जायेगा,
ख़त्म हो जायेगा तू भी न रहेगा क्या तू ।।

[५]

जिस्म मिलते भी हैं मिल-मिल के बिछड़ जाते हैं,
आत्मा एक ही है, इसमें बिछुड़ना कैसा ।
जिस्म बूढ़ा भी है, बीमार भी है, सड़ जायेगा,
तू अमर आत्मा, तेरे लिये सड़ना कैसा ।।

ग़ज़ल

राज़े हक़ीक़त खोल रही है लुत्फ़े निगाहे नाज़[1] तो देख।
दैरो हरम[2] के मतवाले तू, साक़ी का ऐजाज़[3] तो देख ।।
मय की तमन्ना हो फिर किसको, हाथ से साग़र गिर जाये।
जिस पे पड़ें मख्मूर[4] बना दें, नज़रों का अन्दाज़ तो देख ।।
छाते हैं कमज़ोर पे सब, है दुनिया का दस्तूर यही।
दामो क़फ़स[5] को रोने वाले, अपने परे परवाज़[6] तो देख ।।
राहे वफ़ा दुश्वार है बेशक, नाकामी[7] दस्तूर सही।
हुस्न हुआ है ख़ुद माइल[8], उल्फ़त[9] का हसीं[10] आग़ाज़[11] तो देख ।।
दिल की धड़कन ताल बनी है, तार बने हैं सांसों के।
रुह के नग़मे गाने को है, कितना हसीं यह साज़ तो देख ।।
दूरी का तो वहम है तुझको, दिल से कोई दूर नहीं।
साथ खड़े हैं सुनने वाले, देके ज़रा आवाज़ तो देख ।।
अब तो 'शिफ़ा' की हस्ती क्या है, अक्स है तेरी अज़मत[12] का।
तुझ से तेरा हाल कहा है, कहने का अन्दाज़ तो देख ।।

---

१. प्रीतम की कृपा से भरी नज़र २. मन्दिर और काबा ३. चमत्कार ४. मदमस्त ५. जाल और पिंजरा ६. उड़ने वाले पर ७. असफलता ८. झुका हुआ ९. प्रेम १०. ख़ूबसूरत ११. शुरू होना १२. बड़ाई

[६]

सुन किसी काल में भी नाश नहीं है तेरा,
तू अजर और अमर और तू अविनाशी है।
चूंकि आनन्द ही ख़ुद अपनी सिफ़त है तेरी,
तू इसी वास्ते आनन्द का मुतलाशी है।

[७]

भूल कर अपनी सिफ़त आज मगर तू नादां,
मासिवा में जो तमन्नाए दिली ढूंढता है।
अपनी दौलत से तू ग़ाफ़िल है हिरन की मानिन्द,
भूल कर नाफ़े को जंगल में ख़ुशी ढूंढता है।।

[८]

इसलिए जान ले तू तेरी हक़ीक़त क्या है,
दु:ख नहीं तेरे लिए क्योंकि तू सुख राशि है।
उसकी पहचान भी कर जो तू नहीं है हरगिज़,
मौत से ख़ौफ़ न खा क्योंकि तू अविनाशी है।।

[९]

आरज़ी तौर पे रहने के लिए जिस्म मिला,
इसलिये जान ले तू क्या है हक़ीक़त तेरी।
मौत है तेरे लिए और न पैदाईश है,
शक्ल है तेरी कोई और न सूरत तेरी।।

[१०]

ज़ात भी तेरी नहीं और न वरण है तेरा,
मर्द औरत की भी तख़सीस नहीं है तुझ में।
दु:ख नहीं तेरे लिए और न सुख तेरे लिए,
सिर्फ़ आरामो सुकूं जलवा नशीं है तुझ में।।

ग़ज़ल

आ गये शौक़ के आख़िरी मोड़ पर, राह के पेचोख़म[1] देखते-देखते ।
अब तो मंज़िल पे इक दिन पहुंच जायेंगे, उनके नक्शे क़दम देखते-देखते ।।
उम्र भर हमने की जुस्तजू आपकी, क्या ख़बर थी कि थे आप इतने क़रीं ।
आप दिल में रहे और हम चल दिए, सूए देरो हरम देखते-देखते ।।
क़लबे वहशी[2] तो सजदों का क़ाइल न था,
महवे सजदा[3] है अब इसको क्या हो गया ।
आपकी इक नज़र का हुआ मोजज़ा[4], अपने सर की क़सम देखते-देखते ।।
आप आने को थे और आये नहीं, हाल बीमारे ग़म का बिगड़ता गया ।
कोई सूरत न आई सुकूं की नज़र, थक गए शामे ग़म देखते-देखते ।।
या तो कह दीजिए हमसे तुम ग़ैर हो, वर्ना अपनों से पर्दा कहां है रवा[5] ।
सामने आईए हमको मुद्दत हुई, सूए बाबे करम[6] देखते-देखते ।।
आपको हम न समझे तो समझेंगे क्या, अब ज़रा रौशनी दीजिए क़ल्ब को ।
आज तक उम्र बरबाद की अक्ल की, आगही का भरम देखते-देखते ।।
कोई सच्चा नहीं कोई अच्छा नहीं, कोई अपना नहीं मासिवा आपके ।
आख़िरश इस नतीजे पे पहुंचे हैं हम, सबके क़ौलो क़सम देखते-देखते ।।
साथ देगी न दुनिया बहुत देर तक, चश्म शाहिद[7] है लेकिन हवस हैं वही ।
इसकी हर चीज़ को छोड़ कर चल दिए, रहने[8] अदम देखते-देखते ।।
हम हैं वो पुख़ता कारे जुनूं[9] ऐ 'शिफ़ा' क्या कहेंगी हमें ज़ुल्मतें[10] गर्दिशें[11] ।
हम जवां भी हुए फिर जवानी ढली ज़ुल्फ़ के पेचोख़म देखते-देखते ।।

---

१. मोड़-तोड़ २. जंगली दिल ३. सिर झुकाने में मस्त ४. चमत्कार ५. उचित ६. कृपा द्वार की तरफ़ ७. गवाह ८. परलोक जाने वाले ९. पागलपन में पके हुए १०. अन्धेरे ११. चक्कर

[११]

तूने मंजूर किया जिस्म में रहना कुछ दिन,
और कुछ दिन में इसे तर्क भी करना होगा।
इसलिए जिस्म के रिश्तों से लगन ठीक नहीं,
क्योंकि इन रिशतों से बेलाग गुज़रना होगा ॥

[१२]

जिस्म भी जिस्म है जिस वक्त तक इस में तू है,
तेरे जाते ही इसे फूंक दिया जायेगा।
और फूंकेंगे वही जिनसे है रिश्ता इसका,
कोई इक लम्हे को भी घर में न ठहरायेगा ॥

[१३]

आत्मा एक है इसमें नहीं रिश्ते-नाते,
फिर भला ख़ेशो अक़ारिब ये कहां से आये।
जब अहंकार में शामिल हुए मन चित्त बुद्धि,
तो बना अन्तःकरण उसने ये सब फैलाये ॥

[१४]

और यह अन्तःकरण जैसे कि आईना हो,
हर बुरी और भली शै का असर लेता है।
जैसे हर अक्स को अपनाती है फ़ोटो की पलेट,
इस तरह अन्तःकरण ऐबो हुनर लेता है ॥

[१५]

यह ज़रूरी है कि अच्छी रहे सोहबत तेरी,
ताकि ले अच्छा असर उससे तेरा अन्तःकरण।
सोहबतें बद से बचा और किया कर सत्संग,
क्योंकि क़िस्मत से मिला है यह मनुष्य का जीवन ॥

ग़ज़ल

ज़ौक़े नमूद[1] का तेरा सामां रहेंगे हम ।
हर वार कायनात[2] का अरमां रहेंगे हम ।।
जब आलमे ज़हूर में आयेगी ज़िन्दगी !
बन कर चिराग़े इश्क़ फ़िरोज़ां रहेंगे हम ।।
होगी बग़ैर इश्क़ न तकमीले ज़िन्दगी[3] ।
अफ़साना-ए-हयात[4] का उनवां[5] रहेंगे हम ।।
तख़लीक़े[6] दोस्त में न रहे दर्द की कमी ।
तकमीले ज़ौक़े यार[7] का सामाँ रहेंगे हम ।।
नाकामियां हैं आईना-ए-क़ल्बे कामरां[8] ।
पूरा न हो कभी जो वो अरमां रहेंगे हम ।।
तदबीर बनके आलमे इमकां[9] पे छाएंगे ।
मायूसियों से दस्तो गरीबां[10] रहेंगे हम ।।
होगी हमीं से दीद की तकमील ऐ 'शिफ़ा' ।
फ़ितरत[11] की चश्मे शौक़ पर एहसां रहेंगे हम ।।

१· प्रकट होने का शौक २. प्रकृति ३. जीवन की पूर्णता ४. जीवन कहानी ५. शीर्षक ६. निर्मित ७. मित्र के शौक को पूरा करना ८. सफल हृदय का दर्पण ९. सृष्टि १०. उलझे हुए ११. सृष्टि रचियता

[१६]

जिस्म इन्सां का मिला इससे कोई फ़ैज़ भी पा,
फैज़ वो यह है कि तू अपनी हो पहचान करे।
ख़त्म हो जाए इसी जन्म में मरना जीना,
ख़ुद को पहचान ले इक बार तो जीए न मरे।।

[१७]

यह जो उपदेश को सुनते हैं समझ लें दिल में,
जब यह सुन लेंगे तो इक फ़र्ज़ रहेगा इन पर।
बाद सुनने के अगर इन पे अमल कुछ न किया,
तो हमारा यह बड़ा क़र्ज़ रहेगा इन पर।।

[१८]

क़र्ज़ यह फूल चढ़ाने से नहीं उतरेगा,
ज़र से उतरेगा न खिदमत से अदा यह होगा।
राह जो तुमको दिखाई है जो इस पर न चले,
तो न सुनने से कहीं जुर्म बड़ा यह होगा।।

[१९]

कोई अनजान अगर राह से भटके तो गुरु,
तर्स भी खाते हैं और राह दिखा देते हैं।
जिसको आगाह किया जाता है वो भटके अगर,
उस पे नाराज़ भी होते है, सज़ा देते हैं।।

[२०]

जो बताया है तुझे उस पे अमल करने से,
तेरी बिगड़ी हुई तक़दीर भी बन जायेगी।
पुर सुकूं ज़िन्दगी हो जायेगी दुनिया में तेरी,
आक़िबत की भी तेरी राह निकल आयेगी।।

ग़ज़ल

मुझ पर जो इल्तिफ़ात[1] है उसमें कमी न हो।
ऐ हुस्न देखना कहीं दिल की हंसी न हो।।
वो मेरे बाद मुझको यक़ीनन करेंगे याद।
ऐसा मेरी हयात में शायद कभी न हो।।
यूं तो न तोड़िये दिले ख़ाना ख़राब को।
इसमें भी आपकी कोई दुनिया बसी न हो।।
दौरे हयात में है ग़नीमत तेरा ख्याल।
वर्ना ग़मे हयात से फ़ुरसत कभी न हो।।
ज़र्रों में कायनात के जिसका ज़हूर है।
मैं सोचता हूं दिल में भी पिन्हां वही न हो।।
तय हो रही हैं इश्क़ की दुश्वार मंज़िलें।
उसने हरीमे नाज़[2] से आवाज़ दी न हो।।
उन पर न हो 'शिफ़ा' मेरी दरमान्दगी[3] का बार।
बेहतर तो है यही मेरी चारागरी[4] न हो।।

१. कृपा २. मित्र की चार दिवारी ३. बीमारी ४. इलाज

[२१]

ग्रौर फ़रमाया तलबगार पे सन्त ग्रौर गुरु,
ग्रपनी गुफ़तार से नज़रों से दया करते हैं।
वो ग्रगर हाथ लगा दें तो करम होता है,
पांव छूने से बड़े काम बना करते हैं।।

[२२]

दूर होता नहीं मंदिर में भी दुनिया का ख्याल,
ज़र चढ़ाते हैं यहां ज़र की दुग्रा करते हैं।
मोह-माया में फंसा देते हैं मस्जिद मंदिर,
ग्रौर गुरू मोह से माया से जुदा करते है।।

[२३]

ग्रौर फ़रमाया किसी ने तेरी तहक़ीर जो की,
तू बता किसने तो की किसकी यह तौहीन हुई।
तू ही तू तो है यहां तेरे सिवा कोई नहीं,
ख़ुद को ख़ुद मारे भला कैसी ये तसकीन हुई।।

[२४]

तेरी तहक़ीर करे कोई बुरा तुझ को कहे,
उससे हो जायेगा माईल तू बलन्दी की तरफ़।
उससे होशियार मगर जो हो सना ख़ां तेरा,
कि न ले जाये कहीं वो तुझे पस्ती की तरफ़।।

[२५]

तुझको लाज़िम है तू ग्राज़ाद रहे दोनों से,
तुझको तौक़ीर से क्या ग्रौर तुझे तहक़ीर से क्या।
वो तो ग्राज़ाद नहीं हैं जो बंधा है इनसे,
ज़र की ज़ंजीर से क्या ग्राहनी ज़ंजीर से क्या।।

ग़ज़ल

देखा जो उसने बज़्म में अग़यार[1] की तरह ।
हम रो दिये हैं दीदा-ए-ख़ूंबार[2] की तरह ।।
आंखें खुली हुई हैं तेरे इन्तज़ार में ।
हम मुन्तज़िर हैं नरगिसे बीमार[3] की तरह ।।
अब तो किसी मक़ाम पर रुकना मुहाल है ।
हम चल रहे हैं वक्त की रफ्तार की तरह ।।
इतनी सी शर्त है कि हो युसुफ़ सिफ़त[4] कोई ।
दुनियां बनी है मिस्र के बाज़ार[5] की तरह ।।
माना हमारे बख़्त[6] पर साया है ज़ुल्फ़ का ।
रौशन हमारा दिल है रुख़े यार की तरह ।।
हम हादिसों से हो गए हस्सास[7] इस क़दर ।
हर ग़म हुआ है इश्क़ के आज़ार[8] की तरह ।।
बेमायगी[9] से ज़िन्दगी मरबूत[10] हो गई ।
अब पैरहन[11] है रिश्ता-ए-ज़ुन्नार[12] की तरह ।।
हम शाख़े बारवर[13] नहीं लेकिन कभी-कभी ।
आये हैं काम साया-ए-दीवार[14] की तरह ।।
तहक़ीरे[15] इश्क़ जब हुई पासे ख़ुदी[16] 'शिफ़ा' ।
बढ़ता गया है हुस्न के पिन्दार[17] की तरह ।।

---

१. ग़ैरों २. खून बरसाने वाली आंख ३. नरगिस का फूल जो बीमार आंख की तरह होता है ४. हज़रत यूसुफ़ जो बहुत ख़ूबसूरत थे ५. उनको मिस्र के बाज़ार में नीलाम किया गया था ६. क़िस्मत ७. नरम दिल ८. तकलीफ़, दुःख ९. दरिद्रता १०. क़ायदे में ११. कुरता १२. जनेऊ के धागे १३. फलों से लदी हुई शाख़ १४. दीवार का साया १५. बेइज्जती १६. अहंभाव १७. घमण्ड

[२६]

आत्मा की न कोई शक्ल न सूरत है कोई,
ये बिगड़ती है कभी और न बनती है कभी ।
यह ही भगवान् ने अर्जुन से कहा गीता में,
इनके मरने से न डर रूह न मरती है कभी ।।

[२७]

मौत कुछ और नहीं नाम है तबदीली का,
और तबदीली से ही वक्त बना मौत बनी ।
ख़ुद को तू भूल गया यानि तुझे मौत आई,
भूल यह मौत बनी तेरी अना मौत बनी ।।

[२८]

जिस्म इन्सान का इस वास्ते है तुझ को मिला,
ताकि तू कौन है इस बात की पहचान करे ।
सुख को तू भूलता है जो कि सिफ़त है तेरी,
काश सब छोड़ के तू अपनी ही पहिचान करे ।।

[२९]

मिलने वाली तो हर एक चीज़ बिछड़ जाती है,
जिस्म हो, हुस्न हो, दौलत हो कि इज़्ज़त शोहरत ।
दोस्त एहबाब के औलाद के रिश्ते-नाते,
जिनका आगाज़ है अंजाम है सब का फ़ुरक़त ।।

[३०]

मिलकियत, मरतबा, औलाद से होता है ग़रूर,
और इन्सान में आती है गिरावट इनसे ।
आए पिन्दार तो इन्सान यह सोचे दिल में,
क्या हमेशा ही रहेगी यह सजावट इनसे ।।

ग़ज़ल

मयख़ाना जुदा है मेरा पैमाना जुदा है।
दुनिया से मेरा मशरवे रिन्दाना[1] जुदा है॥
दौलत है वहां और यहां सब्रो क़नाअ्त[2]।
शाहों से मेरी शाने फ़क़ीराना जुदा है॥
गिरने से तो मिलता नहीं साक़ी का सहारा।
ऐ बादाकशो लग़ज़िशे मस्ताना[3] जुदा है॥
मन्नतकशे एहसां[4] नहीं अरबाबे करम[5] का।
सबसे मेरा कशकोले गदायाना[6] जुदा है॥
इफ़रात[7] से पीने को तो रिन्दी नहीं कहते।
पीना हैं जुदा जज़बा-ए-रिन्दाना जुदा है॥
ऐ दोस्त ! जहां आती है आवाज़ हंसी की।
वो बज्मे तरब[8] है मेरा ग़म खाना जुदा है॥
मैं उनका परस्तार[9] हूं यह तो है हक़ीक़त।
एहबाब[10] जो कहते हैं वो अफ़साना जुदा है॥
हां शम्मे शबिस्तां[11] भी जला करती है लेकिन।
उस सोज[12] से सोज़े दिले परवाना जुदा है॥
नाम उनका 'शिफ़ा' लेने को यकजा हुए वर्ना।
ज़ाहिर है कि तसबीह का हर दाना जुदा है॥

---

१. शराब पीने का तरीक़ा २. सन्तोष ३. मस्ती में लड़खड़ाना ४. एहसान में दवा हुआ ५. कृपा करने वाले ३. कमंडल ७. ज्यादती ८. खुशी की सभा ६. पूजने वाला १०. दोस्त ११. रात का दीपक १२. जलन

[३१]

मिलकियत, मरतबा, औलाद ये जब मिलते हैं,
टिक नहीं सकते हैं इक रोज़ बिछड़ जाते हैं।
मिलने वाली तो कोई चीज़ कभी टिकती नहीं,
यह हैं वो फूल जो दो रोज़ में झड़ जाते हैं।।

[३२]

इससे बेहतर है यही छोड़ दे तू ख़ुद इनको,
पेशतर इसके कि ये छोड़ के तुझ को जाएं।
इनके मिलने पे ख़ुशी हो न हो रहने पे ग़रूर,
और कुछ रंज न हो जब ये जुदा हो जाएं।।

[३३]

नेमतें आरज़ी है ये कभी क़ायम तो नहीं,
जिस तरह आती हैं हर एक चली जाती है।
आत्मा आप ही है एक हक़ीक़त ऐसी,
कोई तबदीली कभी जिसमें नहीं आती है।।

[३४]

दुख से बेचैन न हो सुख की कभी चाह न कर,
वस्ल चाहेगा तो फ़ुरक़त भी तुझे होगी नसीब।
आज है मान कल अपमान भी हो सकता है,
आज ज़रदार है मुमकिन है कि कल हो तू ग़रीब।।

[३५]

सामने सबके हुआ करता है अपना ही मफ़ाद,
कोई तो सुख के लिए है कोई शोहरत के लिए।
और वाबस्ता कोई ज़र के लिए है वरना,
कोई नादां भी न आए तेरी ख़िदमत के लिए।।

ग़ज़ल

तसव्वुर[1] में वो जब से रूबरू है।
कोई अरमां न कोई आरज़ू है॥
मुहब्बत में तलब[2] को ख़त्म कर दो।
मुहब्बत की इसी में आबरू है॥
मज़ा देने लगा जब चाक[3] दिल का।
निगाहे नाज़ को फ़िक्रे रफ़ू है॥
वहां पहुंची तसव्वुर की बलन्दी।
जहां गुफ्तार उनसे दूबदू है॥
उन्हें पाने में इतने खो गए हम।
कि अब अपनी ही हमको जुस्तजू है॥
न दुश्मन है न कोई दोस्त अपना।
बस अपना नफ्स[4] ही अपना अदू है॥
समझते है हमीं साक़ी का ईमा[5]।
हमीं से मैकदे की आबरू है॥
हमारी मैकशी का तज़किरा[6] ही।
हदीसे बादा-ओ-जामो सुबू[7] है॥
'शिफ़ा' मैराजे उलफ़त[8] इसको कहिए।
अगर उनको तुम्हारी जुस्तजू है॥

१. ख्याल २. मांग ३. ज़ख्म ४. अहंकार ५. ईशारा ६. वर्णन ७. सुराही और प्याले का वर्णन ८. मुहब्बत की बलन्दी.

[३६]

वेनियाज़ाना गुज़र ज़ीस्त में हर सोह्बत से,
जो मिला है वो किसी वक्त बिछड़ जाता है।
तू तो है आतमा और सुख है फ़क़त तेरा सरूप,
जिस्म के संग से तू दीन नज़र आता है॥

[३७]

जिस्म से होके अलग अपनी हक़ीक़त को समझ,
सोच उस वक्त को जब इससे बिछड़ना होगा।
काम जो करने का है आज ही करले वरना,
किसको मालूम है कल आई तो कल क्या होगा॥

[३८]

तू तो देख उसको जो है देखने वाला तुझ में,
जो नहीं देखता है उसको तू क्या देखता है।
आतमा देखने वाली है उसी को तू देख,
जिस्म बेनूर है क्या इसमें भला देखता है॥

[३९]

बाद मरने के तेरे जिस्म को जलना होगा,
जीते जी तू ही मगर आप जला करता है।
जो जलाएगी तेरे जिस्म को वो तो है चिता,
तुझको जीते जी जलाती है जो वो चिन्ता है॥

[४०]

सबसे मिल जुल के रहे हो न किसी से भी लगाव,
यह न होगा तो बिछड़ने पे न रोना होगा।
तू तो बेलाग रह दुनिया की हर एक नेमत से,
कुछ न पाएगा तो फिर कुछ भी न खोना होगा॥

ग़ज़ल

जहां रिवाज हो आंखों से मय पिलाने का।
हमें बता दो पता उस शराब ख़ाने का।।
हरीमे दोस्त[१] भी आ जाएगी यहीं खिचकर।
कि हमने अहद किया है कहीं न जाने का।।
सिवाय उनके सुनी सबने दास्तां मेरी।
कभी रहे थे जो उन्वां मेरे फ़साने का।।
बहुत क़रीब से देखी है फ़ितरते दुनिया।
हमारा दिल है मिज़ाज आशना ज़माने का।।
घनेरी ज़ुल्फ़ का साया वो मदभरी आंखें।
समां सा हो गया पैदा शराब ख़ाने का।।
तेरा यह अहदे वफ़ा तो नहीं फरेब ऐ दोस्त।
फ़रेब हो तो मज़ा है फ़रेब खाने का।।
'शिफ़ा' वहीं पे झुकीं रिफ़अतें[२] ज़माने की।
जहां भी क़स्द[३] किया हमने सर झुकाने का।।

---

१. मित्र की चार दीवारी २. ऊंचाईयां ३. इरादा

[४१]

देख ले एक हैं सब रूह के रिश्ते से तेरे,
सब के सब तेरे हैं और तू भी इन्हीं सब का है।
प्यार में लेना न हो देना ही देना हो फ़क़त,
दुख नही होता है उस प्यार में सुख होता है ।।

[४२]

जिस्म इन्सान का अनमोल मिला है तुझको,
इसको इक रोज़ मगर छोड़ के जाना होगा।
इससे तू ढूंढ उसे जिसको गंवा बैठा है,
वरना कुछ काम यहां का न वहां का होगा ।।

[४३]

जिस्म इन्सां का नहीं जिनको मिला उनको तो,
खोज की अक्ल न किरदार की आज़ादी है।
लेकिन इन्सां को मिली अक्ल भी आज़ादी भी,
वो नहीं ढूंढे हक़ीकत को तो बरबादी है ।।

[४४]

घर से मन्दिर की तरफ़ तू जो रवाना होगा,
तो तुझे घर की तरफ़ पीठ ही करनी होगी।
अज़्मे मोहकम से निकल आयेगा तू दलदल से,
वरना दुशवार तेरी राह बहुत ही होगी ।।

[४५]

राह में सामने आएंगे मुख़ालिफ़ हालात,
नफ्श भी रोकेगा रोकेंगे तुझे हिर्सो हवा !
रख के मंज़िल पे नज़र और इरादा मज़बूत,
बेनियाज़ाना गुज़र इनकी न कर कुछ परवा ।।

ग़ज़ल

सदा वहदत की जब उट्ठी पयामे आगही[1] लेकर ।
ख़ुदा वाले निकल आये बुताने आज़री[2] लेकर ।।
जिसे गुम कर दिया था मैंने असबाबे ख़ुदी[3] लेकर ।
उसे अब ढूंढता फिरता हूं शम्मे ज़िन्दगी[4] लेकर ।।
अगर जाना पड़ा दुनिया से हसरत दीद की लेकर ।
तो मैंने फ़ैज़ क्या पाया नज़र की रौशनी लेकर ।।
जहां मायूसियां थीं, मौत का डर था, अजीयत[5] थी ।
मैं उन राहों से गुज़रा हूं नवेदे ज़िन्दगी[6] लेकर ।।
ख़िरद[7] तो मुझको लाई थी ख़िरदमंदों की महफ़िल तक ।
चली है कूए जानां की तरफ़ दीवानगी लेकर ।।
मोहब्बत तो हमारी अब परस्शि है इबादत है ।
जला कर रख दिया है नफ्स[8] सोज़े आशिक़ी[9] लेकर ।।
बहुत तारीकियां हैं गुमरही की ज़िन्दगानी में ।
हमारे दिल में आ जाओ नशाते आगही[10] लेकर ।।
बदल लें हम रविश अपनी उसी के हो के रह जायें ।
कोई आए तो चश्मे यार की दरया दिली लेकर ।।
'शिफ़ा' छलका दिये हैं जाम सारे बादा ख्वारों[11] के ।
निगाहे नाज़ जब उट्ठी है इज़ने[12] मयकशी लेकर ।।

---

१. ज्ञान का सन्देश २. हज़रते आज़र के बनाये हुए ख़ूबसूरत बुत ३. अहंभाव ४. ज़िन्दगी का दीया ५. तकलीफ़ ६. जीवन की प्रसन्नता लेकर ७. बुद्धि ८. अहंकार ९. प्यार की जलन १०. ज्ञान की ख़ुशी ११. शराब पीने वालों के १२. शराब पीने का हुक्म

[४६]

खौलते पानी को चूल्हे से हटा देने से,
सर्द हो जाएगा, ठंडक ही तो है उसका मिज़ाज ।
इस तरह ख़ुद को तमन्नाओं की शिद्दत से हटा,
पुर सुकूं होगा तू क्यों के है सुकूं तेरा मिज़ाज ।।

[४७]

तुझ को संसार में रहना है तो इस तरह से रह,
जिस तरह राज में सम्राट रहा करते हैं ।
ज्ञान है आत्मा का तुझ को तो सम्राट है तू,
मोह में फंस के तो कंगाल जिया करते हैं ।।

[४८]

ख़ुद शिनासी के लिए ज़ीस्त मिली है तुझ को,
पहले इस ज़िन्दगी से अपनी ही पहचान तू कर ।
और उस रौशनी को औरों में फिर फैला कर,
अपने कल्याण के बाद औरों का कल्याण तू कर ।।

[४९]

जिस्म इंसां का मिला तुझ को प्रभु कृपा से,
यह अमानत है मगर इसको तो लौटाना है ।
इससे कल्याण का सामान ही करना है तुझे,
क़ीमती शय को न यूं खेल में खो जाना है ।।

[५०]

तेरे बचपन को लड़कपन ने तेरे खाया है,
और लड़कपन को जवानी ने तेरी खत्म किया ।
खा गया तेरी जवानी को बुढ़ापा तेरा,
यम के दूतों ने बुढ़ापे को तेरे आन लिया ।।

ग़ज़ल

इन दिनों हम पी रहे हैं बादा-ए-इरफ़ाने[1] दोस्त।
अब हमारा नाम है मिनजुमला-ए-ख़ासाने दोस्त[2]॥
मंज़िलें तय हो रही हैं मुश्किलें आसान हैं।
साया अफ़गन[3] है हमारे हाल पर दामानें दोस्त॥
अब मुहब्बत हो गई है ताजदारे[4] ज़िन्दगी।
और हम अब हो गये हैं बन्दा-ए-फ़रमाने दोस्त[5]॥
ख़त्म अब तो हो गए क़िस्से नियाज़ो नाज़ के।
दोस्त है मेहमान दिल में दिल है अब मेहमाने दोस्त॥
इश्क़ में गुज़रे हज़ारों वाक़याती हादसात।
फिर कहीं जाकर हमारा दिल बना शायाने दोस्त[6]॥
मुख़तलिफ़ उन्वां[7] से लिक्खे वाक़याते ज़िन्दगी।
हर ग़ज़ल लेकिन कही है हमने बा उनवाने दोस्त॥
जिनको अंजामे तग़ाफ़ुल[8] का न आता था यक़ीं।
हमने देखे हैं 'शिफ़ा' वो दीदा-ए-हैराने दोस्त[9]॥

---

१. दोस्त की दिव्य शराब २. दोस्त के ख़ास व्यक्तियों में ३. साया डाल रहा है ४. राजा ५. मित्र के हुक्म के ग़ुलाम ६. मित्र के काबिल ७. शीर्षक ८ बेपरवाही करने का परिणाम ९. मित्र की आश्चर्य से भरी आंखें

[५१]

इनमें से एक ने भी तेरा कभी साथ दिया,
कौन सी चीज़ है वो जिसपे तू करता है ग़रूर।
क़ाबिले नाज़ अगर है तो है मुर्शिद के क़दम,
इनपे मिट जा तो हमेशा ही रहेगा मसरूर।'

[५२]

मन तमोगुण की रजोगुण की तरफ़ जाता है,
और माइल ही नहीं होता सतोगुण की तरफ़।
अनगिनत जन्मों से यह साथ रहा है जिनके,
रोकने पर भी चला जाता है यह उनकी तरफ़॥

[५३]

मन को दरकार है अब हक़ की मुसलसल तालीम,
प्यार से इसको कभी मार से समझाना है।
इसके रुजहान पे हर वक्त नज़र रखनी है,
सइये पेहम से इसे राह पे ले आना है॥

[५४]

मन को समझाना है यह जिनकी तरफ़ माइल है,
मालोज़र जाहो हशम हुस्नो जवानी शोहरत।
एक भी चीज़ नहीं इनमें से टिकने वाली,
आरज़ी चीज़ों से किस वास्तें निसबत, रग़बत॥

[५५]

ज़ीस्त की क़ैद से अपने को छुड़ाना है अगर,
ख़त्म करना है अगर, सिलसिला-ए-मरगो हयात।
अज़्मे मोहकम से ख़िरद से हो तलाशे इरफ़ां,
औरमुसलसल हो तोमिल जातीहै इकरोज़ निजात।

ग़ज़ल

इन दिनों हम पी रहे हैं बादा-ए-इरफ़ाने[1] दोस्त ।
अब हमारा नाम है मिनजुमला-ए-ख़ासाने दोस्त[2] ।।
मंज़िलें तय हो रही हैं मुश्किलें आसान हैं ।
साया अफ़गन[3] है हमारे हाल पर दामाने दोस्त ।।
अब मुहब्बत हो गई है ताजदारे[4] ज़िन्दगी ।
और हम अब हो गये हैं बन्दा-ए-फ़रमाने दोस्त[5] ।।
ख़त्म अब तो हो गए क़िस्से नियाज़ो नाज़ के ।
दोस्त है मेहमान दिल में दिल है अब मेहमाने दोस्त ।।
इश्क़ में गुज़रे हज़ारों वाक़यातो हादसात ।
फिर कहीं जाकर हमारा दिल बना शायाने दोस्त[6] ।।
मुख़तलिफ़ उन्वां[7] से लिक्खे वाक़याते ज़िन्दगी ।
हर ग़ज़ल लेकिन कही है हमने बा उनवाने दोस्त ।।
जिनको अंजामे तग़ाफ़ुल[8] का न आता था यक़ीं ।
हमने देखे हैं 'शिफ़ा' वो दीदा-ए-हैराने दोस्त[9] ।।

---

१. दोस्त की दिव्य शराब २. दोस्त के ख़ास व्यक्तियों में ३. साया डाल रहा है ४. राजा ५. मित्र के हुक्म के ग़ुलाम ६. मित्र के काबिल ७. शीर्षक ८ वेपरवाही करने का परिणाम ९. मित्र की आश्चर्य से भरी आंखें

[५१]

इनमें से एक ने भी तेरा कभी साथ दिया,
कौन सी चीज़ है वो जिसपे तू करता है ग़रूर।
क़ाबिले नाज़ अगर है तो है मुर्शिद के क़दम,
इनपे मिट जा तो हमेशा ही रहेगा मसरूर।'

[५२]

मन तमोगुण की रजोगुण की तरफ़ जाता है,
और माइल ही नहीं होता सतोगुण की तरफ़।
अनगिनत जन्मों से यह साथ रहा है जिनके,
रोकने पर भी चला जाता है यह उनकी तरफ़॥

[५३]

मन को दरकार है अब हक़ की मुसलसल तालीम,
प्यार से इसको कभी मार से समझाना है।
इसके रुजहान पे हर वक्त नज़र रखनी है,
सइये पेहम से इसे राह पे ले आना है॥

[५४]

मन को समझाना है यह जिनकी तरफ़ माइल है,
मालोज़र जाहो हशम हुस्नो जवानी शोहरत।
एक भी चीज़ नहीं इनमें से टिकने वाली,
आरज़ी चीज़ों से किस वास्ते निसबत, रग़बत॥

[५५]

ज़ीस्त की क़ैद से अपने को छुड़ाना है अगर,
खत्म करना है अगर, सिलसिला-ए-मरगो हयात।
अज़्मे मोहकम से ख़िरद से हो तलाशे इरफ़ां,
औरमुसलसल हो तोमिल जातीहै इकरोज़ निजात।

गजल

ये जज़बा-ए-उलफ़त[1] की तासीर नज़र आई ।
हर नक्श में उनकी ही तस्वीर नज़र आई ।।
ख़ुद पर जो नज़र डाली अपने में उन्हें देखा ।
तस्वीर के पर्दे में तनवीर[2] नजर आई ।।
अब चश्मे तमन्ना को बस आपकी हसरत है ।
दुनिया तो बहर पहलू बे पीर नज़र आई ।।
नाकामिये उलफ़त में तक़दीर भी शामिल थी ।
बाक़ी तो हमें अपनी तक़सीर[3] नज़र आई ।।
इक दिल था शिकस्ता सा अब वो भी नहीं अपना ।
यह अपनी मुहब्बत की जागीर नज़र आई ।।
हम राहे तमन्ना में मजबूर रहे इतने ।
जब पाये तलब उट्ठे जंजीर नज़र आई ।
तदबीर[4] भी क्या करते कुछ भी तो न था बाक़ी ।
जब ख्वाबे मुहब्बत की तावीर नज़र आई ।।
यूं हाथ नहीं फैला गो हम भी सवाली थे ।
कुछ इसमें मुहब्बत की तहक़ीर[5] नज़र आई ।।
क़िस्मत के नविशते[6] का हम जिनसे गिला करते ।
उनकी ही 'शिफ़ा' हमको तहरीर[7] नज़र आई ।।

---

१. प्यार की मनोवृत्ति २. प्रकाश ३. क़सूर ४. उपाय ५. तुच्छता ६. लिखा हुआ ७. हाथ का लिखा हुआ

[५६]

नाव में बैठ के चप्पू तू लगाता है मगर,
नाव लंगर से बंधी हो तो चलेगी कैसे ।
बस इसी तरह जो वाबस्ता है तू दुनिया से,
सूए माबूद तेरी नाव बढ़ेगी कैसे ।।

[५७]

नाव में बैठ के उस पार उतरने वाले,
ध्यान रखते हैं के है मंज़िले मक़सूद किधर ।
जिस तरह नाव का रुख़ रखते हैं मंज़िल की तरफ़,
तुझको भी देखना है तेरा है माबूद किधर ।।

[५८]

कौन मालिक है तेरा पहले तो पहचान यह कर,
और फिर करदे सिपुर्द उसके तू सब कुछ अपना ।
और हर फ़िक्र से फिर करले तू ख़ुद को आज़ाद,
सच्चा मालिक है तेरा देगा न तुझको धोका ।।

[५९]

जीते जी तुझ से अगर कोई वफ़ादार रहा,
तो वो मरकर ही किसी दिन तुझे देगा धोका ।
मुसतक़िल रिश्ता नहीं आलमे फ़ानी में कोई,
कच्चा रिश्ता है जो क्या साथ किसी का देगा ।।

[६०]

अपने अंजामे अमल पर नहो क़ाबू तेरा,
तू है दुनिया में फ़क़त सइये अमल का मुख़तार ।
छोड़ दे फ़िक्र सज़ा और सिले दोनों की,
सूए मंज़िल हो नज़र नेक हो तेरा किरदार ।।

ग़ज़ल

बसा के साक़ी को दिल में दिल को बना लिया है शराब ख़ाना ।
यह है वो बादा कशी[1] का हासिल सरूर है जिसका जावेदाना[2] ।।
हमारे साक़ी की मस्त आंखों से आम है फ़ैज़े आरीफ़ाना[3] ।
भरी हुई है शराबे वहदत खुला हुआ है शराब ख़ाना ।।
न हमको अहले करम ने टोका न हम से अहले हवस ही उलझे ।
यह फ़ैज़ था अपनी बेख़ुदी का कि हम से बच कर चला ज़माना ।।
तुम्हें जो अपने से दूर ढूंढा नज़र से उलझे हज़ार जलवे ।
ज़रा पलट के जो ख़ुद को देखा निगाह को मिल गया ठिकाना ।।
न फ़िक्रे ज़ादे सफ़र[4] है हमको न जुस्तजू-ए-रफ़ीक़े मंज़िल[5] ।
जहां मिलेगा पयाम तेरा वहीं से हो जायेंगे रवाना ।।
अज़ल[6] से मैं तेरी चाह में हूं अगरचे पुरख़ार[7] राह में हूं ।
तेरे करम की पनाह में हूं मेरे मुक़द्दर का क्या ठिकाना ।।
अता-ए-साक़ी का राज़ क्या है करम का ये इम्तियाज़[8] क्या है ।
तफ़क्कुराते जहां[9] दिये हैं मिज़ाज बख़्शा है शायराना ।।
इसे तो आंखों का खेल समझो कभी है दूरी कभी हज़ूरी ।
मगर जो निसबत है उनको दिल से यह दिल का रिश्ता है जावेदाना ।।
'शिफ़ा' जो अश्कों से इब्तिदा की वो दास्तां ख़ूने दिल से लिक्खी ।
जहां से उसने निगाह फेरी वहीं से रंगीं हुआ फ़साना ।।

---

१. शराब पीना २. हमेशा रहने वाली ३. आध्यात्मिक लाभ ४. सफ़र के सामान की चिन्ता ५. मंज़िल के साथी की तलाश ६. आदिकाल ७. कांटों भरा रास्ता ८. अन्तर, विभेद, ९. दुनियां की चिन्ताएं

[६१]

दोनों हाथों में उठा अपने तू इक-इक चप्पू,
एक पहचान का हो दूसरा इसतिग़ना का।
खो के नाशाद न हो पाके कभी शाद न हो,
असर अंदाज़ न हो तुझ पे कोई काम तेरा ॥

[६२]

एक पत्ता भी नहीं हिलता विना उसको रिज़ा,
काम सब होते हैं भगवान की ही मरज़ी से।
और भगवान कभी तुझ से जुदा भी तो नहीं,
दूर होता है कहां अंश भला अंशी से ॥

[६३]

आतमा आतमा है जिस्म से मिलने पर भी,
यानि सुख रूप ही है दुख का कोई काम नहीं।
जिस्म के संग से दुख रूप नज़र आता है,
वो सुखी जिसका कोई रूप नहीं नाम नहीं ॥

[६४]

फ़ानी चीज़ों से कभी प्यार अगर हो तुझ को,
बस तू इतना ही समझ ले, के नहीं इनको क़याम।
तू परेशान न हो इनके बिछड़ने पर भी,
आरज़ी चीज़ पे रंज और ख़ुशी का क्या काम ॥

[६५]

जिस्मे इन्सां यह मिला है तुझे कश्ती की तरह,
पार होना है तुझे काल के भवसागर से।
खोल दे नाव से तू मोह के बंधन सारे,
और मंज़िल का निशां पूछ ले तू रहबर से ॥

ग़ज़ल

मेरे दिले मुशताक़[1] का अरमां[2] है तू अरमां है तू,
मैं ढूंढता हूं जिसको वो जानां[3] है तू जानां है तू।
मैं दर्द हूं अब सरबसर[4] क्यों हंस दिया ज़ख़्मे जिगर,
शायद मेरा ग़म देख कर ख़न्दां[5] है तू ख़न्दां है तू।
होती हैं जितनी मयकशी[6] बढ़ती है उतनी तशनगी[7],
अब तो सुकूने क़ल्ब[8] का सामां है तू सामां है तू।
पर्दे नज़र के हट गये जलवे[9] हैं गूनागूं[10] तेरे,
हर दम नज़र के सामने रक़्सां[11] है तू रक़्सां है तू।
देखे हज़ारों बुतकदे[12] छाने हैं लाखों मय कदे[13],
हैं सब वहां बन्दे तेरे यज़दां[14] है तू यज़दां है तू।
डर था गुनाहों का मुझे रहमत[15] का पहलू देखिए,
बोले कि तू भी क्या करे इन्सां है तू इन्सां है तू।
मैंने कहा कुछ ऐश के सामां नहीं मुझको मिले,
बोले, हैं सब तेरे लिए नादां है तू नादां है तू।
देखा जो डर से कांपते बोले कि हम सदक़े तेरे,
होकर हमारा किस लिए लरज़ां[16] है तू लरज़ां है तू।
तू दर्द देकर चल दिया फिरता हूं तुझको ढूंढता,
बहरे[17] 'शिफ़ा' इस दर्द का दरमां है तू दरमां[18] है तू।

---

१. शौक़ीन २. चाह ३. प्रीतम ४. नख से शिख तक ५. हंसने वाला ६. शराब पीना ७. प्यास ८. दिल का आराम ९. दर्शन १०. तरह-तरह के ११. नाचता हुआ. १२. मन्दिर १३. शराबखाने १४. भगवान १५. कृपा १६. कांपता हुआ १७. शिफ़ा (आराम के वास्ते) १८. इलाज

[६६]

ग्रौर इस नाव का रुख़ फेर ले मंज़िल की तरफ़,
ज्ञान वैराग्य के तू हाथ में चप्पू ले ले ।
नाव की चाल पे हर वक़्त नज़र रख ग्रपनी,
इस तरह नाव का मंज़िल के क़रीं तू ले ले ।।

[६७]

ग्रपने माबूद के कदमों में तुझे जाना है,
मोह की लहरें तुझे राह से खो सकती हैं ।
इन्द्रियां तेरी तेरी राह में हाइल होकर,
बीच मंझदार में कशती को डबो सकती हैं ।।

[६८]

काम ले इससे तू ग्रनमोल है जीवन तेरा,
रोग में, भोग में, कुछ सोग में बांटा इसको ।
जो बचा नींद की ग्राग़ोश में वो सर्फ़ किया,
योग की चीज़ थी क्या तूने बनाया इसको ।।

[६९]

ग्रालमे ख्वाब में है कौन किसी का साथी,
किसको होता है किसी ग्रौर का होश ग्रपने सिवा ।
होश ग्रपना भी हक़ीक़त में नहीं होता है,
इसका मतलब यह हुग्रा ख़ुद भी नहीं है ग्रपना ।।

[७०]

काम इन इन्द्रियों के ख़ुद के तेरे काम नहीं,
तन के रिशतों से ग्रलग ग्रौर है तू तन से ग्रलग ।
रह के इन सब में है तू देखने वाला इनका,
तन की हर शय से ग्रलग नीज़ है तू मन से ग्रलग ।।

ग़ज़ल

कहां होंगे नक़ूशे मासिवा[1] जब हम नहीं होंगे ।
फ़क़त रह जाएगी ज़ाते ख़ुदा जब हम नहीं होंगे ।।
तुम्हीं में जज़्ब हो जायेंगे हम तुम से हुए पैदा ।
तुम्हीं होगे यहां जलवा नुमा जब हम नहीं होंगे ।।
यहां तो मौत का बाइस है ऐहसासे मनोमाई[2] ।
ज़माने में किसे होगी फ़ना जब हम नहीं होंगे ।।
हदीसे तालिबो मतलूब[3] ऐहसासे दुई तक है ।
तुम्हीं होगे ख़ुद अपना मुद्दआ जब हम नहीं होंगे ।।
हमारी ज़ात तक महदूद[4] है यह फ़ासला बाहम ।
रहोगे किस तरह हमसे जुदा जब हम नहीं होंगे ।।
तुम्हारे सामने बनकर सवाली कौन आएगा ।
न उठ्ठेगा कोई दस्ते दुआ जब हम नहीं होंगे ।।
खुदाई-ओ-खुदावन्दी[5] हमारी बन्दगी से है ।
कहेगा कौन फिर तुमको ख़ुदा जब हम नहीं होंगे ।।
हमारे बाद किसको नाज़ होगा जुर्मे उल्फ़त[6] पर ।
किसे दोगे मुहब्बत की सज़ा जब हम नहीं होंगे ।।
'शिफ़ा' हम से इबारत है जहां में ज़ौक़ सजदों का ।
किसे होगी तलाशे नक़्शे पा जब हम नहीं होंगे ।।

---

१. द्वैत के चिन्ह २. मैं मेरी की अनुभूति ३. मांगने वाला और जिसे मांगा जाये उसकी कहानी ४. सीमित ५. मालिक होना ६. प्रेम का अपराध

[७१]

नेको बद चीज़ की पहचान को कहते हैं विवेक,
सामने तेरे मिठाई जो कोई आती है।
दूध से चून से चीनी से बनी है बेशक,
इसकी जड़ मिट्टी ही है और यह ख़ुद मिट्टी है॥

[७२]

दूध से खोया बना दूध मवेशी से मिला,
वो बना घास से और घास बनी मिट्टी से।
गेहूं मिट्टी से बना उससे बनी है मैदा,
ईख से खांड बनी, ईख हुई मिट्टी से॥

[७३]

और अंजाम अगर देखना चाहे इनका,
रंगो बू शक्लो शबाहत जो मिठाई के हैं।
जिस्म का क़ुर्ब मिलेगा तो बिगड़ जाएंगे,
इनमें आ जाएंगे औसाफ़ जो मिट्टी के हैं॥

[७४]

ज़ायक़ा एक दो लमहों का है सुख का एहसास,
मिस्ल मिट्टी के है जो चीज़ हलक़ से उतरी।
खट्टी मीठी या सिलोनी यह ज़बां तक ही है,
दरम्यां हो न ज़बाँ तो ये सभी हैं मिट्टी॥

[७५]

इसलिए इतना समझ ले के ये सब मिट्टी हैं,
दूध घी हो या दही फल या मिठाई चीनी।
वो भी मिट्टी ही है जो खाती है इन चीज़ों को,
यानी मिट्टी से बनी चीज़ है खाती मिट्टी॥

ग़ज़ल

हसरतों का मा़आल[1] क्या होगा,
वो न आए तो हाल क्या होगा।
जिनके परतौ से है हसीं हर शय,
उनका हुस्नो जमाल[2] क्या होगा।
क्यों उन्हीं को न मांग लूं उनसे,
इससे बेहतर सवाल क्या होगा।
रास आई न ज़िन्दगी जिसको,
उसको मरना मुहाल[3] क्या होगा।
हम कोई साहिबे कमाल नहीं,
हमको ख़ौफ़े ज़वाल क्या होगा।
जब उन्हें दिल ही नज़र कर देंगे,
दर्द का ऐहतमाल[4] क्या होगा।
ऐ 'शिफ़ा' मिट गई दुई जिस दिन,
हमको शौक़े विसाल क्या होगा।

---

१. परिणाम २. सुन्दरता ३. मुश्किल ४. सम्भावना

[७६]

मन किया करता है इस आरज़ी सुख को हो तलाश,
राह अब इसको दिखानी है कराना है विवेक।
इन्द्रियां तेरी हैं ये दुख की दुकानें सारी,
मन ख़रीदार है ले लेता है दुख दर्द अनेक॥

[७७]

इन्द्रियां साथ नहीं देंगी हमेशा तेरा,
वक्त के साथ ये कमज़ोर भी हो जाती हैं।
छोड़ के साथ बुढ़ापे में ये आख़िर तेरा,
याद कर कर के गए दौर को तड़पाती हैं॥

[७८]

इसलिए जिस्म जो इंसां का मिला है तुझको,
काम ले इससे हरिनाम का सुमरन कर ले।
इस से हो जाएगी फिर अपनी भी तुझको पहचान,
जानकर ख़ुद को सफल अपना तू जीवन कर ले॥

[७९]

संस्कारों से तेरा अन्तःकरण छलनी है,
इसके हर पहलू में सूराख़ हैं सुख के दुख के।
आने जाने के कहीं मरने बिछड़ने के कहीं,
अमृत उपदेश का किस तरह से इसमें ठहरे॥

[८०]

बन्द हो जायें किसी तौर ये सूराख़ अगर,
इसमें जलवा वह तुझे ख़ुद का नज़र आयेगा।
जन्म भी जिसका नहीं और नहीं मौत जिसे,
पुर सुकूं अपनी हक़ीक़त को यहीं पायेगा॥

ग़ज़ल

नज़दीक जिसे कहिए, या दूर जिसे कहिए,
दिल ही में निहां[1] है वो, मस्तूर[2] जिसे कहिए।
वो आपकी चाहत थी, मक़दूर[3] जिसे कहिए,
मैं आप का बन्दा हूं, मजबूर जिसे कहिए।
वो ज़ात तुम्हारी है, मक़बूल[4] कहें जिसको,
वो नाम तुम्हारा है, मशहूर जिसे कहिए।
तुमने ही पिलाई थी, आंखों से मये उल्फ़त[5],
तुमने ही बनाया है, मख़मूर[6] जिसे कहिए।
रिन्दी के उसूलों की, तफ़सील नहीं कोई,
साक़ी का इशारा है, दस्तूर जिसे कहिए।
असरार के वाक़िफ़[7] पर, है फ़र्ज़ ज़बां बन्दी[8],
वो दार को पहुंचा है, मन्सूर[9] जिसे कहिए।
इक दर्द जो था दिल में, निसबत थी जिसे तुमसे,
उस दर्द का हासिल है, नासूर जिसे कहिए।
मामूरे इताअत को, वो दस्ते 'शिफ़ा' बख़्शें,
ऐसा न रहे कोई, रंजूर[10] जिसे कहिए।

---

१. छुपा हुआ २. छुपा हुआ ३. तक़दीर में लिखा हुआ ४, स्वीकृत, मान्य ५. प्यार की शराब ६. मदमस्त ७. भेद का जानने वाला ८. चुप रहना ९. हज़रत मंसूर जिन्हें आत्म बोध हो गया था १०: बीमार

[८१]

ये सब आज़ार ये दुख दर्द नहीं हैं तेरे,
तू ने अपनाया हुआ है यहां औरों का मक़ाम ।
उनके दुख दर्द को तू अपना समझ बैठा है,
वरना सुख रूप है तू तुझको दुखों से क्या काम ।।

[८२]

यानी दुख दर्द सभी जिस्म से वावस्ता हैं,
देखकर जान ले तू जिस्म का आग़ाज़ अंजाम ।
और फिर जान ले तू ख़ुद को अलेहदा इनसे,
फिर न रोने से न हंसने से रहेगा कुछ काम ।।

[८३]

काम यह अन्तःकरण करता है बेदारी में,
आलमे ख़्वाब में भी काम किया करता है ।
नींद जो गहरी ही कहते है सुषुप्ती जिसको,
बे असर अन्तःकरण उसमें रहा करता है ।।

[८४]

देखना यह है के वेदान्त सिखाता क्या है,
जीव को जीव से यह ब्रह्म बना देता है ।
पूजता एक है और एक है पूजा जाता,
और यह दोनों की तफ़रीक़ मिटा देता है ।।

[८५]

जिस तरह है न अलग फूल से रंगत उसकी,
या घटाकाश मठाकाश पे जब ग़ौर करो ।
जिस तरह इन से अलेहदा महा आकाश नहीं,
जीव और ब्रह्म का चिन्तन भी उसी तौर करो ।।

ग़ज़ल

बूए गुल[1] बनके रहे बादे सबा[2] बनके रहे।
हम गुलिस्तां में अनादिल की सदा[3] बनके रहे॥
हर क़दम दौरे जुनूं[4] में तो पुकारा उनको।
अर्सा-ए-होश[5] में हम उनकी रिज़ा[6] बनके रहे॥
उनको माबूद[7] मुहब्बत को इबादत[8] समझा।
वो परस्तारे मुहब्बत[9] के ख़ुदा बन के रहे॥
हमने हर मोड़ पे देखा है उन्हीं की जानिब।
जादा-ए-शौक़ में वो राहनुमा बनके रहे॥
ज़ौक़े पाबोसिये जानां[10] का तक़ाज़ा है यही।
पाये दिलदार[11] पे दिल रंगे हिना[12] बनके रहे॥
हम दरे यार पे सजदे को झुके थे इक बार।
फिर नहीं उट्ठे वहीं नक़्शे वफ़ा बनके रहे॥
अपनी बीमारिये दिल का तो मुदावा न हुवा।
वर्ना औरों के लिए हम भी 'शिफ़ा' बनके रहे॥

---

१. फूलों की खुशबू २. सवेरे की हवा ३. बुलबुलों की आवाज़ ४. पागलपन का ज़माना ५. होश के दिनों में ६. इच्छा ७. पूजनीय ८. पूजा ९. प्रेम पुजारी १०. मित्र के पांव चूमने का शौक़ ११. मित्र का पांव १२. मेंहदी का रंग

[८६]

जीव जो अपनो हक़ीक़त को भुला बैठा है,
फंस के इस जिस्म की दल-दल में परेशान भी है।
उसको वेदान्त बताता है हक़ीक़त उसकी,
के वो आनन्द भी है, सत्य भी है, ज्ञान भी है ।।

[८७]

जीव से ब्रह्म कहीं दूर नहीं, ग़ैर नहीं,
अंश से अंशी कभी दूर नहीं होता है।
एक अज्ञान के परदे से अलग हैं दोनों,
वो जो हट जाए तो फिर योग यहीं होता है ।।

[८८]

जिसको वेदांत कहें इल्म की वो मंज़िल है,
दो नहीं रहते जहां रहता है बस एक ही एक।
द्वेष की आग जला सकती नहीं कुछ भी जहां,
एक मरकज़ पे चले आते हैं जितने हैं अनेक ।।

[८९]

जिस तरह देखे कोई शीश महल में जाकर,
अक्स आयेंगे नज़र अपने हज़ारों लाखों।
आत्मा एक है और द्वैत के शीशे हैं बहुत,
अक्स आते हैं नज़र उसके हज़ारों लाखों ।।

[९०]

क्या हक़ीक़त है तेरी तुझको नज़र आयेगी,
द्वैत के शीशमहल से ज़रा बाहर तो आ।
सूरतें तुझको हज़ारों जो नज़र आती हैं,
फिर नज़र आयेगी सूरत न कोई तेरे सिवा ।।

ग़ज़ल

चश्मे साक़ो से पीयेंगे जामो मीना छोड़ कर,
एक ग़म रह जायेगा, ग़महाय दुनिया छोड़ कर ।
आ गया जो मयकदा काबा कलीसा छोड़ कर,
वो कहां जाये तेरा नक़्शे कफ़े[1] पा छोड़ कर ।
हर हसीं शय में है जब परतौ[2] तुम्हारे हुस्न का,
और क्या देखें तुम्हारा रूए ज़ेबा[3] छोड़ कर ।
रफ़्ता-रफ़्ता उनके ग़म से हो गया मानूस[4] दिल,
लज़्ज़ते ईज़ा[5] बदी फ़िक्रे मुदावा[6] छोड़ कर ।
किस का दामन थाम लें हम छोड़कर दामन तेरा,
कौन क़तरों के लिए जाता है दरिया छोड़ कर ।
हर तमन्ना ख़त्म हो जाती है जिसके फ़ैज़[7] से,
आरज़ू किस की करें उसकी तमन्ना छोड़ कर ।
रह गया है यह शिकस्ता दिल मता-ए[8]-ज़िन्दगी,
और क्या सौदा करें इस दिल का छोड़ कर ।
इनबिसाते दोस्त[9] है अब ज़िन्दगी का मुद्दाआ,
इल्तिजा पर आ गए हैं हम तक़ाज़ा छोड़ कर ।
यह जहाने रंगो बू है जल्वा गाहे हुस्ने दोस्त,
हम यही समझे 'शिफ़ा' अपना पराया छोड़ कर ।

---

१. तलवों के चिह्न २. प्रतिबिंब ३. सुन्दर मुखड़ा ४. हिला हुआ ५. दुख का मज़ा ६. इलाज की फ़िक्र ७. कृपा ८. ज़िन्दगी की पूंजी ९. मित्र की प्रसन्नता

[९१]

अब हक़ीक़त में अगर एक ही है दो भी नहीं,
तू ये सोचेगा ये सब खेल रचा किस के लिए।
ये मगर सोचना बेकार है, उसको तू सोच,
सोचना चाहिए दुनिया में तुझे जिसके लिए ।।

[९२]

तेल का दाग़ जो लग जाए तेरे कपड़े पर,
क्यों लगा कैसे लगा दाग़ तू ये सोचेगा।
सोचने से तो मगर दूर नहीं होगा दाग़,
उसकी तदबीर करेगा तो वो मिट जाएगा ।।

[९३]

रचने वाले ने यह प्रपंच रचा है जो भी,
और इस में जो तेरा जन्म हुआ है अपना।
यानि इक दाग़ लगा आवागमन का तुझको,
बस यही दाग़ तुझे ख़ुद से मिटाना होगा ।।

[९४]

दाग़ धोने है तो सत्संग है साबुन तेरा,
और वैराग्य है जल तेरे लिए हाथ विवेक।
श्रद्धा विश्वास से तू काम अगर ले इनसे,
तो इसी जन्म में धुल जायें तेरे दाग़ अनेक ।।

[९५]

पिछले जन्मों में जो बिगड़ी है संवर सकती है,
जन्म यह हाथ में है इसका सहारा ले ले।
खो दिया हाथ में आई हुई नेमत को अगर,
तो न मालूम तुझे काल कहां पर पेले ।।

ग़ज़ल

बसूए दोस्त[1] दीवाने चले हैं,
दिलो जां ले के नज़राने चले हैं।
ग़मे दुनिया-ओ-माफ़ीहा[2] से बचकर,
तुम्हारे रिन्द मयख़ाने चले हैं।
जगह दो दामने रहमत[3] में हमको,
कि हम दुनिया को ठुकराने चले हैं।
ग़मे जानां[4] है जिस क़िस्से का उन्वां,
हम उस क़िस्से को दोहराने चले हैं।
डबोती हैं जो लाकर नज़दे[5] साहिल,
सर उन मौजों से टकराने चले हैं।
करम का वास्ता देकर किसी को,
हम अपनी बात मनवाने चले हैं।
हरम[6] में तो दिले वहशी न बहला,
इसे लेकर सनम ख़ाने[7] चले हैं।
यूंही रक्खे रहे हैं जामो मीना,
जहां आंखों के पैमाने चले हैं।
क़दम उठ्ठे हैं सूए कूए जानां[8],
शिफ़ा अब हम शिफ़ाख़ाने चले हैं।

---

१. मित्र की तरफ़ २. लोक परलोक का ग़म ३. कृपा का पल्ला ४. मित्र का दुःख ५. किनारे के पास ६. काबा ७. मन्दिर ८. मित्र की गली की तरफ़

[९६]

सामने आते है हालात बुरे और भले,
इनका लेते हैं असर जिस्म से है जिनकी लगन।
और जो मानते हैं जिस्म से ऊंचा ख़ुद को,
उनको रंजीदा नहीं करते हैं ये रंजो महन ॥

[९७]

पेट भर कर कभी मिलता है तुझे खाने को,
और फ़ाक़ों का कभी दौर हुआ करता है।
मिलते हैं पहनने को अतलसो कमख़ाव कभी,
गाहे लंगोट भी मुश्किल से मिला करता है ॥

[९८]

है मिठाई की तरह भूख में सूखी रोटी,
प्यास में पानी भी शरवत का मज़ा देता है।
लुत्फ़ देता है थकावट में ज़मीं पर सोना,
दिल से कमख़ाब के गद्दों को भुला देता है ॥

[९९]

आज जो चीज़ मिली कल को वो जा सकती है,
आज है मान कल अपमान भी हो सकता है।
इसलिए छोड़ दे इन आरज़ी चीज़ों से लगाव,
क्योंकि यह मोह तुझे दुःख में समो सकता है ॥

ग़ज़ल

औज पर कुछ तो हमारा ज़ौक़े रिन्दाना[1] भी है,
और कुछ हम पर अता-ए-पीरे मयख़ाना[2] भी है।
है तवज्जो पर तुम्हारी मुनहसिर अंजामे ज़ीस्त[3],
ज़िन्दगी वरना हक़ीक़त भी है अफ़साना भी है।
आपकी महफ़िल में वो भी रह न जाए तशनाकाम[4],
आपके रिन्दों में कोई ख़ुद से बेगाना भी है।
यूं तो हो सकता है मुमकिन हर जगह दीदारे दोस्त[5],
इक मक़ामे दीदे जानां दिल का काशाना भी है।
तुम जो आंखों से पिलाओ तो मैं आंखों से पीऊं,
हो अता दिल से तो हाज़िर दिल का पैमाना भी है।
अपनी मंज़िल पर पहुंच बचता हुआ इस राह से,
हर क़दम राहे हवस[6] में दाम[7] भी दाना भी है।
ऐ 'शिफ़ा' हर चीज़ में दुनिया की अपना अक्स देख,
यह जहां एहले नज़र का आइना ख़ाना[8] भी है।

---

१. मस्ती का शौक़ २. शराब ख़ाने के अध्यक्ष की कृपा ३. जीवन ४. प्यासा ५. मित्र के दर्शन ६. कामना की डगर में ७. जाल ८. शीश महल

[१००]

सोच अब यह कि बना है जो जगत का प्रपंच,
और प्रपंच में तू ख़ुद भी गिरफ़्तार है आज।
चाहता है कि निकल जाए तू इस चक्कर से,
तो समझ ले कि है सत्संग ही बस इसका इलाज॥

[१०१]

अपना चेहरा भी अगर देखना चाहे कोई,
आईना रोशनी और आंख की हाजत होगी।
देखना चाहे कोई अपनी हक़ीक़त को अगर,
तीन ही चीज़ों की उसको भी ज़रूरत होगी॥

[१०२]

छोड़कर शहर को जंगल में चला जाए कोई,
दिल मगर उसका पड़ा रहता हो हर वक्त यहीं।
शहर को छोड़ने से फ़ायदा क्या होगा उसे,
शहर बन जाएगा इक उसके तसव्वुर में वहीं॥

Poems of Swami Vivekananda

From Complete Works. Vol. IV 6th Edition

Kali The Mother

The stars are blotted out,
The clouds are covering clouds,
It is darkness vibrant, sonant.
In the roaring, whirling wind
Are the souls of a million lunatics
Just loose from the prison house,
Wrenching trees by the roots,
Sweeping all from the path.
The sea has joined the fray,
And swirls up mountain-waves,
To reach the pitchy sky,
The flash of lurid light
Reveals on every side
A thousand, thousand shades
Of Death begrimed and black—
Scattering plagues and sorrows,
Dancing mad with joy.
Come, Mother, come !
For Terror is Thy name,
Death is in Thy breath,
And every shaking step
Destroys a world for e'er.
Thou 'Time,' the All-Destroyer !
Come, O Mother, come !
Who dares misery love,
And hug the form of Death,
Dance in Destruction's dance,
To him the Mother comes.



श्री स्वामी विवेकानन्द जी
मां काली

ग्रासमां तारों से ख़ाली हो गया,
ग्रौर बादल बादलों पर ग्रा गए।
सरसराहट ग्रौर जिनमें गूंज है,
हर तरफ़ ऐसे ग्रंधेरे छा गए।।
शौर करती ग्रौर बल खाती हवा,
देख कर जिसको यह होता है गुमां।
लाखों दीवानों की रूहें जेल से,
ग्रा गई हों छूट के उनके दरमियां।।
जड़ से देती हैं दरख़्तों को उखाड़,
फेंकती हैं दूर उनको वे ग्रमां[1]।
फिर समन्दर इसमें शामिल हो गया,
जिसकी लहरें छू रही हैं ग्रासमां।।
रौशनी का इक भभूका सा हुग्रा,
हो ग़ईं ग्रतराफ़[2] सब उससे ग्रयां[3]।
फिर नज़र ग्राए हज़ारों धुंधलके,
मौत के साये हैं जो संगीनो तार[4]।।

ग़ज़ल

वना कर देखने वाले मिटा कर देखने वाले,
तमाशा क्या है यह दुनिया बनाकर देखने वाले।
अभी कुछ और बढ़ने दे हमारा ज़ौक़े नज़्ज़ारा[1],
ज़रा पर्दे में रह परदा उठाकर देखने वाले।
मेरी आंखों में तासीरे मुहब्बत के सिवा क्या है,
तकल्लुफ़ क्या है यूं नज़रें बचा कर देखने वाले।
हमारी जां निसारो हर क़दम पर याद आयेगी,
भुला कर देख लें हमको भुला कर देखने वाले।
तुम्हीं को देखना है मुद्दाआ-ए-ज़िन्दगी मेरा,
तुम्ही हो मेरी आंखों में समाकर देखने वाले।
मुझे दारो रसन[2] की राह से होकर गुज़रना है,
फ़रेबे हुस्न[3] है यह मुस्कुरा कर देखने वाले।
रहे इश्क़ो वफ़ा में हमने हस्ती को मिटा डाला,
बहुत हैरां हैं हम को आज़मा कर देखने वाले।
किया करते हैं पैमाने हमारे ज़ौक़ के चर्चे,
यही कहते हैं मयख़ाने में जाकर देखने वाले।
उन्हीं को है 'शिफ़ा' मालूम हाले दर्द दिल मेरा,
जो हैं तन्हाईयों में मुझको आकर देखने वाले।

---

१. देखने का शौक २. सूली, फांसी ३. सुन्दरता का धोका

श्रौर फैलाते हुए रंजो वबा[५],
नाचते हैं शादमां[६] दीवाना वार ॥

श्राश्रो मां श्रा जाश्रो मां श्रा जाश्रो मां,
क्योंकि दहशत है तुम्हारा एक नाम ।

मौत रहती है तुम्हारे सांस में,
श्रौर थर्राता हुश्रा हर एक़ गाम ॥

ख़त्म करता है हमेशा के लिए,
यह हयाते श्रारज़ी का इक जहां ।

वक़्त हो तुम श्रौर मुजस्सम हो फ़ना,
श्राश्रो मां, श्रा जाश्रो मां, श्रा जाश्रो मां ॥

जो मुसीवत को भी कर सकता हो प्यार ।
हो सके जो मौत से भी हमकनार[८] ।

कर सके जो रक़्से बरबादी का रक़्स ।
उस का मां मिलती है होकर बेक़रार ॥

---

१. असहाय २. दिशाएं ३. प्रगट ४. भयंकर अन्धेरी ५. संक्रामक रोग
६. प्रसन्न ७. क्षणभंगुर जीवन ८. लिपटना

Angels Unawares

One bending low with load-of life
That meant no joy, but suffering harsh and hard—
And wending on his way through dark and dismal paths
Without a flash of light from brain or heart
To give a moment's cheer, till the line
That marks out pain from pleasure, death from life
And good from what is evil, was well-nigh wiped from sight,
Saw, one blessed night, a faint but beautiful ray of light
Descend to him. He knew not what or wherefrom,
But called it GOD and worshipped.
Hope, an utter stranger, came to him. and spread
Through all his parts, and life to him meant more
Than he could ever dream, and covered all he knew,
Nay, peeped beyond his world. The sages
Winked. and smiled, and called it "superstition".
But he did feel its power and peace
And gently answered back—

"O Blessed Superstition"

बातिन के फ़रिश्ते

[I]

बोझ से मग़लूब[1] था एक आदमी ।
ज़िन्दगी जिसको थी बारे ज़िन्दगी[2] ।।
नाम को जिस में न थी कोई ख़ुशी ।
बस मुसीबत ही मुसीबत थी भरी ।।
एक ऐसी राह पर था वो रवां[3] ।
जिसपे थीं तारीकियां मायूसियां ।।
बुझ चुका था उसके दिल का भी चिराग़ ।
नूर से महरूम था उसका दिमाग़ ।।
एक लमहा भी ख़ुशी हासिल न थी ।
और हिस[4] एहसास की थी मिट गई ।।
ऐशो ग़म का फ़र्क़ ही जाता रहा ।
कुछ न था एहसास मर्गोज़ीस्त[5] का ।।
और अच्छे से बुरे का इमतियाज़[6] ।
उसकी नज़रों में नहीं था कारसाज़[7] ।।
उसके दिल में एक शब वारिद[8] हुई ।
एक हल्की ख़ूबसूरत रौशनी ।।
क्या थी वो उसको न था कोई पता ।
उसके मरकज़ से भी था नाआशना[9] ।।
नाम उसने रख लिया उसका ख़ुदा ।
और ख़ुद उसका पुजारी बन गया ।।
जिससे वो नाआशना था वो उमीद ।
आई उसकी ज़िन्दगी में बन के ईद ।।
जिस्म के हर उज़्व[10] पर वो छा गई ।

ग़ज़ल

दिल में जलवानुमा[1] हुआ कोई,
दर्दे दिल की दवा हुआ कोई।
हिल गया आज आस्ताना-ए-नाज़[2],
हम से सजदा अदा हुआ कोई।
दाग़ सीने के मुस्कुराये हैं,
मुज़दा-ए-जांफ़ज़ा[3] हुआ कोई।
दिल पे तुमने निशान देखा है,
दाग़ है यह धुला हुआ कोई।
ख़ाक लिपटी है पाये जानां[4] से,
दिल है शायद पिसा हुआ कोई।
चश्मे फ़ितरत[5] में आ गए आंसू,
दर्द से आशना[6] हुआ कोई।
यह हमारी भी ज़िन्दगी क्या है,
क़ाफ़िला है लुटा हुआ कोई।
फिर हुआ हमको शौक़ सजदों का,
फिर हमारा ख़ुदा हुआ कोई।
मुस्तक़िल हो गया ग़मे जानां,
बेनियाज़[7] 'शिफ़ा' हुआ कोई।

---

१. दर्शन देने वाला २. मित्र की चौखट ३. दिल को चैन देने वाली ख़ुश ख़बरी ४. मित्र के पैर ५. प्रकृति की आंख ६. दर्द से सम्बन्धित ७. बिना किसी लगाव के।

उसको राज़ जि़न्दगी समझा गई ।।
ज़िन्दगी में वो नज़र आने लगा ।
जो कभी ख़्वाबों से उसके दूर था ।।
उसने समझा वो जो उसके पास था ।
और तसव्वुर उससे भी आगे गया ।।
पारसा[११] कुछ ख़न्दाज़न[१२] उस पर हुए ।
वह्म उस उम्मीद को कहने लगे ।।
उसके दिल में तो सकूनो अम्न[१३] था ।
बस जवाबन उसने इतना ही कहा ।।
ऐ मुबारिक वह्म तुझको मरहबा[१४] ।

---

१. दबा हुआ २. जीवन का भार ३. चल रहा ४. अनुभूति ५. मृत्यु और जीवन ६. भेद ७. लाभदायक ८. आई ९. अनजान १०. शारीरिक अंग ११. सत्य-वादी १२. हंस्ने लगे १३. सुख शान्ति १४. शाबाश

[[II]]

One drunk with wine of wealth and power
And health to enjoy them both, whirled on
His maddening course, till the earth, he thought,
Was made for him, his pleasure-garden, and man,
The crawling worm, was made to find him sport,
Till the thousand lights of joy, with pleasure fed,
That flickered day and night before his eyes,
With constant change of colours, began to blur
His sight, and cloy his senses; till selfishness,
Like a horny growth, had spread all o'er his heart;
And pleasure meant to him no more than pain.
Bereft of feeling; and life in the sense,
So joyful, precious once, a rotting corpse between his arms,
Which he forsooth would shun, but more he tried, the more
It clung to him; and wished, with frenzied brain,
Athousand forms of death, but quailed before the charm,
Then sorrow came-and Wealth and Power went
And made him kinship find with all the human race
In groans and tears, and though his friends would laugh,
His lips would speak in grateful accents
"O Blessed Misery!"

[II]

एक सेहत की तरफ़ से माला माल ।
दौलतो ताक़त के नश्शे से निढाल ॥
अपने इस राहे जुनु[1] पर था रवां ।
और यह होने लगा उसको गुमां ॥
उसकी ख़ुशियों के लिए थी यह ज़मीं ।
और उस पर रींगने वाले मकीं ॥
सब बने उसकी ख़ुशी के वास्ते ।
सब खिलौने थे उसी के वास्ते ॥
आख़िरश ख़ुशियों की सारी ज़िन्दगी ।
ऐश की लज़्ज़त से जो भरपूर थी ॥
सामने आंखों के उसकी रोज़ो शब[2] ।
मुखतलिफ़[3] रंगों में ज़ाहिर थी वो अब ॥
उसकी बीनाई[4] को चुंधियाने लगी ।
गर्द ऐह्सासात पर छाने लगी ॥
और इतनी उसकी ख़ुदग़र्ज़ी बढ़ी ।
दिल में जो सरतान बनकर छा गई ॥
हर ख़ुशी में अब नुमायाँ दर्द था ।
दिल में अब जज़बा न था एहसास का ॥
पुर मुसर्रत[5] बेशक़ीमत[6] ज़िन्दगी ।
बाज़ुओं में लाश बन कर रह गई ॥
छोड़ सकता था उसे वो बाख़ुशी ।
वो मगर उससे चिमटती ही गई ॥
अब जुनुं में यह तमन्ना थी उसे ।
मौत आ जाये किसी उनवान[7] से ॥

ग़ज़ल

मुहब्बत की है उनसे हमको ग़म खाना भी आता है।
अगर मायूसियां हों दिल को समझाना भी आता है।।
हमारी राह रोकेंगे अगर दैरो हरम वाले।
तो हमको मयकदे की राह से जाना भी आता है।।
न हो गुमराह भी कोई हमारी ख़ाकसारी से।
बगूला बनके गरदूं पर हमें छाना भी आता है।।
दुआ यह हैं नज़र सीधी रहे हम पर तो साक़ी की।
बिठा कर मयकदे में जिसको तरसाना भी आता है।।
उमढ़ आते हैं अश्क उनके हमारी बेक़रारी पर।
तड़पना भी हमें आता है तड़पाना भी आता है।।
ग़मे दुनिया से दिल महफ़ूज़ रखने के लिए हमको।
तसव्वुर की हसीं वादी में खो जाना भी आता है।।
तमन्नाएँ हमारी नक़्श उन पर छोड़ जाती हैं।
कि इन लहरों को चट्टानों से टकराना भी आता है।
नदामत है हमें अपने गुनाहों पर मगर हमको।
पकड़ कर दामने रहमत मचल जाना भी आता है।।
'शिफ़ा' हम वो गुले रंगीं हैं गुलज़ारे मुहब्बत में।
जिन्हें खिलना अगर आता है, मुरझाना भी आता है।।

वो तो इसके सह्र से मजबूर था।
घिर के फिर आया अलम का क़ाफ़िला ।।
दौलतो ताक़त सभी रुख़सत हुए।
रिश्ता-ए-इन्सां लगा वो ढूंढने ।।
चल दिए सब इक़्तिदारो[८] मालो ज़र।
और वो नाला वलब[९] बाचश्मे तर ।।
हो गया मजबूर ता क़ायम करे।
रिश्ता - ए-इन्सानियत इन्सान से ।।
ख़न्दाज़न एहबाव[११] जब उस पर हुए।
शुक्र अदा करने को उसके लब खुले ।।
और उसके मुंह से निकली यह सदा।
मरहबा रंजो मुसीबत मरहबा ।।

---

१. पागलपन की डगर पर २. दिन रात ३. भिन्न भिन्न प्रकार के ४. नज़र ५. ख़ुशी से भरी हुई ६. क़ीमती ७. किसी माध्यम से ८. ताक़त ९. चिल्लाता हुआ १०. रोती हुई आंख ११. दोस्त

III

One born with healthy frame-but not of will
That can resist emotions deep and strong,
Nor impulse throw, surcharged with potent strength-
And just the sort that pass as good and kind,
Beheld that he was safe, whilst others long
And vain did struggle 'gainst the surging waves.
Till, morbid grown, his mind could see. like flies
That seek the putrid part, but what was bad.
Then Fortune smiled on him, and his foot slipped.
That ope'd his eyes for e'er, and made him find
That stones and trees ne'er break the law,
But stones and trees remain; that man alone
Is blest with power to fight and conquer Fate,
Transcending bounds and laws.
From him his passive nature fell, and life appeared
As broad, and new, and broader, newer grew,
Till light ahead began to break, and glimpse of That
Where Peace Eternal dwells—yet one can only reach
By wading through the sea of struggles-courage-
giving, came.
Then looking back on all that made him kin
To stocks and stones, and on to what the world
Had shunned him for, his fall, he blessed the fall,
And, with a joyful heart, declared it—

"Blessed Sin!"

[III]

एक सेहतमन्द तो पैदा हुआ।
अज़्म[1] की ताक़त से वों महरूम[2] था ।।
जज़्बा-ए-एहसास पर क़ाबू न था।
अज़्म मोहकम भी न था तहरीक[3] का ।।
अलग़रज़ ऐसा वो इक इन्सान था।
जिसको कहते हैं शफ़ीक़ो[4] वासफ़ा[5] ।।
वो समझता था कि इन्सां दूसरे।
मुद्दतों लड़ते हैं जो तूफ़ान से ।।
कशमकश सब उनकी थी बेमुद्दआ।
वो मगर साहिल पे था महफ़ूज़[6] था ।।
हो गया बीमार यूं उसका ज़मीर।
मक्खियां जिस तरह होती हैं हक़ीर[7] ।।
जो सड़े हिस्सों की करती हैं तलाश।
उसकी ख़ुद्दारी हुई थी पाश-पाश ।।
फ़िर हुआ उस पर करम तक़दीर का।
यानि उसका पांव फिसला वो गिरा ।।
खुल गईं आंखें हमेशा के लिए।
राज़हाय ज़ीस्त कुछ इफ़शा[8] हुए ।।
फ़र्ज़ है पाबन्दिए क़ानून अगर।
फ़र्ज़ के पाबन्द है संगो-शजर[9]।
वो मगर हैं आख़िरश[10] संगो शजर।
एहलियत[11] ये सिर्फ़ रखता है बशर ।।
ख़ुद बदल सकता है जो तक़दीर को।
तोड़ कर क़ानून की ज़ंजीर को ।।

ग़ज़ल

क़िबला[1] कभी कहते थे कभी क़िबला नुमा[2] हम ।
अब तो बुते काफ़िर तुझे कहते हैं ख़ुदा हम ।।
कशती से करो छेड़ न मौजों के थपेड़ो ।
दामन में लिये बैठे हैं तूफ़ाने बला हम ।।
क्या तुमसे भला शिकवा-ए-बेदाद[3] करेंगे ।
मुख़तार[4] हो तुम और है पाबन्दे रिज़ा हम ।।
आख़िर तो दुआएं भी है दर परदा शिकायत ।
लो अब न उठायेंगे कभी दस्ते दुआ हम ।।
ख़ुद को भी मिटाना है हमें और ख़ुदी को ।
पाते हैं अभी इश्क़ में तालीमे फ़ना[5] हम ।।
हम ख़ाक के पुतले सभी परतौ[6] हैं तुम्हारे ।
आवाज़ हो तुम और है गुम्बद की सदा हम ।।
मंसूब[7] तो होने लगी हर बात तुम्हीं से ।
कर लेंगे इसी तरह से तकमीले वफ़ा[8] हम ।।
आइना-ए-दिल जलवा गहे यार[9] हो शायद ।
दिल को इसी ऊमीद पर करते हैं जिला[10] हम ।।
दिल हसरतो अरमान से हो जाये मुबर्रा[11] ।
बस एक यही आरज़ू रखते हैं 'शिफ़ा' हम ।।

---

१. जिसकी तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ते हैं । २. किबला को दिखाने वाला ३. जुल्म की शिकायत ४. मालिक ५. मिटने की शिक्षा ६. परछाईं ७. सम्बन्धित ८. निबाह पूरा करना ९. मित्र के दर्शन की जगह १०. पालिश करना ११. आज़ाद

बेश्रमल थी आज तक जो ज़िंदगी।
आ गई उसमें अमल की रौशनी॥
ज़िंदगी उसको नज़र आई नई।
उसने देखा इसकी वुसअ्त[12] भी बढ़ी॥
उसकी वुसअ्त और उसकी ताज़गी।
और भी बढ़ती रही बढ़ती गई॥
बढ़ते-बढ़ते रोशनी का सिलसिला।
उसने देखा टुकड़े-टुकड़े हो गया॥
उसमें उसको इक झलक आई नज़र।
था सुकूने रूह जिसमें जलवागर॥
दरमियां हाईल था बहरे बेकरां[13]।
बस पहुंच सकता था वो इन्सां वहां॥
कशमकश की जिसमें हो ताबो तुवां[14]।
हो सख़ावत और हिम्मत बेगुमां॥
अपने माज़ी पर किया फिर उसने ग़ौर।
संगो सामां की तरह थे उसके तौर॥
चूंकि संगो ख़िश्त[15] से बेहतर न था।
इसलिये दुनिया ने भी ठुकरा दिया॥
गिरके उसको मिल गया था मुद्दआ।
उसको गिरना भी ग़नीमत ही हुआ॥
फिर दिले मसरूर से उसने कहा।
मरहबा ऐ मेरे इसयां मरहबा॥

बे अमल जिन्दगी से बेहतर है,
आदमी कुछ करे, गुनाह करे!

—'शिफ़ा'

---

१. इरादा २. वंचित ३. हरकत करना ४. मुहब्बत वाला ५. सच्चा ६. सुरक्षित ७. पतित, तुच्छ ८. ज़ाहिर ९. पत्थर और वृक्ष १०. अन्ततः ११. योग्यता १२. विस्तार १३. अथाह समुद्र १४. ताकत १५. पत्थर

ग़ज़ल

दौलते इश्क़ हम यह कमाकर चले,
एक दिल था वो सर्फ़े वफ़ा कर चले।
ख़ैर मक़दम[1] को तेरे तेरी राह में,
आरज़ूओं की महफ़िल सजा कर चले।
जिस तरफ़ तेरे मिलने की ऊमीद थी,
हम सरे राह आंखें बिछा कर चले।
जब बढ़ीं शामे फ़ुरक़त[2] की तारीकियां[3],
हम चिराग़ आंसुओं के जला कर चले।
आके दुनिया में रक्खी तुझी से ग़रज़,
ऐहले दुनिया से दामन बचा कर चले।
लब पे आया न हरफ़े शिकायत कभी,
साख ऐहले वफ़ा की बना कर चले।
शौक़ से सर झुकाया तेरे सामने,
वर्ना हम हर जगह सर उठा कर चले।
हुस्न वाले तेरे हुस्न की ख़ैर हो,
इश्क़ में हम तो हस्ती फ़ना[4] कर चले।
राहे उल्फ़त पे कोई न हो गामज़न[5],
और हो तो शिफ़ा मुस्कुरा कर चले।

---

१. अगवानी २. विरह की शाम ३. अंधेरे ४. मिट जाना ५. पैर रखना।

शान्ती देवी की संक्षिप्त जीवनी

श्री शान्ती देवी का जन्म राजस्थान के ज़िला भरतपुर ग्राम भरंगरपुर में सम्वत् २००८ में एक जाट परिवार में हुआ था। इसके पिता का नाम सम्पत्ति सिंह और मां का नाम द्रोपदी था। यह अपनी मां के गर्भ से सात महीने की ही पैदा हुई थी। पैदा होते ही इसका भाई मर गया। लोगों ने कहा यह लड़की अच्छी नहीं है जो इसके पैदा होते ही इसका भाई मर गया। इस कारण इसकी मां ने इसे भुस के ढेर में फैंक दिया। तीन दिन के बाद देखा तो यह ज़िन्दा थी। तब उठा कर पालन-पोषण किया। तीन वर्ष की उम्र में उसे लोगों के कहने के कारण ज़हर देकर मारने का निश्चय किया। ज़हर दे दिया पर कुछ भी असर न हुआ। इसके चेहरे की कान्ति दिन-दिन बढ़ती जा रही थी। शरीर दुबला-पतला था। जैसे-जैसे उम्र बढ़ी वैसे ही वैसे ग्राम के लोगों में सुधार हुआ। क्योंकि वहां के लोगों का काम चोरी करना, डकैती डालना था। ये लोग बड़े निर्धन थे। खेती अच्छी नहीं पैदा होती थी। कुछ सुधार हुआ।

जब यह पांच वर्ष की हुई तो रात्रि में स्वप्न हुआ कि एक गेरुए वस्त्र में सन्त खड़े हुए हैं और कह रहे हैं कि सावधान होकर साधन में लग जाओ। इस जन्म में तुम्हें पूरा काम करना है। मैं तुम्हें कुछ दिन बाद मिलूंगा। तुम मौन होकर साधन में लग जाओ। निद्रा टूट गई, मन में बड़ी बेचैनी हुई। फिर जैसा स्वप्न देखा था, उसी के अनुसार मौन होकर भजन-ध्यान करने लगी और निश्चय कर लिया कि जब तक गुरुदेव के दर्शन नहीं हो जायेंगे, तब तक हम न तो अन्न ही खायेंगे और न मौन ही तोड़ेंगे चाहे शरीर ही भले छोड़ना पड़े। पहले दिन लोगों ने खेल समझा कि पांच साल की लड़की क्या साधन-भजन करेगी ? चौबीस घंटे के बाद जब देखा कि अपने आसन पर बिल्कुल अटल बैठी है और नेत्र बन्द हैं, चित्त प्रसन्न है, चेहरा खिला है। मालूम पड़ने लगा कि यह साक्षात् पार्वती देवी की तपस्यामयी मूर्ति हैं। यह स्थिति लगातार चलने लगी, चेहरे की प्रभा चटक रही है, शान्त मुद्रा में बैठी है, खाने-पीने की सुध-बुध बिलकुल नहीं है। ध्यान जिस स्वरूप को स्वप्न में देखा था, उसी का कर रही है। जैसी-जैसी उसकी तपस्या बढ़ी वैसे ही वैसे गांव वाले लोग अपने आप ही चोरी-डकैती छोड़ने लगे। खेतों में अन्न पैदा होने लगा। बाहर से

आने वाले सन्त-महात्मा, राजा-महाराजा भक्त लोगों की भीड़ लगी रहती थी। सभी लोग उसे अन्न खाने को और मौन तोड़ने को कहते थे। लेकिन वह शान्त रहती थी। जब बहुत ही कहा गया तब लिख कर दिया कि जब तक गेरुए वस्त्रधारी गुरुदेव नहीं मिलेंगे तब तक मेरा अटल संकल्प नहीं टूटेगा चाहे देह भले ही छूट जाये। लोग चुप हो गये। बाहर से कीर्तन मंडली आती रहती थीं। हर व्यक्ति प्रभु का नाम लेने लगा।

यह बिल्कुल पढ़ी-लिखी नहीं थी, फिर भी कुछ पूछने पर लिखकर उत्तर देती थी। शरीर कृश होता जाता था, मुख की सुन्दरता बढ़ती जाती थी। कुछ वर्ष निकलने के बाद एक भीषण अकाल पड़ा। पानी नहीं बरसा। भक्तों ने आकर प्रार्थना की कि पशु-पक्षी, मनुष्य सभी पानी के बिना तड़प रहे हैं। दया एकदम आई, उठकर गांव के बाहर एक तालाब है, वहां जाकर बैठ गईं। सैकड़ों लोग वहां इकट्ठे हुए। उसी समय बड़ी घनघोर वर्षा होने लगी। सबको बड़ा हर्ष हुआ और 'जय हो देवी जी' यह धुन गूंजने लगी। सब लोग खुशी में डूब रहे थे और अखंड कीर्तन का निश्चय किया। शान्ती देवी से कहा कि अब घर पर चलिए तो मना कर दिया कि अब यहीं रहूंगी, घर नहीं जाऊंगी। पहली जगह घर के दरवाज़े पर थी। दो वर्ष साधन वहां पर चला। अब सात वर्ष की अवस्था में ग्राम के बाहर तालाब के किनारे रहने का निश्चय किया। बालकों ने वहीं कीर्तन मंडप बनाया जिसे आम के पत्तों और केले के खम्बों से अच्छा सजाया। शान्ती देवी के लिए भी एक छोटी सी झोंपड़ी डाल दी और पृथ्वी पर ही आसन लगा दिया। वह चारपाई, तख्त आदि पर नहीं बैठती थी। कभी-कभी लोग कहते थे, आप ऊपर बैठिये तो लिख कर कह दिया करती थी कि शरीर व संसार की उत्पत्ति व संहार स्थान यही है। इससे यही स्थान अच्छा है। बस कीर्तन प्रारम्भ हुआ। दर्शनार्थियों को ऐसा लगता था कि देवी जी पार्वती की भांति अभय वरदान दे रही हैं। कीर्तन समाप्त हुआ तो भक्तों ने कहा कि प्रसाद हम लोग आपके द्वारा ही लेंगे। जो मंडप केले के खम्भों से सजाया गया था, उनमें फल लटक रहे थे। इशारा किया कि इनको तोड़कर आपस में बांट कर खा जाओ। कटे हुए केले के वृक्षों में जब फल लग गये तो बड़ा आश्चर्य हुआ। यह बात बहुत दूर-दूर तक फैल गई। काफ़ी संख्या में भक्त लोग आने लगे। बड़ी भीड़ इकट्ठी होने लगी। उस समय पानी के अभाव में लोग प्यास से परेशान थे। वहां तीन कुएं थे, परन्तु विशेष रूप से खारी थे। इशारा किया कि पानी भर के लाओ। पानी आया, रख दिया गया। फिर इशारा किया कि इसे पिलाओ। सबने कहा देवी जी पानी बहुत खारा है। तो फिर इशारा दिया कि पानी अवश्य पिलाओ। जैसे ही पानी पीया तो बड़ा मीठा और स्वादिष्ट था। तीनों कुएं मीठे हो गये। वे कुएं आज

भी मीठे हैं। बड़े-बड़े चमत्कार नित्य होते थे। बाहर के लोग वहां देखने आया करते थे।

एक बार हज़ारों लोगों की भीड़ थी। अचानक हाथ का इशारा किया। खड़े होकर लोग देखने लगे कि देवी क्या कर रही है तो देखा आगरा से अहमदाबाद जाने वाली मेल गाड़ी आ रही है। वह खड़ी हो गई। बड़ा आश्चर्य हुआ कि गाड़ी क्यों खड़ी हुई तो देखा एक बड़ी सुन्दर गाय लाईन के दोनों पटरी के बीच बैठी है। उस पर शान्ती देवी का ध्यान गया कि यह गाय मर जायेगी। इसलिए उस गाय की जान बचाने के लिये गाड़ी को रोक दिया। ऐसे कुछ न कुछ नये काम चलते रहते थे।

एक दिन विचार किया कि दुनियां के ये काम होते रहेंगे, गुरुदेव ने जो स्वप्न में कहा था कि कुछ दिन बाद मिलूंगा। बहुत दिन हो गये। अब रहा नहीं जाता। तब तो कठिन तपस्या करने की ठान ली। एक दिन सब लोग अपने-अपने घर चले गये। सुनसान रात थी। आश्रम के सामने वाले कुएं में कूद कर जल पर आसन जमाया और ध्यान लगा लिया। सवेरा होते ही दर्शनार्थी आने लगे। जब देवी जी को कहीं नहीं देखा तो भक्त लोग तड़पने लगे और खोज करना प्रारम्भ कर दिया। तब तक पानी भरने वाली स्त्रियां कुएं पर पानी भरने आईं तो देखा शान्ती देवी आंख बन्द किए पानी पर उसी प्रकार बैठी हुई है जिस प्रकार कोई पृथ्वी पर बैठ कर साधन कर रहा हो। भक्तों ने आकर प्रार्थना की तो प्रार्थना सुनने के बाद बाहर निकल आईं। उसके बाद दूसरी रात्रि में पास के घने जंगल में अवसर पाकर निकल गईं जहां पर एक पुराना अजगर रहता था। एक वहीं मन्दिर भी था वहां जाकर बैठ गईं। उस अजगर के भय से बिलकुल विचलित नहीं हुई। फिर लोग पता लगाते-लगाते वहां पहुंच गये। उसे प्रार्थना करके कुटिया में लाये। उसके बाद प्रेमा-भक्ति का जन्म हुआ। रोना, तड़पना, व्याकुल हो जाना कई-कई दिन तक कुछ नहीं खाना और नींद नहीं लेना। ऐसी कठिन तपस्या के बाद कई महात्मा उन्हें शिष्य बनाने को आये। सबको लिख दिया कि वही स्वप्न वाली मूर्ति आकर मुझे शरण में लेगी। बस थोड़े दिन के बाद सन् १९५८ में चिकसाना गांव जो भरंगपुर से एक मील पूर्व है, वहां लाला दाऊदयाल का मकान है। वह दिल्ली में रहते थे। उन्होंने दो कमरे शान्ती देवी के लिए बनवा दिये पर देवी जी ने स्वीकार नहीं किया। श्री गुरुदेव के बिना कोई भी दुनियां की चीज़ अपने आराम के लिये ग्रहण नहीं करूंगी। इसी मैदान में बनी झोपड़ी में पड़ी रहूंगी। कुछ दिन के बाद ही चिकसाना ग्राम में लाला दाऊदयाल की धर्मपत्नी श्री मिश्री देवी ने श्री अविनाशी जी को बुलवाया। साथ में कई भक्त लोग थे। दूसरी मंज़िल में विश्राम दे दिया। मिश्री देवी ने अपने भाई को भेजकर शान्ती देवी को बुलाने की प्रार्थना की। शान्ती देवी ने लिखकर पूछा कि वह महात्मा कैसे हैं तो उन्होंने बताया गेरुआ वस्त्र में ऐसे स्वभाव और गुण

वाले महात्मा हैं। थोड़ी देर में ध्यान किया तो वही स्वरूप ध्यान में आया जो स्वप्न में देखा था। बस देर न की और एक दम चल पड़ीं। लोगों को वड़ा आश्चर्य हुआ कि यह क्या नया काम हुआ। सभी लोग साथ ही चल दिये। चिकसाना पहुंचकर दूसरी मंज़िल में जहां स्वामी जी ठहरे हुए थे, वहां एकाएकी पहुंच गईं। थोड़ी देर उनकी ओर देखा तो चरणों में गिर पड़ीं और चरण-शरण मांगी। तब उसी समय ज्योंही शान्ती देवी के सिर पर हाथ रखा त्यों ही सब वेद-वेदान्तों का ज्ञान हो गया। वह वेद मूर्ति वन गई। फिर भरंगरपुर आकर सब समाज के साथ श्री अविनाशी जी ने शान्ती देवी का संस्कार किया और बने हुए कमरों में प्रवेश कराया। वहां पर जो विपक्षी लोग थे, उन्होंने शंका की कि आठ साल की लड़की को इतना ज्ञान कैसे हो सकता है। वे परीक्षा लेने के लिये प्रश्न करने लगे। शान्ती देवी एक दो शब्दों में प्रश्न का समाधान कर देती थीं। सब हार कर चले जाते थे। सब विपक्षी दल ने हार मान ली और सर झुकाया। अब गुरुदेव से आज्ञा लेकर पूरे भारत के तीर्थों का दो बार भ्रमण किया। तीर्थों से लौटने के बाद एक आसन बैठ कर एक बार फलाहार करके एक सौ आठ दिन में एक सौ आठ रामायण के अखण्ड पाठ किये। ऐसी दो मालाएं बनाईं। जब यह कीर्तन, रामायण कहती थी तब मनुष्य क्या पशु-पक्षी भी मौन होकर सुनते थे। उसकी वाणी में, क्रिया में ज्ञान, भक्ति, कर्म की त्रिवेणी बहती थी। जहां पहुंच जाती थी, वहां का समाज अपना जीवन एकदम बदल लेता था। मान-मद रहित जीवन बिलकुल निर्विकार था। बड़ी गम्भीर शान्त वृत्ति थी। छोटे बच्चों जैसा स्वभाव था और निर्लोभी वैराग्य की मूर्ति थी। दान, त्याग, प्रेम से उसका हृदय पूर्ण था। अपने जीवन में गुरु भक्ति को उत्तम स्थान देकर यह दिखला दिया कि अगर प्राणी अपनी मंज़िल प्राप्त करना चाहता है तो गुरु भक्ति को छोड़कर अन्य साधन संसार में नहीं हैं। गुरु आश्रम के मन्दिर में अचानक एक प्राणी आया और गुरु भक्ति छोड़ने को कहा। ब्रह्मा, विष्णु, महेश व अन्य देवताओं की उपासना करो। शान्ती देवी ने उत्तर दिया—

गुरुदेव के वचन प्रतीत न जेहि, सपनेहु सुगम न सुख सिसि तेहि।

"हे महापुरुष! आप भी गुरु भक्ति को छोड़कर अन्य साधन मत कीजिए।" इसकी निष्ठा देखकर उन महापुरुष ने कहा कि तुम पूर्ण ब्रह्म हो और नमस्कार करके चले गये। ऐसी-ऐसी कई घटनायें आती रही। राजस्थान में विपक्षी दलों ने सन् १९७३-७४ में फिर आक्रमण किया तब गुरुदेव से आज्ञा लेकर एक राम सभा समिति की स्थापना की और तमाम नास्तिक लोगों को आस्तिक बनाया। बहुत से गिरे हुए लोगों को देखने में बड़ी भोली-भाली मालूम होती थी, पर इसका निश्चय बड़ा दृढ़ था। बड़ी धैर्यवान, बुद्धिमान और व्यवहार कुशल थी। अपनी वाणी में सारी सभा के लोगों को समाधिष्ठ बना देना एक साधारण काम था। सन् १९७५ में शरीर छोड़ने का निश्चय किया। सबसे उपराम हो गईं और सत्ताईस दिन पहले से ही

आश्रम का पूजा-पाठ का काम और वहां का सामान अन्य-अन्य लोगों को दे दिया और कहा कि मेरा जाना बहुत लम्बे समय के लिये हो रहा है। अब मैं लौट कर नहीं आऊंगीं। भक्त लोग सुनकर बड़े व्याकुल हुए। तब कहा श्रावण बदी अमावस्या को आ जाऊंगी। इतना कहकर गुरुदेव के दर्शन के लिए रेल गाड़ी में बैठकर चल पड़ीं। उरई पहुंचकर श्री अविनाशी गीता आश्रम में गुरुदेव के दर्शन किए और गुरुदेव के चरणों में बैठ कर कहा—"भगवन् ! मैं अब लौट कर न तो भरंगरपुर जाना चाहती हूं और न संसार में रहना चाहती हूं। मेरा शरीर छोड़ कर आपके चरणों में रहने का निश्चय हुआ है। आप मुझे आज्ञा दीजिए।" तब श्री गुरुदेव ने कहा—"बहुत अच्छा, जैसा चाहती हो वैसा ही हो जायेगा। अपनी वृत्ति अन्तर्मुख कर लो और आत्म-चिंतन करो। मैं गुरु पूर्णिमा के उत्सव पर दिल्ली जा रहा हूं और लौट कर मिलूंगा।" इधर श्री अविनाशी जी दिल्ली को चले, उधर शान्ती देवी ने सबसे मोह छोड़कर कठिन अनशन किया और अन्तर्मुख होकर आत्म-चिंतन करने लगी। दर्शन के लिए हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई स्त्री-पुरुष, सन्त-महात्मा, सभी तरह के लोग आने लगे। भक्तों ने जब यह अवस्था देखी तो दिल्ली तार भेज दिया। ज्यों ही दिल्ली तार पहुंचा त्यों ही मैं श्री गुरुदेव को लेकर उरई चल दिया। वहां पहुंचते ही शान्ती देवी ने चरण स्पर्श किया और अन्तर्मुख हो गईं। उसके बाद तमाम लोगों का तांता लगा रहता था। घनघोर वर्षा हो रही थी फिर भी भीड़-भाड़ कम नहीं होती थी। जब सत्ताईसवां दिन आया तब थोड़ी देर के लिए गोपनीय चर्चा की जो कि आत्म सम्बन्धी थी। वह अगली पुस्तक में प्रकाशित की जायेगी। प्रातः काल तीन बजे श्रावण बदी अमावस्या के दिन जब शरीर छोड़ने का समय आया, उस समय बड़ी सुन्दर, शीतल, मन्द समीर बहने लगी। उसमें एक बड़ा विशाल प्रकाश दिखाई दिया। उस प्रकाश का दर्शन सभी पास में खड़े भक्त कर रहे थे। तीन बज कर पांच मिनट पर 'जय गुरु' की धुन करते हुए गुरु धाम में पहुंच गईं। उसके बाद लोग व्याकुल होकर रुदन करने लगे और कहने लगे कि हमारी एक महाशक्ति हाथ से निकल गई। उसके बाद लोगों ने अन्तिम संस्कार करने के लिए बंध स्थान ले गये और वहां अन्तिम संस्कार हुआ। उस समय भी जो चमत्कार हुए वे विस्तार के भय से यहां नहीं लिखे जा रहे हैं। संक्षेप में कुछ ही चमत्कार लिखे हैं। जिस समय श्री दादा गुरु श्री परमहंस जी महाराज की समाधि के पास पहुंचे उस समय घनघोर वर्षा हो रही थी। पानी एकदम उतने ही क्षेत्र में बन्द हो गया जितने क्षेत्र में उसका अन्तिम संस्कार किया जा रहा था। बाकी स्थान पर वर्षा उसी तरह से हो रही थी। उस समय जिस भक्त ने जो भी प्रार्थना की, उस भक्त की मनोकामना पूर्ण हुई। आज भी उसी तरह के चमत्कार उसकी समाधि पर देखने को मिलते हैं।

—प्रेमलाल 'शिफ़ा'

धन्यवाद

इस काव्य पुस्तक की तैयारी में, मैं, दो व्यक्तियों का विशेष रूप से आभारी हूं। एक मास्टर देवदत्त शर्मा जो मेरे अज़ीज़ हैं और जिन्होंने काफ़ी समय लगाकर उर्दू से देवनागरी लिपि में इस पुस्तक को लिखने में सहयोग दिया।

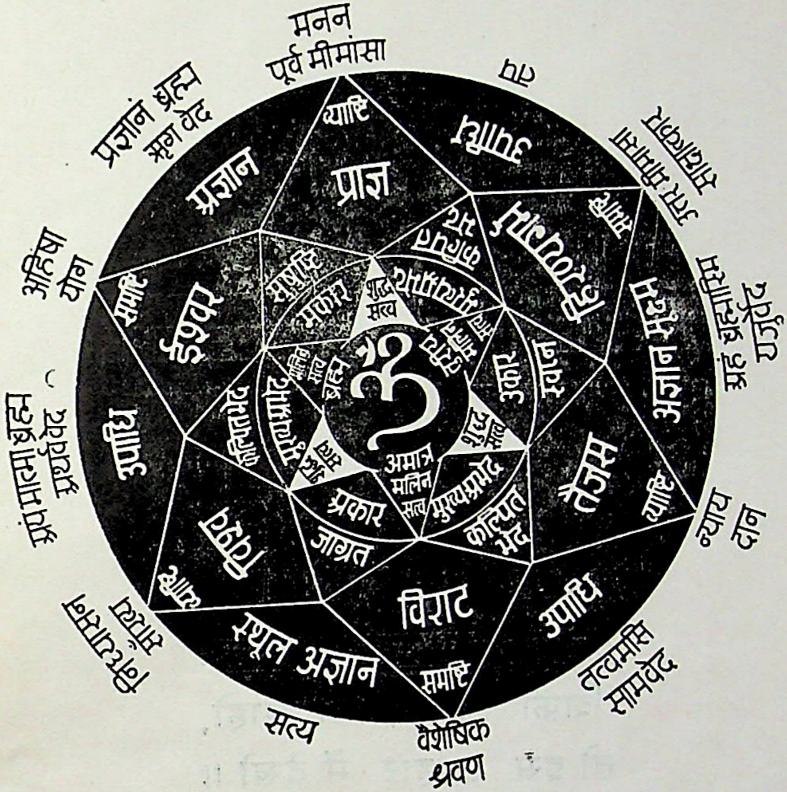
दूसरे महात्मा गुरुशरणानन्द जी हैं जिन्होंने पुस्तक के संकलन, प्रूफ़ देखने, ब्लाक बनवाने और छपवाने आदि की सारी ज़िम्मेदारी अपने सर पर ली।

मिस्टर जस्टिस बी. सी. मिश्रा, क़ाज़ी जी, भाई इस्माइल, श्री ब्रह्म स्वरूप और श्रीमति राज आदि ने महात्माओं की तस्वीरें एकत्रित करने में सहायता दी।

'आख़िरी मोड़' आवरण पृष्ठ का चित्र मेरे छोटे भाई 'बद्र' मख़मूर ने बनाया।

गुरुदेव इन सब पर अपनी कृपा रक्खें।

—प्रेम लाल 'शिफ़ा'



कसरत[1] से गुज़र कर ही तो नज़र,
वहदत[2] से शिनासा[3] होती है।
तामीरे[4] हरम से कब्ल 'शिफ़ा',
बुतख़ाने बनाये जाते हैं॥

---

१. अनेक २. एक ३. परिचित ४. जहां क़ाबा है वहां पहले मन्दिर था और उसमें बहुत-सी मूर्तियां थीं।

पदों में ढाल कर खुद को,
गुरु को कर दिया अर्पण ।
'शिफ़ा' को देखना चाहो,
तो इस उपहार में देखो ॥